

**TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182300

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H82/SS2M** Accession No. **H2477**

Author **श्रीकृष्णपिपा**

Title **महाभारत 1**

This book should be returned on or before the date last marked below.



हिन्दी शेक्सपियर

मेघदूत

शेक्सपियर

अनुवादक: डा० रंगेश शर्मा

*Sarvodaya Sahitya Mandir,
Kothi (Bus Stand) Hyderabad-(A.P.)*

राजपाल प्रिन्टर्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६



मूल्य : पौने दो रुपये (१७५ नये पैसे)
प्रथम संस्करण : जुलाई १९५७
आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग, प्रेस, दिल्ली



शेक्सपियर

विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-आन्-एवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी ऐलिजाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यहीं आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, अँथेलो, मैकबेथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दुःखान्त); ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एंडू अबाउट नर्थिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान (सुखान्त) । इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं । प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं ।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है । उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं । जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती ।

भूमिका

‘मैकबैथ’ शेक्सपियर के दुःखांत नाटकों में अत्यंत लोकप्रिय है। इसके रचनाकाल के संबंध में यद्यपि मतभेद है तथापि नाटक के पात्रों और उसकी रचना-शैली से पता चलता है कि शेक्सपियर ने इसकी रचना ‘किंग लियर’ के पश्चात् की थी। इस प्रकार इसका रचना काल सन् १६०५-६ ठहरता है। वस्तुतः यह युग शेक्सपियर जैसे महान् मेधावी नाटककार के लिये अपनी दुःखांत कृतियों के अनुकूल भी था।

शेक्सपियर ने जिस प्रकार अपने अन्य नाटकों के कथानकों के लिये दूसरी पूर्ववर्ती कृतियों से प्रेरणा ली है उसी प्रकार मूलरूप में मैकबैथ का कथानक भी उसका अपना नहीं है। यह एक दुःखांत नाटक है एवं इसके कथानक का आधार विश्वविश्रुत अंग्रेजी लेखक राफेल होलिन्शेड को स्कॉटलैण्ड संबंधी एक ऐतिहासिक कृति है।

मैकबैथ में जिन घटनाओं का वर्णन है उन्हें पूर्णतया ऐतिहासिक अथवा काल्पनिक मान लेना भी युक्तियुक्त न होगा। ‘कॉनसाइज़ डिक्शनरी ऑफ नेशनल बाइग्रोग्राफी’ में ‘मैकबैथ’ के अंतर्गत लिखा है—“मैकबैथ (मृ० १०५७) स्कॉटलैण्ड का बादशाह; स्कॉटलैण्ड के राजा डंकन की फौजों का कमाण्डर तथा १०४० में उसका कत्लकर राज्य पर अपना अधिकार करने वाला जिसे नॉर्थम्ब्रिया के अर्ल सिवार्ड ने १०५४ में हराया तथा १०५७ में मैलकॉम तृतीय ने मार डाला।”

मैकबैथ के संबंध में इतिहास में और अधिक स्पष्ट उल्लेख न मिलने के कारण शेक्सपियर ने होलिन्शेड द्वारा कथित मैकबैथ के कथातत्त्व को अपने मनोनुकूल ढालने में पूरी स्वतंत्रता से

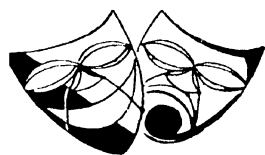
काम लिया । उसका उद्देश्य जितना एक दुखांत नाटक लिखने का था उतना ऐतिहासिक नाटक लिखने का नहीं । अपनी अप्रतिम प्रतिभा से पात्रों का चयन कर, उन्हें नयी साज-सज्जा में प्रस्तुत कर एवं घटनाओं का प्रभावोत्पादक वर्गीकरण करने के पश्चात् शेक्सपियर, मुख्य ऐतिहासिक घटना से कहीं अधिक अपनी इस कृति में रोचकता उत्पन्न करने में सफल हुआ है ।

मैकबेथ का प्रकाशन शेक्सपियर की मृत्यु के पश्चात् हुआ । इसमें आरंभ से अंत तक जीवन और मृत्यु का रोमांचक संघर्ष वर्णित है । भयानक अमानुषीय घात-प्रतिघातों से दर्शक द्रवित एवं उद्वेलित हो उठते हैं । मैकबेथ में जीवन के प्रति व्यंग्य भी प्रभूत मात्रा में मुखरित है । इसमें शेक्सपियर ने अपनी असाधारण एवं रहस्यपूर्ण मनःशक्ति को संतुष्ट करने के लिये दो हत्यारों की अवतारणा की है और जैसा कि साधारणतया उसकी सभी कृतियों में होता है, इन दोनों हत्यारों में विवेकपूर्ण स्पष्ट अंतर भी दर्शाया है । हत्यारा होते हुए भी एक के प्रति दर्शक की सहानुभूति उमड़ पड़ती है और दूसरे के प्रति घृणा का उद्रेक ।

प्रत्येक मनुष्य में जब दानवता जागृत होती है, उसकी मनुष्यता लुप्त हो जाती है किंतु जीवन में ऐसे भी स्थल आते हैं जहाँ वह परमक्रूर होते हुए भी अपनी मानवोचित भावनाओं से संचालित होने लगता है ।

मानव-मन की गहराइयों का व्यंग्यपूर्ण अंकन मैकबेथ की विशेषता है । शेक्सपियर एक महान् नाटककार है और मैकबेथ उसकी अन्य महान् कृतियों में अपना प्रमुख स्थान रखता है ।

—रांगेय राघव



पात्र-परिचय

डंकन	:	स्काटलैंड का सम्राट्
मैलकॉम	}	सम्राट् के पुत्र
डोनलबेन		
मैकबैथ	}	सम्राट् की सेना के प्रमुख
बैंको		
लैनोकस		
मैकडफ़	}	स्काटलैंड के भद्र पुरुष
रौस		
मैटियथ		
ऐङ्गस		
फलीन्स	:	बैंको का पुत्र
सिवाड	:	नॉर्थम्बरलैंड का अर्ल ग्रीर
	:	अंगरेजी सेना के प्रमुख
बालक सिवाड	:	सिवाड का पुत्र
सीटॉन	:	मैकबैथ का अफ़सर
लड्डका	:	मैकडफ़ का पुत्र
लेडी मैकबैथ	:	मैकबैथ की पत्नी
लेडी मैकडफ़	:	मैकडफ़ की पत्नी

- [लेडी मैकडफ़ की परिचारिकाएँ, हिकेट और तीन डाइन]
[अँगरेजी डॉक्टर, स्कॉच डॉक्टर, सार्जन्ट, कुली, वृद्ध पुरुष,
हत्यारे, भद्र पुरुष, अफसर, सिपाही, परिचारिकाएँ और दूत
बैंको का भूत एवं अन्य पिशाच इत्यादि ।]



पहला अंक

दृश्य १

[एक रेगिस्तानी स्थान]

[बादलों की गड़गड़ाहट के बीच बिजली चमकती है।

तीन डाइनों का प्रवेश]

पहली डाइन : ऐसे समय में जब गड़गड़ाहट करते बादलों के बीच बिजली फट रही हो और पानी भी बरसता हो हम तीनों फिर कब मिलेंगे ?

दूसरी डाइन : उसी समय जब यह युद्धनाद शांत होकर यह घोषणा कर दे कि कौन जीत गया और कौन हार गया।

तीसरी डाइन : पर वह तो सूरज छिपने से पहले ही हो जायेगा।

पहली डाइन : पर हाँ, मिलेंगे कहाँ ?

दूसरी डाइन : उसी उजाड़ में।

तीसरी डाइन : वहाँ तो हमें मैकवैथ भी मिलेगा न ?

पहली डाइन : आई, ग्रेमल्किन^१।

दूसरी डाइन : पैडौक^२ मेरे पीछे पुकार रहा है।

तीसरी डाइन : अभी एक क्षण में।

सभी : जिरामें दूसरों की भलाई है उससे हमें घृणा है और जिससे वे बुरा समझ कर घृणा करते हैं वही हमारे लिये अच्छा है। आओ,

१. Graymalkin (ग्रेमल्किन) —एक तरह की भूरी बिल्ली का नाम। प्रत्येक डाइन अपने साथ इस तरह का कोई पशुया पक्षी रखती है जो उसके इशारे पर कोई भी रूप बदल सकता है। इससे वे दूसरों पर जादू किया करती हैं।

२. Paddock (पैडोक) —इसी तरह एक मंडक का नाम।

कोहरे और धुन्ध-भरी हवा में होकर उड़ चले ।

[सभी जाती हैं ।]

दृश्य २

[फौरस के निकट एक शिविर]

[अन्दर भय-ध्वनि । सम्राट डंकन, मैलकॉम, डोनलबेन, लैनोक्स का अनुचरों के साथ प्रवेश । खून से भीगा हुआ एक सार्जेंट आता है ।]

डंकन : कौन है यह जो इस तरह खून से भीगा हुआ है । उसकी दयनीय अवस्था से लगता है कि वह अभी रणभूमि से लौटा है । उससे हमें विद्रोहियों के बारे में नवीनतम परिस्थिति का अवश्य कुछ पता लगेगा ।

मैलकॉम : अरे, यह तो वही सार्जेंट है जो एक वफ़ादार वीर सैनिक की तरह मुझे बन्दी होने से बचाने के लिये लड़ा था । स्वागत है, मेरे पराक्रमी मित्र ! जिस समय तुम रणभूमि से चले थे उस समय युद्ध की क्या स्थिति थी, सम्राट यह तुमसे जानना चाहते हैं ।

सार्जेंट : अभी से कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता स्वामी ! दोनों सेनाओं के बीच अभी वैसा ही संघर्ष है जैसा होड़ में बढ़ते दो तैराक जब पूरी तरह थक जाते हैं तो आपस में लिपट कर एक-दूसरे की चालों को काटने की कोशिश करते हैं । उस निर्दयी मैकडोनवाल्ड ने जिसमें दुष्टता प्रतिदिन बढ़ती जाती है और जो स्वभाव से ही विद्रोही है, आयरलैंड से हल्के शस्त्रों से सुसज्जित सेनाएँ और पश्चिमी द्वीपों से भारी शस्त्रों से सुसज्जित अश्वारोही बुलवा लिये हैं । लेकिन कुछ भी हो, वीर मैकबेथ के सामने वे सब कायर हैं । वे साक्षात् वीरता देवी के पुत्र हैं । मैंने देखा कि

भाग्य को उपेक्षा-भरी दृष्टि से देखते हुए और अपनी तलवार घुमाकर मार-काट करते हुए जिस तरह उन्होंने शत्रु के सीने तक पहुँचने का मार्ग बना लिया था उससे सच ही वे वीर कहलाने के अधिकारी हैं। वे तब तक वहाँ से नहीं हटे जब तक उन्होंने शत्रु के जबड़े तक नहीं काट दिये और उसके सिर को काटकर हमारे मोर्चे की मुँडेर पर नहीं टाँक दिया।

डंकन : ओ मेरे वीर भाई ! मेरे योग्य और समर्थ साथी !

सार्जेंट : जैसे सूरज छिपते-छिपते कभी ऐसे भयानक तूफ़ान उठते हैं जो जहाजों को उलटते हुए चले जाते हैं और फिर उसी भयावने स्वर में गर्जन करते हैं, उसी तरह जहाँ लगता था कि अब कुछ सुख-चैन से बैठेंगे उसी समय एक के ऊपर एक तूफ़ान-सा आता ही जाता था। ओ स्कॉटलैण्ड के स्वामी ! मेरी बात ध्यान से सुनो। हमारे उन वीर सैनिकों ने जिनकी रग-रग में वीरता और न्याय का खून दौड़ रहा है उस भगोड़ी और हल्के-से सुसज्जित सेना को ऐसा खदेड़ा कि वह सिर पर पैर रख कर भाग जाने के लिये उतारू हो गई पर उसी समय नार्वे के राजा ने अवसर देखकर अपने चमकते हुए शस्त्रों से तथा और नई सेनाएँ बुलाकर हम पर अकस्मात हमला कर दिया।

डंकन : पर क्या इस पर हमारे सेनापति मैकबैथ और बैको का खून नहीं खौला ?

सार्जेंट : अवश्य ! उनका खून उसी तरह चढ़ गया जैसे बाज़ का गौरैया देख कर और शेर का एक खरगोश देख कर चढ़ जाता है। मैं यही कहूँगा स्वामी ! कि दूनी बारूद से लदी तोपों की तरह दूनी ताकत के साथ वे शत्रु की सेना पर टूट पड़े। कौन जाने कि वे अपने घावों से बहते गरम खून में नहाने के लिये कूदे थे या इसे एक

दूसरा गोलगोथा बनाना चाहते थे । मैं नहीं समझता इसके अलावा उनका और कोई तात्पर्य था । लेकिन मैं इतना थक गया हूँ और मेरे शरीर पर धाव भी हैं जिससे मुझे बेहोशी-सी चढ़ी आ रही है । मेरे घाव चिकित्सा के लिये बेचैन-से हो रहे हैं स्वामी !

डंकन : आह ! तुम्हारे शरीर में जैसे घाव हैं उन्हीं के योग्य तुम्हारे वीरता से भरे हुए शब्द हैं । दोनों ही महान सम्मान के योग्य हैं । (अनुचरों से) जाओ, सार्जेंट की चिकित्सा की तुरन्त व्यवस्था करो ।

[अनुचरों के साथ सार्जेंट जाता है ।]

[रौस का प्रवेश]

कौन आ रहा है यहाँ ?

मैलकॉम : रौस, श्रेष्ठ 'थेन' हैं ।

लैनोक्स : उनकी आँखों में कैसी उतावली मालूम हो रही है । ठीक भी है, जो व्यक्ति अजीब-अजीब घटनाओं की सूचना देने आता है वह ऐसा ही दीखता है ।

रौस : ईश्वर सम्राट की रक्षा करें !

डंकन : कहाँ से आ रहे हैं आप श्रेष्ठ थेन !

रौस : हे महान सम्राट ! मैं फाइफ से आ रहा हूँ, जहाँ आकाश में नाँवों का झंडा फहरा रहा है । नाँवों के राजा ने हृदय को हिला देने वाली एक विशाल सेना ले कर और उस धोखेबाज़ और गद्दार काउडोर के थेन की सहायता लेकर एक घमासान युद्ध प्रारम्भ कर दिया तब देवी भवानी के पति उसी मैकबैथ ने अपना कवच पहना और वह शत्रु के बीच कूद पड़ा । मैं क्या कहूँ, शत्रु की तलवार से तलवार और हाथ से हाथ टकरा कर उसने इस तरह सामना किया कि शत्रु अपनी सारी वीरता भूल गया और अन्त में हमारी विजय हुई ।

डंकन : आह ! महान हर्ष !

रौस : अब इसी कारण नाँवें का राजा स्वेनो सन्धि के लिये प्रार्थना कर रहा है । लेकिन हम उसके साथियों की मुर्दा लाशों को ज़मीन में तब तक नहीं दफनाने देंगे जब तक वह 'सेन्ट कॉम्स इञ्च'^१ पर दस हजार डॉलर हमारे बीच बाँट न दे ।

डंकन : उस काउडोर के थेन को मैं अब तक हृदय से अपना मित्र समझता था पर अब और अधिक वह मुझे धोखे में नहीं रख सकेगा । जाओ, और उसके मृत्यु-दण्ड की चारों ओर घोषणा कर दो और मैकबैथ को उसका पूर्व पद देकर सम्मानित कर दो ।

रौस : आपकी आज्ञा का पालन होगा स्वामी !

डंकन : ठीक है, जो उसने खोया श्रेष्ठ मैकबैथ ने पा लिया है ।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[फौरेस के निकट उजाड़ भूमि]

[बादल गरजते हैं । तीनों डाइनों आती हैं ।]

पहली डाइन : कहाँ रहीं बहिन ?

दूसरी डाइन : सूअर के घंटे को मार रही थी ।

तीसरी डाइन : पर तुम कहाँ थीं बहिन ?

पहली डाइन : एक मल्लाह की स्त्री अपनी झोली में कुछ अखरोट लिये हुई थी जिन्हें वह चबाती थी, फिर चबाती थी, और चबाती ही जाती थी । मैंने कहा : 'मुझे भी दे दो' तो बची-खुची झूठन

१ Saint CoIme's Inch—सेन्ट कोलम्बिया का टापू जहाँ 'आइरिश' राजकुमार सेन्ट कोलम्बिया को समर्पित एक मठ के भग्नावशेष पाये जाते हैं । यह एक धार्मिक स्थान माना जाता था ।

पर पली उस भूखी और घृणित स्त्री ने झिड़क कर कहा : 'भाग जा ओ डाइन ! भाग जा !' उसका पति टाइगर (Tiger) नामक जहाज़ का मालिक है और अब एलैप्पो (Aleppo) गया हुआ है। लेकिन क्या हुआ ? मैं एक चलनी में बैठकर उधर जाऊँगी और बिना पूँछ वाली एक चूहिया की शक्ल बना कर मैं करूँगी, करूँगी, अवश्य कुछ न कुछ करूँगी।

दूसरी डाइन : मैं तुम्हें एक हवा दूँगी।

पहली डाइन : बड़ी दयालु हो तुम।

तीसरी डाइन : और मैं भी एक दूसरी हवा दूँगी।

पहली डाइन : इसके अलावा सभी हवाएँ मेरे पास हैं। मल्लाहों की कुतुबनुमा जो भी दिशा दिखाती है उधर ही वे वेग से बहती हैं, यहाँ तक कि बन्दरगाहों के अन्दर तक घुस जाती हैं। मैं उसके शरीर के सारे खून को चूसकर घास की तरह उसे सुखा डालूँगी, जिससे, न रात और न दिन में, कभी भी वह पलक तक बन्द नहीं कर सकेगा। मैं उसे एक ऐसे जादू में बाँध दूँगी कि ८१ हफ्तों तक दुःख में घुल-घुल कर वह एक दिन बिल्कुल मिट जायेगा। यद्यपि मैं उसके जहाज़ को डुबा नहीं सकती पर फिर भी वह तूफानों के थपड़े खाता हुआ इधर-उधर फिकता हुआ ही रहेगा।

यह देखो, मेरे पास क्या है ?

दूसरी डाइन : दिखाओ, दिखाओ।

पहली डाइन : मेरे पास एक ऐसे मल्लाह का अंगूठा है जो घर लौटते समय तूफान में फँस गया और समुद्र की उठती हुई लहरों उसे निगल गई।

[अन्दर नक्कारे की आवाज़]

तीसरी डाइन : अरे, नक्कारा, सुनो, नक्कारा बज रहा है। लो वह मैकबैथ आ गया।

सभी : ओ समुद्र की लहरों पर और पृथ्वी पर तेज़ चलने वाली डाइन बहनो ! आओ, आपस में हाथ मिला कर हम चारों तरफ नाचें। तीन बार तुम, तीन बार मैं और फिर तीन बार वह इस तरह नौ बार एक चक्कर बनायें। ... शान्त ! जादू का चक्कर अब पूरा हो गया है।

[मैकबैथ तथा बंको का प्रवेश]

मैकबैथ : इतना बुरा और इतना ही अच्छा दिन मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा।

बंको : फौरिस यहाँ से कितनी दूर कहा जाता है ?

पर हैं, ये पतले और अजीब से कपड़े पहने कौन हैं ? ये तो पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों जैसी तो नहीं लगतीं फिर भी पृथ्वी पर हैं। क्या आश्चर्य है !

क्या तुम कोई जीवित प्राणी हो ? या कोई ऐसी चीज़ हो जिस पर मनुष्य को शक करना चाहिये ? अपनी फटी उँगली जिस तरह तुमने अपने ओठ पर रख ली है उससे मालूम होता है कि तुम मेरी बात समझ रही हो। अवश्य तुम कोई स्त्री हो, पर हैं ... फिर तुम्हारी दाढ़ी देखकर मैं कैसे कह दूँ कि तुम स्त्री हो।

मैकबैथ : अगर तुम बोल सकती हो तो बोलो, कौन हो तुम ?

पहली डाइन : तुम्हारा स्वागत है मैकबैथ। ओ 'ग्लेमिस' के थेन ! हम सब की ओर से तुम्हारा स्वागत है।

दूसरी डाइन : ओ काउडोर के थेन मैकबैथ ! हम सभी की ओर से तुम्हारा अभिनन्दन है।

तीसरी डाइन : स्वागत है उस मैकबैथ का जो अब सम्राट् बनने जा रहा है।

बैंको : क्यों जनाब, ऐसी अच्छी-अच्छी बातें सुनकर भी आप इस तरह बेचैन होकर डर क्यों रहे हैं ?

(डाइनों से) मैं सत्य के नाम पूछता हूँ कि तुम हवा की कोई चीज़ हो या जो कुछ बाहर से दिखाई दे रही हो वही वास्तव में हो ? तुम मेरे साथी का उसके वर्तमान पद और यश के लिये अभिनन्दन कर रही हो और उच्चाधिकारी यहाँ तक कि सम्राट् होने तक की भविष्यवाणी करके उसका स्वागत कर रही हो। इससे वह कुछ उन्मत्त-सा हो उठा है। यदि तुम भविष्य की बात देख सकती हो और यह बता सकती हो कि आगे क्या होगा और क्या नहीं तो फिर मुझसे भी कहो, मुझसे, जो न तुम्हारी कृपा की भीख मांगता है और न तुम्हारी घृणा से तनिक भी डर सकता है।

पहली डाइन : स्वागत है !

दूसरी डाइन : स्वागत है !

तीसरी डाइन : स्वागत है !

पहली डाइन : मैकबेथ से कम और उससे अधिक भी।

दूसरी डाइन : इतना सुखी नहीं फिर भी उससे कहीं अधिक सुखी।

तीसरी डाइन : यद्यपि तुम कभी नहीं होगे फिर भी तुम्हारे पुत्र सम्राट् होंगे। इसलिये, मैकबेथ और बैंको का हम सभी की ओर से स्वागत है !

पहली डाइन : सभी की ओर से मैकबेथ और बैंको का अभिनन्दन है।

मैकबेथ : ठहरो, ओ भूठ बात बनाने वाली जादूगरनियो ! कुछ और भी कहो। सिनेल की मृत्यु के कारण मैं जानता हूँ कि मुझे ग्लेमिस का थेन बना दिया गया है लेकिन काउडोर का थेन कैसे ? वह गौरवशाली काउडोर का थेन तो अभी जीवित है और फिर सम्राट् होना... क्या इसकी मैं कभी कल्पना भी कर सकता हूँ ? इसी

तरह काउडोर का थेन होना भी मेरे विश्वास के परे की बात है। बोलो, कहाँ से यह अजीब-सी बात तुम्हें मिली है ? या इस उजाड़ में इस तरह भविष्यवाणी करके तुमने हमारा मार्ग रोकने का षड्यन्त्र किया है ? बताओ, मैं आज्ञा देता हूँ बोलो।

[डाइनें लुप्त हो जाती हैं।]

बैंको : मुझे लगता है, जैसे पानी में बबूले होते हैं वैसे ही ज़मीन में भी होते हैं और ये उन्हीं बबूलों की बनी हुई हैं। अरे, हैं ! कहाँ छिप गई वे सभी।

मैकबैथ : हवा में। जो अभी शरीर धारण किये हुई थीं वे हवा में इस तरह विलीन हो गई हैं जैसे मनुष्य की श्वासें निकल कर मिल जाती हैं। काश ! वे थोड़ा और ठहर जातीं तो कितना अच्छा होता।

बैंको : जिनके बारे में हम अभी बातें कर रहे थे क्या ऐसे भी प्राणी इस पृथ्वी पर होते हैं ? या हमने मूर्खता लाने वाली कोई ऐसी जड़ी खाली है जिससे हमारी विचार-शक्ति पर ताला-सा पड़ गया है।

मैकबैथ : तुम्हारे पुत्र सम्राट बनेंगे बैंको !

बैंको : तुम भी सम्राट् होगे।

मैकबैथ : और काउडोर का थेन भी ? यही कहा था न उन्होंने ?

बैंको : बस ठीक वही बात, वे ही शब्द।

लेकिन ये कौन आ रहे हैं यहाँ ?

[रौस तथा ऐङ्गस का प्रवेश]

रौस : सम्राट् अपार हर्ष के साथ मैकबैथ का स्वागत करते हैं। तुम्हारी विजय की सूचना पाकर जब उन्हें यह भी पता लगा कि विद्रोहियों को कुचलने में तुमने अपनी जान तक की बाज़ी लगा दी थी तो

उनका हृदय इस तरह फूल उठा है मानो आश्चर्य और तुम्हारी वीरता की प्रशंसा की दो लहरें एक के ऊपर एक उठ रही हों। इसी से उनका हृदय पूरी तरह भर गया है कि मुँह से शब्द तक कहने को नहीं निकल रहे हैं। उसी दिन युद्ध के अन्य-अन्य समाचार सुनते हुए उन्हें पता लगा कि नाँवों की सेना का सामना तुम इस अपूर्व वीरता के साथ कर रहे थे कि तुम्हारी तलवार से कटक कर जो सैनिक गिरते थे मौत एक डरावनी-सी छाया उनके चेहरों पर डाल देती थी और वे सदा के लिये रणभूमि में सो जाते थे। उन्हें देख कर भी तुम्हारा हृदय तनिक भी डर से नहीं काँपता था। एक के बाद एक दूत आते थे और प्रत्येक तुम्हारी देश की रक्षा में दिखाई गई वीरता की सम्राट के सामने अनेक प्रशंसाएं करता था।

ऐङ्गस : हमारे स्वामी सम्राट् ने हमें इसीलिये भेजा है कि हम उनकी ओर से तुम्हें धन्यवाद दें। उन्होंने हमसे तुरन्त तुम्हें उनके पास ले चलने के लिये आज्ञा दी है। उन्होंने तो हमारे हाथ पुरस्कार भी नहीं भेजा है।

रौस : और तुम्हें और भी अधिक सम्मान से विभूषित करने के लिये उतावले होकर उन्होंने मुझे आज्ञा दी है कि मैं तुम्हें काउडोर का थेन कह कर पुकारूँ। इसलिये ओ श्रेष्ठ थेन ! तुम्हारा स्वागत है ! अब से यह सम्मान और पद तुम्हारा है।

बैंको : (स्वगत) क्या ? क्या जो कुछ यह शैतान कह रहा है वह सच है ?

मैकबेथ : लेकिन यह कैसी बात ! काउडोर के थेन तो अभी जीवित हैं, फिर क्यों इन माँगे हुए वस्त्रों को मेरे ऊपर लाद कर मुझे सम्मानित करना चाहते हो ?

ऐङ्गस : अवश्य, जो था वह अभी तक भी जीवित है पर उसे मृत्यु-दण्ड

सुनाया जा चुका है और वह इस पृथ्वी पर जीवित नहीं रह सकता। मैं नहीं जानता कि वह नाँवों के सम्राट से मिल गया था या गुप्त रूप से उसने विद्रोहियों की सहायता की थी और इस तरह गद्दारी करके अपने देश की बरबादी के लिये षड्यन्त्र रचा था लेकिन अब उसने अपने सारे अपराध को स्वीकार कर लिया है और यह पूरी तरह सिद्ध भी हो चुका है इसीलिये उसकी मौत की घड़ियाँ निकट आ गई हैं।

मैकबेथ : (स्वगत) ग्लेमिस, और काउडोर का थेन भी। ठीक है। पर सबसे बड़ी भविष्यवाणी तो अभी अधूरी ही है। (रोस और ऐंज़स से) आपने जो यहाँ तक आने का कष्ट किया उसके लिये आपको धन्यवाद है।

(बैंको से) बैंको ! क्या तुम यह आशा नहीं करते कि तुम्हारे पुत्र सम्राट् होंगे क्योंकि जिन्होंने भविष्यवाणी करके मुझे काउडोर का थेन बनाया है उन्होंने उनके विषय में भी तो कम बात नहीं कही ?

बैंको : तुम उस पर विश्वास करते हो न ? फिर तो काउडोर के थेन बनने के बाद सम्राट बनने की लालसा तुम्हारे हृदय में मचल रही होगी। लेकिन अजीब-सी बात है। नहीं, प्रायः ऐसा होता है कि शैतान हमारे नुकसान के लिये अपने दूत भेजता है और वे यहाँ आकर ऐसी-ऐसी सच लगने वाली बातें कहते हैं कि हम उन छोटी-छोटी बातों को सच समझ कर मान लेते हैं। फिर परिणाम होता है कि वही बातें हमारे जीवन के साथ धोखा करती हैं।

साथियो ! मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।

मैकबेथ : (स्वगत) इस महान नाटक की शुरू की घटनाओं की तरह दो भविष्यवाणियाँ तो पूरी हो गईं।

(रौस तथा ऐङ्गस से) भद्र पुरुषो ! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ ।
 (स्वगत) इन डाइनों की लालच भरी ये बातें क्या पूरी तरह बुरी हो सकती हैं ? नहीं । पर अच्छी भी कैसे हो सकती हैं ये ? यदि बुरी हैं तो इस तरह सच्ची होकर इन्होंने मुझे यह सफलता क्यों दी ? काउडोर का धेन भी मैं हो गया हूँ । यदि अच्छी हैं तो उनके दिये गये उस लालच का शिकार मैं क्यों बनता हूँ जिसकी भयावनी कल्पना मात्र से ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और हृदय में अजीब तरह से धड़कन और कँपकँपी मच उठती है ? डरावनी कल्पनाओं से तो सामने रहने वाले भय कम डराते हैं । हत्या की बात मेरे मस्तिष्क में एक अजीब सपने की तरह लगती है पर इसने मुझे इतना विचलित कर दिया है कि यह बात सपने जैसी लगते हुए भी मुझे कुछ विश्वास होता है कि जो कुछ कोरा सपना है और एक उड़ती हुई कल्पना की तरह है उसके सिवाय वास्तविक कुछ भी नहीं है ।

बैंको : वह देखो, मैकबेथ किस तरह किसी गम्भीर विचार में डूब रहा है ।

मैकबेथ : (स्वगत) यदि भाग्य में लिखा है कि मैं सम्राट हूँगा तो क्या बिना कोई प्रयत्न किये नहीं हो जाऊँगा ?

बैंको : जो कुछ भी ये नये पद और सम्मान उसे प्राप्त हुए हैं वे अपरिचित और अजीब तरह के वस्त्रों की तरह हैं जो उसके शरीर में पूरी तरह आ नहीं रहे हैं । पर खैर, अभ्यास करते-करते अवश्य एक दिन वह इनका आदी हो जायेगा ।

मैकबेथ : (स्वगत) कुछ भी हो, एक न एक दिन वह नियत समय अवश्य आयेगा । उस बीच में जो भी कठिन से कठिन दिन हैं वह भी किसी तरह निकल ही जायेंगे ।

बैंको : श्रेष्ठ मैकबैथ ! हम इसी प्रतीक्षा में यहाँ खड़े हुए हैं कि तुम अवकाश निकाल कर अब हमारे साथ सम्राट के पास चलो ।

मैकबैथ : ओ क्षमा करें मुझे ! मेरा यह जड़ मस्तिष्क कुछ भूली हुई बातों को याद करते-करते इस तरह खो गया था ।

ओ मेरे महरबान साथियो ! आपकी छोटी से छोटी भी सेवा मेरे मस्तिष्क में इसी तरह अंकित है जैसे किसी पुस्तक में । मैं प्रतिदिन उसके पृष्ठ उलट कर उन्हें पढ़ता हूँ ।

अच्छा चलो, अब सम्राट के पास चलें ।

(बैंको से) जो कुछ भी घटना हमारे साथ घटी है उस पर और गहराई से सोचना बैंको ! इस बीच इतनी गहराई से सोच लेने के पश्चात् किसी अधिक अवकाश के समय हम एक साथ बैठेंगे और अपनी-अपनी बात एक दूसरे से कहेंगे ।

बैंको : बड़ी खुशी के साथ ।

मैकबैथ : तब तक के लिये इतना ही काफी है—अच्छा, आओ मित्रो ! चलें ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[फौरस । राजमहल में एक कमरा]

[बाजे बजते हैं । डंकन, मैलकॉम, डोनलबेन, और लैनोक्स का

अनुचरों के साथ प्रवेश]

डंकन : क्या काउडोर को मृत्यु-दण्ड मिल चुका ? वे व्यक्ति जिनके हाथों यह काम सौंपा गया था अभी तक लौट कर आये या नहीं ?

मैलकॉम : वे अभी तक लौट कर नहीं आये हैं मेरे स्वामी ! लेकिन मुझे एक व्यक्ति ने बतलाया है कि उसको मृत्यु-दण्ड मिल चुका

क्योंकि उस व्यक्ति ने उसे अपनी आखिरी श्वास तोड़ते हुए देखा था । वह कह रहा था कि काउडोर ने खुले रूप में अपने अपराधों को मान लिया था और आपसे क्षमा माँगते हुए उसने अपने किये हुए कार्यों पर घोर पश्चाताप भी किया था । जीवन में कभी भी ऐसे सुन्दर विचार उसके हृदय में नहीं फूटे जैसे उसके अनुरूप होने चाहियें पर अपने अन्तिम क्षणों में वह इतना अच्छा हो गया मेरे स्वामी ! उसने मृत्यु को इस तरह गले लगा लिया जैसे मानो मृत्यु देवी से मिलन की सारी कला उसे आती थी । मैं क्या कहूँ मेरे स्वामी ! अपने प्यारे से प्यारे इस जीवन को उसने इस तरह त्याग दिया मानो कि यह कोई तुच्छ वस्तु हो जिस पर उसको विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं थी ।

डंकन : इस पूरे संसार में ऐसी कोई कला नहीं है जिससे मनुष्य के अन्दर के सारे भाव उसका चेहरा देखकर मालूम हो सकें । कैसा योग्य और सज्जन था वह काउडोर ! हमारा उसके ऊपर अद्भुत विश्वास था ।

[मैकबेथ, बैंको, रौस, तथा ऐङ्गस का प्रवेश]

ओ हमारे सर्वश्रेष्ठ भाई ! हम बड़े कृतघ्न हैं और वही पाप अब भी बोझ बन कर हमारे ऊपर चढ़ा हुआ है । अपने वीरतापूर्ण कार्य से तुम इतने ऊँचे उठ गये हो कि किसी भी पुरस्कार के शीघ्रगामी पंख तुम तक नहीं पहुँच सकते । अच्छा होता तुम इतना गौरवशाली काम न करके कुछ कम के अधिकारी होते जिससे हम इस योग्य तो हो पाते कि तुम्हें धन्यवाद दे सकते और तुम्हारे सम्मान के अनुकूल तुम्हें पुरस्कृत कर पाते । लेकिन अब क्या ? अब तो हमारे पास यही कहने के लिये है कि कितना भी देकर हम तुम्हारी सेवा और त्याग के ऋण से उऋण नहीं हो सकते ।

मैकबैथ : यह सब कुछ करना तो मेरा कर्तव्य और स्वामिभक्ति है महाराज!! और इसी कारण मैं अपने आपको आपके कहने से पहले ही पुरस्कृत समझता हूँ। हे स्वामी ! हमारी सेवाओं को स्वीकार करना आपका काम है। आपके तथा देश के प्रति हमारे कर्तव्य ऐसे ही हैं, मां-बाप के प्रति बच्चों के और स्वामियों के प्रति सेवकों के जैसे होते हैं। देश की रक्षा के लिये और आपके प्रेम तथा सम्मान के लिये जो कुछ भी हम कर रहे हैं क्या वह हमारा कर्तव्य नहीं महाराज ?

डंकन : स्वागत है तुम्हारा मैकबैथ ! हमने तुम जैसे पौधे को लगाया है और अब अपनी सारी शक्ति लगा कर भी हम इसे फलता-फूलता देखना चाहते हैं।

ओ सुहृद बैंको ! तुम भी कम प्रशंसा के अधिकारी नहीं हो ! तुम्हारी सेवाएँ भी अमूल्य हैं। आओ वीर ! अपनी बाहों में भर कर तुम्हें हृदय से लगा लें।

बैंको : हे महाराज ! अगर मैंने भी एक पौधे के रूप में आपके हृदय में स्थान पाया है तो इसके सारे फल-फूल भी आपके ही समर्पण हैं।

डंकन : आह ! कितना आनन्द है ! हमारा हृदय इस असीम हर्ष से फूला नहीं समा रहा है। दुःख के आँसू उमड़ कर इसे अपने बीच छिपाना चाहते हैं। हमारे पुत्र, सम्बन्धी, येन तथा सभी निकटतम मित्र यह जानते हैं कि हम अब साम्राज्य का उत्तरदायित्व हमारे ज्येष्ठ पुत्र मैलकॉम को सौंपना चाहते हैं। अबके बाद हम उसे कम्बरलैन्ड का राजकुमार कहकर पुकारेंगे। पर हाँ, हम केवल उसी को यह सम्मान नहीं देंगे बल्कि उन सभी को भी हम उचित सम्मान से विभूषित करना चाहते हैं जिनके ऊपर यश और गौरव तारों की तरह जगमगाता है। चलो यहाँ से 'इनवर्नेस' (Inverness) को

चलें। वहाँ हम तुम्हारे साथ और भी निकट के सूत्र में बँध जायेंगे।

मैकबैथ : हे स्वामी ! जानते हैं ? वह आराम का समय भी बड़ी कठिनाई से बीतता है जो आपकी सेवा में काम नहीं आ सकता। मैं चाहता हूँ कि स्वयं आपके स्वागत के लिये पहले आगे चला जाऊँ और आपके शुभागमन की सूचना देकर मेरी स्त्री को अत्यधिक प्रसन्न कर दूँ। अतः कृपा करके मुझे जाने की आज्ञा दीजिये।

डंकन : मेरे श्रेष्ठ काउडोर !

मैकबैथ : (स्वगत) कम्बरलैन्ड का राजकुमार ? सँभल जा ओ मैकबैथ !

यह वह सीढ़ी है जिससे या तो तू नीचे गिर जायगा या इसे छलांग मारकर पार कर जायेगा। तेरे पथ में यही एक बाधा है। सितारो ! छिपा लो अपनी इस जगमगाती ज्योति को। मेरी इन काली और पाप से भरी गहरी लालसाओं को अपने इस प्रकाश में मत प्रगट होने दो। जब मेरे हाथों से काम पूरा हो जाय तब चाहे मेरी दोनों आँखों के चिराग सदा के लिये बुझ जायें। हाँ, ये बुझ ही जाने चाहियें क्योंकि इस काम के पूरा होने पर ये आँखें भय के मारे इसे देख नहीं पायेंगी।

[जाता है।]

डंकन : सच है, श्रेष्ठ बैंको ! वह इतना ही शूरवीर है और उसकी प्रशंसाएँ सुनते-सुनते हमें ऐसा लगता है जैसे हम अपना स्वादिष्ट भोजन कर रहे हैं। उसी से हमारा पेट भरता है। चलो, उसके पीछे चलें जो इस तरह उत्सुक होकर हमारा स्वागत करने के लिये पहले ही चला गया है। मेरी दृष्टि में उसके समान कोई भी मेरा सम्बन्धी नहीं आता।

[बाजे बजते हैं। प्रस्थान]

दृश्य ५

[इनवर्नेस । मैकबेथ का महल]

[लेडी मैकबेथ का एक पत्र पढ़ते हुए प्रवेश]

लेडी मैकबेथ : “जिस दिन मुझे विजय प्राप्त हुई थी उसी दिन वे मुझे मिली थीं और यह मुझे पूरी तरह पता लग गया है कि पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों से कहीं अधिक वे जानती हैं। मैं कुछ और आगे पूछने के लिये उत्सुक हुआ उसी समय वे न जाने कहाँ हवा में विलीन हो गई। इससे मैं आश्चर्य में डूबा हुआ वहीं खड़ा रह गया, उसी बीच सम्राट के भेजे दूत वहाँ आये और उन सबने मुझे ‘काउडोर का थेन’ पुकार कर मेरा अभिनन्दन किया। ठीक उसी पद से जिससे उन डाइन बहनों ने पहले मेरा स्वागत किया था। फिर यह कह कर कि ‘सम्राट बनेगा उसका स्वागत है’ उन्होंने आगामी समय के लिये भविष्यवाणी की थी।

ओ मेरे सुख और ऐश्वर्य की सर्वप्रिय सहभागिनी ! मैंने सबसे पहले यह अच्छा समझा कि तुम्हें इस बात से अवगत करा दूँ जिससे तुम मेरे आने वाले ऐश्वर्य और गौरव से अपरिचित न रह जाओ और मेरे साथ अपनी प्रसन्नता का उचित भाग पा सको। इस बात को अपने हृदय में रखना। अच्छा, अलविदा !”

(स्वगत) ग्लेमिस तो तुम पहले ही हो और अब काउडोर का थेन बनाकर तुम्हारा सम्मान किया गया है। इसके अलावा आगे की भी भविष्यवाणी अवश्य पूरी होगी पर फिर भी मुझे एक बात का डर है कि तुम्हारा स्वभाव इतना सरल और उदार है कि यह तुम्हें अपने गौरवशाली भाग्य के निकट शीघ्रता से पहुँचने नहीं देगा। तुम महान होना चाहते हो। महत्वाकांक्षा तुम्हारी रग-रग में समाई हुई है पर बिना किसी तरह का पाप किये उसे प्राप्त

करना चाहते हो। जिसको पाने के लिये तुम इतने लालायित हो उसे अन्त तक पवित्र रह कर ही प्राप्त करना चाहते हो। किसी तरह की भूठ भी नहीं बोलना चाहते न ? और आनन्द भोगना चाहते हो उस वस्तु का जो धोखे और बेईमानी से प्राप्त हो सकती है। ओ ग्लेमिस ! तुम जिस ऐश्वर्य और गौरव के लिये लालायित हो वही तुमसे पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि—‘यदि तुम हमें प्राप्त करना चाहते हो तो धृष्टता को तुम्हें गले लगाना ही पड़ेगा।’ और कैसा आश्चर्य है कि तुम इसे न करने के लिये अधिक इच्छुक हो क्योंकि ऐसा करते हुए डर से तुम्हारा हृदय कांपता है न ? शीघ्र यहाँ चले आओ जिससे मेरे हृदय में जितना भी साहस है वह सब तुम्हारे कानों में होकर हृदय में भर दूँ और अपनी वीरता भरी हुई वाणी से उस रोड़े को हटाकर नष्ट कर दूँ जो तुम्हारे और राजमुकुट के बीच अड़ा हुआ है जिससे तुम्हारे भाग्य और दैवी शक्तियों के द्वारा तुम पहले ही विभूषित किये जा चुके हो।

[एक दूत का प्रवेश]

क्या समाचार लाये हो दूत !

दूत : देवी ! आज रात को सम्राट यहाँ पधार रहे हैं।

लेडी मैकबेथ : तुम पर कुछ पागलपन-सा चढ़ा हुआ मालूम होता है तभी ऐसी बातें कर रहे हो। क्या तुम्हारे स्वामी सम्राट के साथ नहीं हैं ? नहीं ! यदि ऐसी बात होती तो वे मुझे स्वागत की व्यवस्था करने के सम्बन्ध में अवश्य सूचित करते।

दूत : जैसा आप सोचें देवी ! पर जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सच है। हमारे धेन आ रहे हैं। हममें से एक व्यक्ति उनसे भी अधिक तीव्र गति से भेजा गया था जो किसी भी तरह भाग-दौड़ कर मरता-मरता पहले आपको यह सन्देश देने आया है।

लेडी मैकबेथ : दूत का समुचित स्वागत करो। वह अच्छा सन्देश लेकर आया है।

(स्वगत) वह कौवा भी उस अभागे डंकन के मेरे महल में आने की सूचना देता हुआ स्वयं दुःख से आहें भर रहा है।

आओ, हत्या के इरादों पर मंडराने वाली खून की प्यासी पिशाचिनो ! आओ और नष्ट कर दो मेरे स्त्रियोचित अबला स्वभाव को। मेरी रग-रग को भयानक क्रूरता से पूरी तरह भर दो। मेरे खून को पूरी तरह गाढ़ा बना दो और उन सभी मार्गों को बन्द कर दो जहाँ से दया और पश्चात्ताप के भाव प्रवेश कर सकें ताकि मेरी आत्मा की कोई भी पुकार मुझे अपने काम से विचलित न कर सके और न मेरे इरादों के पूरा होने के बीच कोई बाधा डाल सके।

ओ खून के साथ खेलने वाली डंकनियो ! आओ जहाँ कहीं भी तुम अपने अदृश्य रूप में प्रकृति के साथ कोई धृष्टता करने के लिये प्रतीक्षा कर रही हो वहाँ से आओ और मेरे स्तनों के दूध तक को जहर की तरह कड़वा बना दो।

आओ, ओ घोर काली रात ! आओ और यमलोक की जहरीली काली धुआँ की तरह चारों ओर से इस पृथ्वी को इस तरह ढाँक लो जिससे मेरा यह पैना खंजर भी अपने किये घाव को न देख सके और न इस काले परदे में हो कर स्वर्गभूमि से देवता यह देख कर पुकार सकें—ठहरो ! ठहरो !!

[मैकबेथ का प्रवेश]

महान ग्लेमिस ! ओ श्रेष्ठ थेन ! इन दोनों से भी ऊँचे और महान पद से, जो भविष्य में अवश्य आपको मिलेगा, मैं आपका अभिनन्दन करती हूँ। आपके पत्रों ने मुझे बहुत दूर तक बता दिया है और

अब मैं अनजान नहीं हूँ इसीलिने अभी से मैं भविष्य के ऐश्वर्य और गौरव का अनुभव कर रही हूँ ।

मैकबैथ : ओ मेरी प्राणप्रिये ! मालूम है, सम्राट डंकन आज रात को यहाँ पधार रहे हैं ?

लेडी मैकबैथ : फिर वापिस कब जायेंगे यहाँ से ?

मैकबैथ : उनका विचार तो कल ही चले जाने का है ।

लेडी मैकबैथ : कल ? कभी नहीं ! क्या सूर्य की किरणों उस कल को देख पायेंगे जबकि वह यहाँ से वापिस चला जाय ? नहीं ! मेरे थेन ! आपका चेहरा देखकर तो ऐसा लगता है मानो यह कोई ऐसी किताब हो जहाँ से मनुष्य अजीब तरह की बातें पढ़ सके । अगर समय को धोखा देना है तो अपना यह चेहरा समय के अनुरूप बनाना ही होगा । अपनी आँखों के हाव-भाव से, हाथों से, बोली-चाली से, हर तरह सम्राट को अपार सम्मान दिखाओ और एक मासूम फूल की तरह बन जाओ पर सावधान ! उसके नीचे छिपे हुए जहरीले साँप की तरह । वह डंकन जो आज यहाँ आ रहा है, हर प्रकार से उसकी आवभगत करो, और उचित रीति से सम्मान दिखाओ । बाकी इस रात के महान षड्यन्त्र का भार मेरे ऊपर छोड़ दो जिससे हम यह दिन देख सकें जब हम इस महान साम्राज्य के एकमात्र स्वामी हों ।

मैकबैथ : इस विषय पर फिर बातें करेंगे ।

लेडी मैकबैथ : सिर्फ अपने चेहरे को खिलता हुआ बनाये रखना क्योंकि किसी तरह परिवर्तन खतरे से खाली नहीं है ।

वस, बाकी सब मेरे ऊपर छोड़ दो ।

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[वही स्थान । महल के सामने जगमगाता

प्रकाश, शहनाइयाँ बजती हैं ।]

[डंकन, मेलकॉम, डोनलबेन, बैंको, लैनोक्स, मैकडफ़, रॉस और
ऐङ्गस का अन्य सेवकों के साथ प्रवेश]

डंकन : यह महल कैसे सुन्दर स्थान पर है ! यहाँ की मन्द और सुगन्धित वायु चित्त को कैसा आनन्द दे रही है ।

बैंको : मन्दिरों में अपना घर बनाने की शौकीन और गर्मी की महमान यह 'मार्टिल' अपने प्रिय घोंसले से इसी बात का समर्थन करती है कि आकाश से अत्यन्त ही सुगन्धित वायु यहाँ बह रही है । आंगन की छत, दीवार थामने वाले खम्भे ऐसा कोई भी स्थान नहीं है जहाँ यह घोंसला न बनाती हो । उसी में यह अपने बच्चों को खिलाती और पालती है ! मैंने यह देखा है मेरे स्वामी ! कि जहाँ यह अधिकतर रहती है और अपने बच्चों को पालती है वहाँ की वायु अवश्य सुगन्धित होती है ।

[लेडी मैकबेथ का प्रवेश]

डंकन : देखो, देखो, हमारी महमानदाज्ञ श्रेष्ठ महिला ! कभी-कभी हमारे मित्र और सम्बन्धी जो प्रेम और सम्मान हमारे प्रति दिखाते हैं उससे हम एक संकोच-से में पड़ जाते हैं पर फिर भी प्रेम मानकर हम इसका आदर करते हैं । इसी लिये हम आपसे यही कहना चाहते हैं कि जो भी कष्ट हमने आपको दिया है उसका ख्याल न करके आप ईश्वर से हमारे लिये शुभ कामना करें और उस कष्ट के लिये हमें धन्यवाद का पात्र समझें ।

लेडी मैकबेथ : सम्राट ! आपके प्रति की गई हमारी सभी सेवाएँ और ये ही नहीं बल्कि इनसे दुगुनी और चौगुनी तक भी आपने जो

असीम उपकार हमारे प्रति किये हैं उनका किसी भी रूप में बदला नहीं चुका सकती। आपने जैसी उदारता पहले दिखाई थी और जो भी सम्मान अब देकर हमें सम्मानित किया है उसके लिये हम हमेशा सच्चे फ़कीरों की तरह आपकी भलाई के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

डंकन : पर वह हमारा काउडोर का थैन कहाँ छिपा हुआ है। हम बड़ी ही तेज़ी से उसके पीछे-पीछे चले और हर तरह चाहा कि उससे आगे निकल जायँ पर वह तो वास्तव में एक अच्छा सवार है। उसके पैर की ऍंड से भी तेज़ उसका महान प्रेम ही उसे हमसे भी पहले घर ले आया है।

हे सुन्दर और उदार हृदय वाली देवी ! हम आज रात को आपके महमान बन कर रहेंगे।

लेडी मैकबैथ : हमारे स्वामी ! हम तो आपके ऐसे सेवक हैं जिनका तन, मन, धन सभी कुछ आपका ही है। हमारी सारी सम्पत्ति आपकी कृपा का ही तो फल है। उसका हिसाब भी तो अभी आप को चुकाना होगा महाराज ?

डंकन : हमें अपना हाथ दो देवी ! और अपने पति के पास ले चलो। हम उन्हें अपने हृदय से अधिक प्रेम करते हैं और ऐसा ही सदा करते रहेंगे। अच्छा, अब चलो देवी !

[५ स्थान]

दृश्य ७

[मैकबेथ का महल । जगमगाता

प्रकाश, शहनाइयाँ बजती हैं ।]

[एक दर्जी, कुछ गोताखोर और सेवक तश्तरियाँ तथा अन्य वस्तुएँ लेकर आते हैं और रंगमंच से गुजरते हैं । फिर मैकबेथ का प्रवेश]

मैकबेथ : यदि यह काम मुझे करना है तो क्यों न मैं इसे शीघ्र से शीघ्र कर डालूँ । यदि इस एक खून में हाथ धोने से वे सारे परिणाम रुक सकें और हमें सफलता मिल सके; समय के अथाह समुद्र के बीच मौत का यह पतला-सा किनारा है, यदि हमारे इस क्रदम उठाने से वहीं इस समस्या का प्रारम्भ और अन्त हो तो हम अपने भविष्य के लिये अपने जीवन का भी खतरा सिर पर ले लेंगे... पर, फिर ऐसे पापों का दण्ड भी तो हमें यहीं भोगना पड़ेगा । हम दूसरों को कहते हैं कि हमारे लिये खून कर दो । पर जब उनके हाथ किसी के खून से रंग जाते हैं तो उसका कठोर दण्ड हमारे ही सिर पर आकर पड़ता है । ईश्वर के निष्पक्ष न्याय में मैंने कभी-कभी यह भी देखा है कि जो जहर का प्याला दूसरों के लिये भर कर हम तैय्यार करते हैं वह हमारे ही ओठों के नीचे आ लगता है । नहीं ! मेरे सम्राट की दूने विश्वास के साथ यहाँ रक्षा होनी चाहिये क्योंकि एक तो उनका सम्बन्धी और दूसरे उनकी प्रजा होने के नाते यह मेरा कर्तव्य है । पर्याप्त कारण हैं ये इस घृणित हत्या के काम के विरुद्ध । आज वे मेरे अतिथि हैं, उस नाते क्या उनका खून करने के लिये मुझे अपने हाथों में कटार लेनी चाहिये ? नहीं ! मुझे तो उन सभी रास्तों तक को रोक देना चाहिये जहाँ उनके जीवन का हत्यारा घुस सके । और इस सबके अलावा यह डंकन अपने व्यवहार में इतना सीधा और सच्चा है कि उसकी हत्या के

डरावने समय में उसके गुण ही देवताओं के नक्कारों की तरह जोर से पुकार उठेंगे—ठहरो ! नहीं ! नहीं !! ... और नंगे नव-जात शिशुओं की तरह संसार के हृदय में बसी दया बहती हवा में रो उठेगी और आकाश के देवता वायुरूपी अपने अदृश्य वाहनों पर चढ़ कर इस घृणित इरादे की बात पुकार-पुकार कर सबको सुना देंगे जिसे जो भी सुनेगा उसी का हृदय फट जायगा और आँखों से इतने आँसू बहेंगे कि वायु का वेग भी उससे कम हो जायेगा ।

मेरी महत्वाकांक्षा के सिवाय क्या है इस डंकन के जीवन से मुझे आपत्ति जो मुझे इस घृणित इरादे की ओर खींच कर ले जाय ? ... पर कैसी बात है ! यह महत्वाकांक्षा ! क्या यह है ? क्या यह ठीक उस सवार की तरह नहीं जो कभी-कभी अपना निशाना चूक कर हारा हुआ-सा दूसरी ओर जा गिरता है ।

[लेडी मैकबेथ का प्रवेश]

क्यों ? क्या समाचार है ?

लेडी मैकबेथ : उन्होंने करीब-करीब खाना खा लिया है । पर तुम वहाँ से आ क्यों गये ?

मैकबेथ : क्या वे मेरे बारे में कुछ पूछ रहे थे ?

लेडी मैकबेथ : हाँ ! क्या तुम नहीं जानते ?

मैकबेथ : अब हम इस इरादे की बात आगे नहीं बढ़ायेंगे । सोचो तो, अभी-अभी सम्राट ने मुझे इन उच्च पदों से सम्मानित किया है और फिर सभी लोगों के हृदय में मेरे प्रति कैसे-कैसे पवित्र विचार हैं । उनका मैं खून नहीं करना चाहता प्रिये ! उन्हें बचाये रखना ही चाहता हूँ ।

लेडी मैकबेथ : ठीक ही है । फिर यह बताओ कि क्या कुछ मतवाले

होकर राजमुकुट की अभिलाषा कर रहे हो ? तुम्हारी यह आशा जो पहले पूरी तरह सो-सी गई थी अब उठी भी तो इस तरह डर के मारे पीली होकर । कहाँ है इसमें वह स्वच्छन्दता जो कुछ समय पहले थी ? क्या अब से जो मेरे प्रति भी तुम्हारा प्रेम है उसको भी इसी तरह अस्थिर और बिना किसी आधार का मानूँ ? क्या जिस वस्तु को प्राप्त करने की तुम्हारी इतनी लालसा है उसके लिये कदम आगे बढ़ाने का साहस तुम्हारे अन्दर मर चुका है ? बताओ, मैं पूछती हूँ कि जिसको तुम अपने जीवन का ऐश्वर्य्य, महानता और गौरव कहते हो उसे छोड़कर क्या एक कायर का-सा जीवन बिता लोगे ? बताओ, क्या उसी में तुम्हें सन्तोष मिलेगा ? ठीक है, तुम उसी बिल्ली की तरह हो जो पानी में पड़ी मछली को खाना तो चाहती है पर अपने पैर उस पानी में भिगोना नहीं चाहती ।

मैकबेथ : बस, चुप हो जाओ, और अधिक नहीं, मैं प्रार्थना करता हूँ, बस ! कौन कहता है मैं कायर हूँ ? इस पृथ्वी पर रहने वाले एक पुरुष में जितना साहस होना चाहिये वह प्रत्येक काम करने के लिये मेरी रगों में है । कौन है ऐसा जो मुझसे अधिक साहसपूर्ण कार्य कर सके ।

लेडी मैकबेथ : तो फिर बताओ, जब तुमने मुझे इस षड्यन्त्र की बात बताई थी उस समय कौन पशु तुम्हारे मस्तिष्क से बोल रहा था ? मैं कहती हूँ, तुम उसी समय एक पुरुष कहलाने के योग्य थे जब तुमने यह षड्यन्त्र बनाया ही था और अब इसे पूरा करके तो सचमुच एक वीर पुरुष कहलाने के सच्चे अधिकारी होगे । क्या तुम भूल गये कि जब तुमने इस षड्यन्त्र की बात सोची थी तब न तो अपने पास उसके पूरा करने का उचित अवसर था और न ही उपयुक्त

स्थान ? फिर भी उन्हें पैदा करने का तुममें एक साहस था लेकिन अब तो उचित अवसर और स्थान दोनों तुम्हारे सामने ही हैं; फिर जितनी सुविधा सामने है उतनी ही कायरता तुम्हारे अन्दर बढ़ती जाती है। मैंने बच्चों को दूध पिलाया है और यह जानती हूँ कि जो बच्चा माँ की छाती से चिपक कर दूध पीता है वह उसे कितना प्यारा होता है फिर भी जैसी सौगन्ध खाकर तुमने अपना पक्का इरादा बनाया था यदि मुझे अपना इरादा इस तरह पूरा करना पड़ता तो जानते हो मैं क्या तक कर डालती ? अपने मुस्कराते हुए मासूम बच्चे को भी छाती से हटा कर उसके टुकड़े-टुकड़े करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाती।

मैकबेथ : लेकिन.....लेकिन अगर हमारा यह षड्यन्त्र किसी तरह पूरा न हो सका तब...?

लेडी मैकबेथ : पूरा न हो सका ? हमसे ? अगर तुम अपने पूरे साहस से काम लो तो हम कभी असफल नहीं हो सकते। सुनो, जब यह डंकन सो जाय, और अपनी दिन भर की यात्रा की थकान के कारण मुझे विश्वास है यह शीघ्र ही गहरी नींद सो जायेगा, तब मैं उसके शयनागार के दोनों अधिकारियों को शराब पिला कर ऐसा कर दूंगी कि मस्तिष्क को काबू में रखने वाली जो मनुष्य की स्मृति होती है वह शराब के नशे में धुएँ की तरह उड़ जायेगी और वे पूरी तरह अपनी बुद्धि खो कर पागल जैसे हो जायेंगे। तब वे उस नशे में चूर हो कर सूअरों की तरह ऐसे सोये रहेंगे मानो उनमें जान बची ही न हो। तब इस अकेले डंकन के साथ हम क्या नहीं कर सकते ? फिर नशे में चूर पड़े इन अधिकारियों के ऊपर डंकन के खून का अपराध लादना क्या कुछ मुश्किल होगा ?

मैकबेथ : ईश्वर करे तुम्हारी कोख से वीर पुरुष बनने वाले पुत्र ही पैदा

हों क्योंकि तुम्हारा इस तरह का निर्भीक स्वभाव उन्हीं के लिये ही उपयुक्त है ! ठीक है, अगर हम इन दोनों अधिकारियों के शरीर पर खून के दाग लगा दें और उन्हीं की कटारों को काम में लें तो क्या यह नहीं समझा जायेगा कि यह खून इन्होंने ही किया है ?

लेडी मैकबैथ : अवश्य, कौन इसे झूठ मानेगा और फिर खासकर जब हम उसकी मृत्यु पर खूब रोयेंगे और इधर-उधर चिल्लायेगे, पुकारेंगे ?

मैकबैथ : तो अब मैं पूरी तरह दृढ़ हूँ और जितना भी साहस और पौरुष मेरी रगों में है उसे इस खतरनाक काम में लगा दूँगा । जाओ, और अपने इस मुन्दर चेहरे पर बनावटी हँसी हँस कर संसार को धोखा दो । जानती हो ? कपट भरे हुए हृदय की बात कपट भरा हुआ चेहरा ही छिपा सकता है ।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[इनवर्नेस । मेकबैथ के महल का आंगन]

[बेको और फलीन्स का मशालें लिये हुए प्रवेश]

बेको : फलीन्स ! क्या बज रहा होगा इस समय ?

फलीन्स : चाँद तो छिप गया है । घंटे की आवाज़ अभी तक मैंने नहीं सुनी है पिता जी ।

बेको : चाँद तो बारह बजे छिप जाता है ।

फलीन्स : पर मेरे विचार से तो इस समय बारह से अधिक ही बज रहा होगा ।

बेको : अच्छा, तो यह लो मेरी तलवार और यहाँ खड़े रहो । अंधेरा हो गया । मालूम होता है आसमान भी चाँद को छिपा कर इसके लिये सतर्क है कि इस संसार में अधिक प्रकाश न आ पाये । उनकी सभी मशालें बुझ चुकी हैं । इसे भी ले जाओ । मेरी आँखें तो गहरी नींद के कारण इस तरह भुकी पड़ रही हैं मानो कोई शीशे का-सा बोझ इन पर पड़ा हो लेकिन फिर भी मैं सोना नहीं चाहता ।

ओ दयालु स्वर्ग के देवताओ ! सोते समय मेरे मन में जो कभी-कभी पाप भरे हुए काले विचार उठते हैं उन्हें रोक दो ।

कौन आ रहा है यहाँ ? मेरी तलवार दो ।

[मेकबैथ का प्रवेश । साथ में एक सेवक मशाल लिये हुए]

मेकबैथ : कोई अन्य नहीं, एक मित्र !

बेको : ओ, क्या श्रीमान् अभी तक सोये नहीं ? सम्राट तो सो गये हैं ।

बड़े ही प्रसन्न थे आज वे । तुम्हारे सेवकों को बड़े-बड़े पुरस्कार

भेजे हैं उन्होंने। तुम्हारी पत्नी ने उनका हार्दिक स्वागत किया है इसी लिये यह हीरा उन्होंने उनको उपहारस्वरूप भेजा है। अब पूर्ण सुख और संतोष के साथ वे सो गये हैं।

मैकबेथ : वैसे तो पूरी तरह स्वागत की तैयारी के लिये हमें पर्याप्त समय नहीं मिल सका अतः स्वागत में कुछ त्रुटियाँ अवश्य रह गई जो अधिक समय मिलने पर न रहतीं।

बैंको : जैसा भी हुआ बहुत सुन्दर है। छोड़ो इसे। हाँ सुनो, कल रात को सपने में फिर मैंने उन तीनों डाइन बहनों को देखा था। तुम्हें तो उनकी बात कुछ सच्ची भी पड़ी है।

मैकबेथ : मैं उनके बारे में अब कुछ नहीं सोचना चाहता पर फिर भी यदि तुम अपना कोई समय निकाल सको तो कुछ समय बैठ कर हम इसके बारे में बातें करें।

बैंको : जब भी तुम्हें सुविधा हो, मैं तो हर समय तुम्हारी सेवा में उपस्थित हूँ।

मैकबेथ : ठीक है, समय आने दो, यदि उस समय तुमने मेरी बात मानी तो इससे तुम्हें उच्च सम्मान मिलेगा बैंको !

बैंको : अवश्य मानूँगा पर इस नये सम्मान को पाने के लिये मैं लोगों के तथा सम्राट के हृदय में जो कुछ भी मेरा सम्मान है उसे नहीं खोना चाहता। मेरी आत्मा पहले की तरह ही पवित्र रहे और किसी प्रकार का विश्वासघात सम्राट के प्रति मुझे न करना पड़े तो अवश्य मैं तुम्हारी बात मानूँगा।

मैकबेथ : अच्छा, जाओ इस बीच में जाकर तुम कुछ आराम कर लो।

बैंको : धन्यवाद ! तुम भी इस समय आराम कर लो।

[बैंको और फ्लीन्स का प्रस्थान]

मैकबेथ : (सेवक से) जाओ और अपनी स्वामिनी से जाकर कह दो कि

मेरी शराब की व्यवस्था हो जाय तो घंटी बजा कर मुझे बुला लें।
तुम इसके बाद जाकर सो सकते हो।

[सेवक जाता है।]

मेरे सामने रखी हुई क्या यही वह कटार है जिसकी मूँठ मेरी तरफ मुड़ी हुई है। आ, ओ प्यारी कटार ! मेरे हाथों को आकर चूम ले।...लेकिन, हैं ! यह क्या ? मैं तुझे अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ और फिर भी अपने हाथ में नहीं ले पा रहा हूँ। ओ मौत की-सी डरावनी कल्पना पैदा करने वाली शक्ति ! तुझे क्या मैं केवल देख ही सकता हूँ, हाथ से छू नहीं सकता ? या बता, तू मेरे मस्तिष्क की कल्पनामात्र तो नहीं है जो मनुष्य के ऐसे भावावेश में निश्चित ही धोखा देने के लिये आती है ? अब भी मैं देख रहा हूँ, तू उतनी ही वास्तविक दीख रही है जैसे मेरी यह तलवार जिसे मैं म्यान में से खींचता हूँ। तू मुझे ठीक उसी तरफ ले जा रही है जहाँ मैं जाना चाहता था। तब क्या तू उस यन्त्र की तरह नहीं है जिसे मुझे इस अवसर के लिये प्रयोग में लाना चाहिये था ? अवश्य ! तब या तो मेरी आँखें मुझे धोखा दे रही हैं या शरीर की अन्य इन्द्रियों को छोड़ कर ये आँखें ही विश्वास करने के योग्य हैं अभी तक भी मैं तुझे अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ और... यह क्या ? जहाँ पहले कुछ नहीं था वहाँ तेरी इस मूँठ और धार पर खून की बूंदें !... नहीं ! नहीं !! ऐसी कोई चीज़ नहीं है। यह मेरा खूनी षड्यन्त्र है जो मुझे यह सब कुछ दिखा रहा है। आधी से ज्यादा दुनिया के आदमी मुर्दों की तरह रात की साया में सोये हुए हैं। न जाने कितने डरावने और बुरे-बुरे सपने इस समय उनके मस्तिष्क में कोलाहल मचा रहे होंगे।

अरे, यह क्या ? ये तो डाइनें हैं। मालूम होता है अपनी देवी हिकेट

को बलि चढ़ाने के लिये ही ये यहाँ इकट्ठी हुई हैं। यह भेड़िया भी पुकार-पुकार कर बता रहा है कि अभी रात है, और इसी भरोसे मन में घबराया हत्यारा हत्या करने के लिये चुपके-से एक दैत्य की तरह ऐसे जा रहा है जैसे तारकिन ल्यूसिरस के साथ व्यभिचार करने के लिये गया था।

ओ पृथ्वी ! जिधर भी मेरे ये कदम जायें उनकी आवाज़ को मत सुनना। मुझे डर है कि ये बेज़ान पत्थर भी कहीं न बोल उठें और मेरे बारे में बातें करने लग जायें। इस समय जो सन्नाटा है जिसमें भय की काली छायाएँ चुनचाप खड़ी हुई हैं, वस यही अवसर के लिये ठीक है। ·····

ओ, मैं अभी तक ये डर की बातें ही कर रहा हूँ और वह डंकन अभी तक जीवित सोया हुआ है। ··· नहीं, ···

ओ ठीक ही है इस तरह कोरी भावुकता और कल्पना की उड़ान किसी कार्य के आवेश को ठंडा कर ही देती है।

[घंटी बजती है।]

पर क्या है, मैं गया और यह काम पूरा हुआ। ओ, वह घंटी मुझे बुला रही है। मत सुन डंकन ! इसे, यह वह आखिरी घंटी है जो तेरी मौत को बुला रही है।

[जाता है।]

दृश्य २

[वही स्थान। लेडी मैकबेथ का प्रवेश]

लेडी मैकबेथ : उसी शराब ने जिससे वे नशे में चूर पड़े हुए हैं मेरे खून में वीरता का एक जोश भर दिया है। जिसने उन्हें पागल बना

दिया है और वे बेहोश पड़े हैं उसी से मेरे अन्दर एक आग-सी जल उठी है।

वह सुनो, शान्त !

वह उल्लू पुकार-पुकार कर उस अभागे को मौत की सूचना दे रहा है। वस, अब यम के दूत उसकी आँखों के सामने आ गये होंगे। दरवाजे खुले हुए हैं और शयनागार के सभी अधिकारी शराब के नशे में बेहोश इस तरह खर्राटे ले रहे हैं मानों वे अपने कर्त्तव्य की हँसी-सी उड़ा रहे हों। पर हाँ मैंने उनकी शराब में जहर मिला दिया है, इसलिये अब ज़िन्दगी और मौत का संघर्ष है। देखती हूँ वे जीवित रहते हैं या नागिन मौत उन्हें डस जाती है।

मैकबैथ : (अन्दर से घबराकर) कौन ? कौन है वहाँ ? क्या है ?

लेडी मैकबैथ : हाय, मुझे डर है कि उनकी नींद खुल गई है और अभी तक भी तुमने काम पूरा नहीं किया। इस तरह काम शुरू करके अधूरा छोड़ देने से तो हमारा सर्वनाश हो जायेगा। सुनो ! मैंने उनकी कटारों को तैयार कर दिया है और उनसे वह नहीं बच सकता है। सच कहती हूँ, यदि सोती अवस्था में उनका चेहरा मेरे पिता के चेहरे से मिलता हुआ न होता तो स्वयं मैं इस काम को कर डालती, मेरे पति !

[मैकबैथ का प्रवेश]

मैकबैथ : कर डाला है मैंने यह काम। क्या तुमने कोई आवाज़ नहीं सुनी ?

लेडी मैकबैथ : सिर्फ उल्लू और भींगुरों को सन्नाटे में पुकारते हुए सुना था। क्या तुम कुछ नहीं बोले थे ?

मैकबैथ : कब ?

लेडी मैकबैथ : अभी-अभी।

मैकबेथ : जिस समय मैं उतरा था उस समय की बात कह रही हो ?

लेडी मैकबेथ : हाँ, हाँ, उसी समय ।

मैकबेथ : सुनो, उस दूसरे शयनागार में कौन सो रहा है ?

लेडी मैकबेथ : डोनलबेन ।

मैकबेथ : (अपने हाथों की ओर देखता हुआ) ओ, कैसा दुःखदायी है यह हाथों का खून ! ओह ! कितना बुरा !

लेडी मैकबेथ : दुःखदायी, बुरा ? अब यह कहना तो मूर्खता है ।

मैकबेथ : ओह, वहाँ एक तो अपनी नींद में ही खिलखिला कर हँस पड़ा था और दूसरा जोर से पुकारा था—‘हत्या ! हत्या !’ इस तरह उन दोनों पहरदारों ने एक दूसरे को जगा दिया । मैं खड़ा रह गया और मैंने उनकी बातें सुननी चाहीं लेकिन उन्होंने तो उठकर ईश्वर से प्रार्थना ही की और फिर बिना कुछ बोले एक दूसरे की तरफ इशारा करके वे सो गये ।

लेडी मैकबेथ : वहाँ तो दो आदमी साथ-साथ सो रहे हैं ।

मैकबेथ : एक पुकार उठा था—‘हे ईश्वर ! बचाओ’ और दूसरा सिर्फ ‘आमीन’ कहकर ऐसे कहता-कहता रुक गया मानो उन्होंने मुझे मेरे इन खून से रंगे हाथों के साथ देख लिया हो । उनके मुँह से निकलते शब्द भय से काँप रहे थे । उन्हें सुनकर मैं ‘आमीन’ तक भी न कह सका जबकि उन्होंने कहा—‘हे ईश्वर ! बचाओ हमें ।’

लेडी मैकबेथ : इतनी गहराई से इस बात को न सोचो । यह सब कुछ भी नहीं है ।

मैकबेथ : लेकिन, फिर मेरे मुँह से ‘आमीन’ तक भी उस समय क्यों नहीं निकल पाया जबकि ईश्वर की सहायता की मुझे आवश्यकता थी और ‘आमीन’ यह शब्द मेरे गले में ही अटक रहा था ।

लेडी मैकबेथ : ऐसे कामों में इस तरह सोचते हुए नहीं उलझना चाहिये

नहीं इस तरह सोचते हुए तो हम पागल हो जायेंगे ।

मैकबैथ : मुझे याद आ रहा है , उसी समय मैंने किसी को पुकारते हुए सुना था—“बस, अब अधिक मत सोओ । मैकबैथ नींद की हत्या कर रहा है ।” वह नींद जिसकी गोद में सोया हुआ प्रत्येक प्राणी अबोध-सा मालूम होता है । वह नींद जिसमें मनुष्य के जीवन की चिन्ताएँ इस तरह मिट जाती हैं जैसे मानो कोई रेशम के उलझे हुए गुच्छे को सुलभा दे । वह नींद जिसके आंचल में मुंह ढक के दिन भर का थका प्राणी सोता है, तो उसके दुःख और चिन्ता से बिंधे हृदय को शान्ति देती है । वह नींद जो मनुष्य में एक नई स्फूर्ति भरती है और भोजन के पश्चात् मनुष्य-जीवन की दूसरी प्रमुख रक्षा करने वाली है ।

लेडी मैकबैथ : क्या कहना चाहते हो तुम ? इस सबसे क्या मतलब है तुम्हारा ?

मैकबैथ : अभी तक भी पूरे महल में वही आवाज़ चीखती हुई फिर रही है—अब और अधिक मत सोओ । ग्लेमिस ने नींद की हत्या कर दी है और इसीलिये काउडोर अब और अधिक नहीं सो पायेगा । मैकबैथ अब कभी नहीं सो सकेगा ।

लेडी मैकबैथ : कौन था वह जो कि ऐसे चिल्लाया था श्रेष्ठ थेन ? क्यों तुम इस तरह पागलों की-सी बात बनाकर अपने पौरुष पर धब्बा लगाना चाहते हो । जाओ और पानी लेकर अपने हाथों में लगे इन खून के दागों को धो डालो । पर हैं ! यह क्या ? इन कटारों को तुम उस जगह से क्यों उठा लाये ? इन्हें तो वहीं छोड़ देना चाहिये था । जाओ, जाओ, इन्हें वहीं ले जा कर रख दो और उन सोये हुए पहरदारों को खून के दागों से पूरी तरह सान कर आ जाओ ।

मैकबेथ : नहीं, नहीं, अब मैं वहाँ नहीं जा सकता। ओह ! क्या किया मैंने यह ! सोच कर मेरा हृदय डर से काँप रहा है। मेरा उस तरफ देखने तक का अब साहस नहीं होता।

लेडी मैकबेथ : क्या ? ओ अपने इरादे में इस तरह काँपने वाले आदमी ! दो मुझे इन कटारों को। नोंद की और मौत की साया में सोये पड़े हुए ये सभी आदमी मुर्दा तस्वीरों की तरह हैं। क्या ये किसी तरह का रोड़ा बनकर नुकसान पहुँचा सकते हैं ? शैतान की तस्वीर देखकर तो घुटनों के बल चलने वाला एक बच्चा ही डरता है। मैं जाती हूँ। अगर उस डंकन के शरीर से अभी तक भी गरम खून निकल रहा होगा तो उसी से मैं उन सोये पहरेदारों के चेहरों को रंग दूंगी। इस हत्या का शक व शुभा उन्हीं पर ही होना चाहिये।

[जाती है।]

[अन्दर खटखट की आवाज़]

मैकबेथ : यह खटखट की आवाज़ कहाँ से आ रही है ? ओह ! यह क्या हो गया है मुझे ? हर आवाज़ मुझे डरा रही है।

(अपने खून से रंगे हाथों की ओर देखकर) क्या ? ओह ! कैसे हाथ दिखाई दे रहे हैं ये मेरी आँखों के सामने ? देखो, मेरी आँखों को नोंच-नोंच कर निकाल रहे हैं वे। क्या हुआ यह ! मेरे हाथों से इन दागों को तो समुद्र का सारा पानी भी नहीं मिटा सकेगा। नहीं ! इनसे तो उसका नीला पानी भी एक बार लाल हो जायेगा।

[लेडी मैकबेथ का पुनः प्रवेश]

लेडी मैकबेथ : देखो, मेरे हाथ भी अब तुम्हारे हाथों की तरह ही लाल हैं लेकिन तुम्हारा-सा कायर हृदय हो तो धिक्कार है मुझे।

[अन्दर खटखट की आवाज़]

दक्षिण द्वार पर कुछ खटखट सुनाई दे रही है। बस अब हमें अपने

कमरों में चलना चाहिये। थोड़ा-सा पानी ही हमारे हत्या के सारे अपराध को धो देगा। थोड़ा-सा पानी ही . . . फिर क्या प्रमाण रहेगा। कितना आसान है तब यह ! तुम्हारे स्वभाव में जो दृढ़ता और साहस था वह तो पूरी तरह मर चुका है।

[अन्दर खटखट की आवाज़]

वह सुनो, कोई बराबर दरवाज़ा खटखटाये जा रहा है। अपने कपड़े पहन लो। हो सकता है हमें वहाँ जाना पड़े। जाय तो उस समय यही मालूम होगा कि हम सम्राट् की रक्षा के लिये ही जाग रहे हैं। ठीक है न ? अब इस तरह पागलों की तरह कहीं खोये-खोये न रहो।

मैकबेथ : मुझे याद आ रहा है। अब भी वह खून मेरी आँखों के सामने दीख रहा है। ओह ! कितना अच्छा हो मैं पागल हो जाऊँ।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज़]

जाग जा ओ डंकन ! इस आवाज़ से आँखें खोल ले। ओह ! मैं कितना चाहता हूँ कि अब तू फिर जाग जा।

[जाता है।]

दृश्य ३

[वही स्थान। एक द्वारपाल का प्रवेश]

[अन्दर वही खटखट की आवाज़]

द्वारपाल (Porter) : सचमुच कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है। ओ, चाहे कोई यमपुरी के द्वार का द्वारपाल ही क्यों न हो उसे बार-बार इस दरवाज़ा खोलने में कितना काम करना पड़ता है।

[अन्दर से फिर खटखट की आवाज़]

खटखट, खटखट, क्या है यह खटखट ? यमराज के नाम पर मैं

पूछता हूँ कौन हो तुम ? बताओ । अच्छा तो यह वही किसान है जिसने यह देखकर कि फसल खूब हो रही है और अब उसका जोड़ा हुआ अनाज बहुत सस्ता बिकेगा, अपने गले में फन्दा पहनकर अपने आपको फाँसी दे ली थी ? ओ, ठीक, इस नरक में घुसने के लिये ठीक समय पर आये हो तुम । ठीक है, ठीक है पर हाँ यह तो बताओ, तुम्हारे पास रूमाल तो काफी होंगे ही क्योंकि यहाँ इस नरक में इतना पसीना तुम्हारे शरीर से निकलेगा कि पूरी तरह बहने लग जायेगा ।

[अन्दर फिर खटखट]

फिर खटखट, खटखट । मैं दूसरे शैतान के नाम पर पूछता हूँ कौन हो तुम ? बोलो । ओ, ठीक, ठीक, समझ गया, दुरंगा आदमी; एक ही समय में दो-दो बातें कहने वाला आदमी ! ओ, सच और झूठ दोनों बातों में सौगन्ध खाकर ईमान उठा जाने वाला आदमी । वही जो भगवान की आड़ में खुल कर अनाचार और अत्याचार करता था ? फिर भी इस झूठ और सच से स्वर्ग नहीं जा सका न ? ठीक है, ठीक है, आ जाओ, ओ दुरंगे आदमी यहाँ तुम्हारे लिये जगह है ।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज]

खटखट, खटखट, समझ में नहीं आता फिर यह क्या खटखट है ? कौन हो तुम ? ओ दर्जी ! ठीक है, वही दर्जी हो न तुम जो उस सिलने दिये गये बिरजिस के कपड़े में से कुछ चुरा रहे थे । अन्दर आ जाओ दर्जी ! आओ । यहाँ इस नरक में तुम्हारे लोहे के लिये खूब आग मिलेगी । आ जाओ ।

[अन्दर फिर खटखट]

फिर खटखट, अब भी चैन नहीं। ओह ! आखिर तुम कौन हो ? बोलो ।

पर हाँ, अरे यहाँ तो इतनी ठंड है फिर नरक कैसे हो सकता है यह ? मैं भूल रहा हूँ । नहीं, अब और अधिक इस यमपुरी का द्वारपाल मैं नहीं बनूँगा । मैंने सोचा था कि सभी तरह के पेशेवरों को, जो आसानी से पाप करते रहते हैं, आसानी से ही नरक की उस जलती हुई आग के पास चला जाने दूँ ।

[अन्दर फिर खटखट की आवाज़]

हाँ, हाँ, पर मेरी यह प्रार्थना है कि बेचारे इस द्वारपाल की ओर से नज़र फेर जाना ।

[द्वार खोलता है ।]

[मैकडफ़ और लैनोक्स का प्रवेश]

मैकडफ़ : क्यों ? क्या रात बहुत देर से सोये थे जो अभी तक भी बिस्तरे में पड़े हुए हो ?

द्वारपाल : नहीं, सच मानिये स्वामी ! मुर्गे की दूसरी बाँग तक हम जागते रहे थे ।

मैकडफ़ : क्या तुम्हारे स्वामी यहीं हैं ?

[मैकबेथ का प्रवेश]

अरे, वह तो आ रहे हैं । मालूम होता है हमारे इस तरह बार-बार खटखटाने से उनकी नींद टूट गई है ।

लैनोक्स : अभिवादन करता हूँ श्रेष्ठ !

मैकबेथ : आप दोनों को भी मेरी ओर से अभिवादन है ।

मैकडफ़ : श्रेष्ठ थेन ! क्या सम्राट् जाग गये हैं ?

मैकबेथ : अभी तक तो नहीं जागे मालूम होते हैं ।

मैकडफ़ : उन्होंने तो मुझे इससे पहले ही आने की आज्ञा दी थी पर

मुझे कुछ देर हो गई ।

मैकबेथ : चलो, मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ ।

मैकडफ़ : श्रेष्ठ थेन ! मैं जानता हूँ कि तुम यह सब कुछ खुशी से ही कर रहे हो पर इसमें तुम्हें तकलीफ़ तो अवश्य होगी ।

मैकबेथ : जिस काम को करने में हृदय में खुशी हो उसमें तकलीफ़ कैसी ? देखो, वही दरवाज़ा है ।

मैकडफ़ : वहाँ से मुझे उनको पुकारना चाहिये । क्यों नहीं ? हमें तो इतना अधिकार मिला ही हुआ है ।

[मैकडफ़ जाता है ।]

लैनोक्स : क्या सम्राट यहाँ से आज ही वापिस जायेंगे ?

मैकबेथ : हाँ, इरादा तो उनका यही है ।

लैनोक्स : आज रात कैसी डरावनी थी । मालूम है ? जहाँ हम सो रहे थे वहाँ जलती हुई चिमनियाँ टूट-टूट कर हवा के भोंकों के साथ नीचे गिर पड़ीं और कुछ तो कहते हैं कि हवा की साँय-साँय में कुछ मौत की-सी बड़ी डरावनी चीखें सुनाई देती थीं । ऐसा लगता था मानो कि वे चीखें और भी जोर से पुकार कर कह रही थीं— 'सावधान, बुरा समय आ रहा है।' उल्लू भी रात भर अपनी बुरी भयावनी बोली में बोलता रहा ।

कुछ तो यहाँ तक कहते हैं कि इस सबसे डरकर एक बार तो पृथ्वी भी थर-थर काँप उठी थी ।

मैकबेथ : हाँ, यह रात तो इतनी ही डरावनी थी ।

लैनोक्स : मेरी छोटी-सी याद में तो मैंने ऐसी रात कभी नहीं देखी ।

[मैकडफ़ का पुनः प्रवेश]

मैकडफ़ : ओ, ग़ज़ब ! ग़ज़ब हो गया !! ग़ज़ब हो गया !!!

न तो कुछ मुँह से कहते ही बनता है और न हृदय कभी भी इसकी

कल्पना ही कर सकता था ।

मैकबेथ }
लैनोक्स } क्यों ? क्या हुआ ?

मैकडफ़ : मौत की काली छाया नाच रही है । ओ ! किसी घृणित हत्यारे ने सम्राट का खून कर दिया है !

मैकबेथ : क्या ? क्या कह रहे हो तुम ? खून ? यहाँ ?

लैनोक्स : सम्राट का खून ?

मैकडफ़ : हाँ, जाओ विश्वास न हो तो उस कमरे में जाकर उस भयानक दृश्य को देख लो और अपनी आँखें फाड़ लो । मत कहो मुझसे कुछ कहने के लिये । स्वयं जाकर तुम देखो और समझो ।

[मैकबेथ और लैनोक्स जाते हैं ।]

उठो ! उठो !!

खतरे की घंटी बजा दो । खून ! षड्यन्त्र ! बैंको ! डोनलबेन ! मैलकॉम ! कहाँ हो ? उठो ! मौत की-सी इस गहरी नींद को दूर करो । देखो, यह खून ! हत्या ! उठो ! उठो !! यह देखो प्रलय का अन्तिम दिन आ गया । मैलकॉम ! बैंको ! छोड़ दो अपनी नींद और मौत के इस भयानक दृश्य को देखने के लिये इसी तरह उठे चले आओ जैसे भूत-प्रेत अपनी-अपनी कब्रों से उठ कर चले आते हैं ! बजा दो खतरे की घंटी ।

[घंटी बजती है ।]

लेडी मैकबेथ : क्या हुआ यह ? सभी सोये हुए लोगों को उठाने के लिये यह खतरे की घंटी कैसे बजाई जा रही है ! बोलो, बताओ क्या हुआ ?

मैकडफ़ : ओ देवी ! मत पूछो मुझसे । जो कुछ मैं बताऊँगा वह तुम्हें सुनाने लायक नहीं है । तुम स्त्री हो और स्त्री को ऐसी बात बताना

उसकी हत्या करने के बराबर है देवी !

[बंको का प्रवेश]

ओ बंको ! बंको !!

हमारे स्वामी का किसी नीच हत्यारे ने खून कर डाला है ।

लेडी मैकबेथ : हैं ! क्या कहा ? खून ? हमारे घर में खून ?

बंको : कहीं भी होता उतना ही बुरा होता देवी ! पर नहीं ! मत कहो यह । मेरे प्यारे डफ ! कह दो कि यह सब कुछ भूठ है । नहीं... ।

[मैकबेथ तथा लैनोक्स का पुनः प्रवेश]

मैकबेथ : ओह, क्या अच्छा होता कि ऐसे अभागे समय से एक घंटा पहले ही मैं मर जाता, तो मैं अपनी अन्तिम श्वासों तो सन्तोष के साथ ले सकता । पर क्या है अब ? इसी क्षण से मुझे लगता है कि कोई सत्य नहीं है मनुष्य के इस क्षुद्र जीवन में । उसका यह सब अहंकार मिट्टी के खिलौनों का-सा खेल है । क्या यश और गौरव अभी भी जीवित है ? नहीं ! ज़िन्दगी की शराब लुट चुकी है और इस आसमान के नीचे खोखली दुनिया में अब सिर्फ गन्दगी और कीचड़ बच रही है ।

[मैलकॉम तथा डोनलबेन का प्रवेश]

डोनलबेन : क्या हुआ यह ?

मैकबेथ : तुम यहाँ हो और तुम्हें अभी कुछ पता ही नहीं ? ओ डोनलबेन ! वही सोता जो तुम्हारे जीवन-लता को पानी दे कर सींचा करता था आज हमेशा-हमेशा के लिये सूख गया है । तुम्हारे जीवन का आधार मिट गया है ।

मैकडफ़ : किसी हत्यारे ने तुम्हारे पिता सम्राट का खून कर डाला है ।

मैलकॉम : हैं, क्या कहा ? किसने किया है यह सब ?

लैनोक्स : मालूम तो यही होता है कि उनके शयनागार के पहरेदारों ने

ही यह काम किया है। उनके हाथ और चेहरे सब खून से रंगे हुए थे और इसी तरह उनकी कटारें भी मानों खून में डूबी हुई थीं। जब हमने उनके तकियों की तरफ देखा तब हमें खून से लिथड़ी वहाँ पड़ी हुई मिली। हमारे वहाँ पहुँचते ही उन्होंने एक बार हमारी तरफ देखा और देख कर वे एक साथ कुछ घबरा-से गये। मुझे तो उन्हें देखकर ऐसा लगता था कि उनके बीच में तो हर किसी की जान को खतरा हो सकता था।

मैकबैथ : पर ओह ! मैं अपने उस भावावेश के लिये कितना पछताता हूँ जिसने मुझसे उनका यह खून करवा दिया।

मैकडफ़ : तुमने ? पर ऐसा किया क्यों तुमने ?

मैकबैथ : किया क्यों ? तो फिर तुम्हीं बताओ कि इस संसार में कौन ऐसा है जो ऐसे समय में शान्ति, धैर्य और बुद्धिमानी से काम ले सकता है जब क्रोध की आग उसके हृदय में जल रही हो ? क्या एक वफ़ादार आदमी इस तरह अपने स्वामी की हत्या का यह दृश्य देख कर अपने आपको बस में रख सकता था ? नहीं, कोई नहीं। मेरे सम्राट के प्रति मेरे असीम प्रेम ने मेरी सारी बुद्धि पर परदा डाल दिया। मैंने देखा कि एक तरफ़ चाँदी की-सी देह वाला यह डंकन पड़ा हुआ था और उस देह पर हुए घावों को देखकर तो मुझे लगा कि यम के दूतों के घुसने के लिये किसी ने ये द्वार बना दिये हैं। फिर ठीक दूसरी ओर मैंने देखा कि खून से भीगे हुए ये हत्यारे थे। उनकी कटारें पूरी तरह खून से सनी हुई थीं। फिर तुम्हीं बताओ कि जिसके हृदय में सम्राट के प्रति निर्भीक प्रेम है वह कैसे अपने आपको ऐसे अवसर पर बस में रख सकता था।

लेडी मैकबैथ : ओह ! नहीं। नहीं !! ले चलो मुझे यहाँ से। मुझे दूर ले चलो।

मैकडफ़ : (सेवक से) इस देवी के पास रहो ।

मैलकॉम : हमारे मुँह क्यों बन्द हैं डोनलबेन ! जबकि हमारे पिता का जीवन हमसे ही सबसे अधिक सम्बन्धित है ?

डोनलबेन : (मैलकॉम से) क्या बोलें हम यहाँ भाई ! जहाँ इसका डर है कि किसी कोने में छिपा हमारा दुर्भाग्य निकल कर कहीं हमें ग्रस न ले । चलो, यहाँ से कहीं दूर भाग चलें । अभी हमारा आँसू बहाने का समय यहाँ नहीं है ।

मैलकॉम : (डोनलबेन से) और न अभी कोई ऐसा कार्य करने का समय है जिससे हम हमारे गहरे दुःख को प्रगट कर सकें ।

बैंको : इस देवी की देखभाल करना ।

[लिडी मैकबेथ बाहर लाई जाती है ।]

अब ठण्डी हवा से बचने के लिये सभी अपने-अपने कपड़े पहन लो और आओ फिर मिल कर इस षड्यन्त्र का आगे तक कुछ पता लगायें । हमारे हृदय का डर और सन्देह हमारे कदमों को आगे बढ़ने से रोकता है । मैं उस परमात्मा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि उन घृणित हत्यारों के छिपे हुए सारे षड्यन्त्र को खोज निकालूंगा ।

मैकडफ़ : यही मैं करूँगा ।

सभी : हम सब भी ऐसा ही करेंगे ।

मैकडफ़ : तो बस अब शीघ्रता से अपने-अपने कपड़े पहन लो और चलो सब लोग उस बड़े कमरे में इकट्ठे हो कर कुछ योजना बनायें ।

सभी : स्वीकार है ।

[मैलकॉम और डोनलबेन को छोड़कर सभी चले जाते हैं ।]

मैलकॉम : क्या करोगे अब तुम, बताओ मैं सोचता हूँ हमें अब उन-के बीच में नहीं रहना चाहिये । बनावटी आँसू तो अपनी आँखों से

वही आदमी आसानी से गिरा सकता है जो झूठा होता है। मैं तो अब इङ्गलैंड चला जाऊँगा।

डोनलबेन : तो मैं आयरलैंड चला जाऊँगा। हमारी सुरक्षा के लिये यही अच्छा है कि हम एक दूसरे के पास न रहें और अपने दोनों के भाग्यों को अलग-अलग राहों से चलने दें। इसी जगह जहाँ अब हम हैं मुझे लगता है कि मनुष्य की मुस्कराहट में कटारें छिपी हुई हैं। यहाँ जिससे जितना निकट खून का सम्बन्ध है वह उतना ही खून का प्यासा है।

मैलकॉम : और फिर हत्या के लिये छोड़ा हुआ तीर अभी अपने ठीक निशाने पर जा कर नहीं लगा है। हमारे लिये सबसे अच्छा इसी में है डोनलबेन ! कि इस तीर के निशाने से बचें। इसलिये चलो, अपना-अपना घोड़ा लें और शीघ्र यहाँ से भाग चलें। बस अब एक दूसरे से संकोच करने में समय न बितायें। जानते हो, जहाँ से दया का नामो-निशान पूरी तरह उठ गया हो और चारों ओर खतरा ही खतरा दिखाई दे वहाँ से चुपचाप भाग जाना ही अच्छा है।

[जाते हैं।]

दृश्य ४

[मंकबंध के महल के बाहर]

[रौस तथा एक वृद्ध पुरुष का प्रवेश]

वृद्ध : अपने जीवन के सत्तर बरस मैंने गुज़ारे हैं और इस बीच न जाने कितनी अजीब भयानक से भयानक घटनाएँ देखीं पर इस डरावनी रात को देखकर तो मुझे अपना वह सारा अनुभव कुछ फीका-सा लगता है।

रौस : ओह ! मेरे अच्छे पिता ! क्या आप नहीं देखते कि जहाँ मनुष्य

ऐसे पाप करने लग जाते हैं वहाँ आकाश भी मन में क्रुद्ध होकर खून से सनी इस पृथ्वी को डराने लगता है। घड़ी में देखिये, दिन निकल आया है पर रात का वह अन्धकार सूर्य की किरणों को आकाश में ही रोके हुए है। क्या है यह ? इस समय जब सूर्य की उन जीवनदायिनी किरणों को आकर पृथ्वी को चूमना चाहिये था उस समय चारों ओर यह रात का अन्धकार कैसा ? मुझे तो लगता है कि मनुष्य के इन घृणित पापों को शरम के मारे सूर्य देखने का साहस नहीं कर रहा है।

वृद्ध : जैसी घटना आज घटी है वैसी कभी न तो सुनी और न देखी। मालूम है, पिछले मंगलवार को ही एक बाज़ गर्व में भर कर आकाश में उड़ रहा था तो छोटी-छोटी चुहिया मारने वाले एक उल्लू ने उसका पीछा किया और उसे मार गिराया ?

रौस : और डंकन के घोड़े कितने सुन्दर और विश्वास के साथ दौड़ने वाले हैं। सभी अच्छी नस्ल के हैं पर सच मानिये, कैसी विचित्र-सी बात है वे सभी पागल हो गये हैं। उन्होंने अपनी लगाम वगैरह सब बन्धन तोड़ डाले हैं। ऐसा मालूम होता है कि पूरी मनुष्य-जाति के विरुद्ध विद्रोह करने पर वे तुल पड़े हैं। कितनी भी रोकने की कोशिश करने पर रुकते ही नहीं।

वृद्ध : कोई कह रहा था कि वे एक दूसरे का मांस नोंच-नोंच कर ही आपस में इस तरह एक दूसरे को खा गये।

रौस : ठीक यही बात है। जब मैंने देखा तो मुझे भी आश्चर्य होने लगा। लो श्रेष्ठ मैकडफ़ आ रहे हैं।

[मैकडफ़ का प्रवेश]

क्यों, अब क्या स्थिति है श्रीमान् ?

मैकडफ़ : क्या तुम्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा ?

रौस : हाँ, पर क्या कुछ पता लगा कि किस कमीने ने यह घोर पाप किया है।

मैकडफ़ : उन्हीं द्वारपालों ने जिन्हें मैकबैथ ने मार डाला है।

रौस : हाय ! अभागे दिन ! ऐसा करने में उन द्वारपालों को क्या मिलता ?

मैकडफ़ : उन्हें तो किसी ने इस काम के लिये किराये पर रखा मालूम होता है। कुछ सुना ? सम्राट् के दोनों पुत्र मैलकॉम और डोनल-बेन न जाने छिपकर कहाँ भाग गये हैं, इसी से इस हत्या का शुभा उन्हीं पर जाता है।

रौस : यह भी कैसी अजीब-सी बात है। ओ, उनकी वह अन्धी और मतवाली महत्वाकांक्षा उन माँ-बाप को भी खा गई जिन्होंने इस संसार में जन्म दिया और पाल-पोस कर बड़ा किया है।

तब तो अधिक सम्भव यही है कि मैकबैथ ही अब सम्राट् बनेंगे।

मैकडफ़ : हाँ, हाँ, उन्हीं का नाम तो सबसे पहले लिया ही गया था। अब राज्याभिषेक के लिये ही वे 'स्कोन' गये हुए हैं।

रौस : डंकन का मृत शरीर कहाँ दफ़नाया गया है ?

मैकडफ़ : वहीं 'कॉमेकिल' में जो उनके पूर्वजों के समय से ही राज-परिवार का पवित्र श्मशान है। वहीं उनकी अस्थियाँ सुरक्षित रखी जाती हैं।

रौस : क्या तुम 'स्कोन' जाओगे ?

मैकडफ़ : नहीं भाई ! मैं तो फाइफ़ जाऊँगा।

रौस : अच्छा तो मैं 'स्कोन' जाता हूँ।

मैकडफ़ : मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है, सब काम अमन-चैन से वहाँ पूरा हो जाय जिससे मैकबैथ का राज्याभिषेक भी डंकन के राज्या-

भिषेक की तरह शान्तिपूर्ण ढंग से हो जाय ।

अच्छा, अलविदा !

रौस : अलविदा ! अलविदा पिता जी !

बृद्ध : परमात्मा सदा तुम्हारे ऊपर दयालु रहे और उन सब पर भी उसकी कृपा रहे जो बुराई को भी भलाई के रूप में बदल लेते हैं और अपने शत्रु को भी मित्र बनाकर गले लगा लेते हैं ।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[फौरेस । राजमहल । बेंको का प्रवेश]

बेंको (स्वगत) जो भी उन डाइनों ने भविष्यवाणी की थी वह सब तुम्हें मिल गया मैकबेथ ! काउडोर के थेन, ग्लेमिस के थेन, यहाँ तक कि सम्राट् भी अब तुम बन गये हो पर मुझे सन्देह है कि यह सफलता पाने के लिये अवश्य तुमने कुछ विश्वासघात किया है । पर हाँ, आगे उन डाइन बहनों ने यह भी कहा था कि तुम्हारी संतान राज्य-सिंहासन पर नहीं बैठ पायेगी । मैं वह बाप हूँगा जिसके पुत्र आगे चलकर सम्राट् होंगे । मैं उनकी जड़ हूँगा । अगर वे डाइनों सच्ची हैं और जैसे तुम्हारे जीवन में उनकी बातें सच्ची फली हैं वैसे तुम्हारी मनोकामनाओं को पूरा होता देख कर क्या मैं यह आशा न करूँ कि मेरे जीवन में भी वे बातें सच्ची फलेंगी ?

[तुरही बजती है । सम्राट् के रूप में मैकबेथ का और साम्राज्ञी के रूप में लेडी मैकबेथ का प्रवेश । लैनोक्स, रॉस, अन्य सरदार, भद्र महिलाएँ तथा कुछ सेवक साथ में ।]

मैकबेथ : ये हैं हमारे सम्माननीय अतिथि !

लेडी मैकबेथ : हाँ, ऐसे शुभ अवसर पर इन्हें भूल जाना तो बहुत ही अनुचित होगा । हमारी दावत में एक बहुत बड़ी कमी रह जायेगी ।

मैकबेथ : बेंको ! आज रात को हमारे यहाँ शाही दावत है । हम उसमें तुम्हारी उपस्थिति के लिये प्रार्थना करते हैं ।

बेंको : अवश्य, सम्राट् जो भी आज्ञा देंगे उसको पूरा करने के लिये

हमेशा मेरी सेवायें उपस्थित हैं। कभी भी इस जीवन में वह सेवा-भाव कम नहीं हो सकता।

मैकबैथ : क्या आज शाम को तुम घुड़सवारी करने जाओगे ?

बैंको : हाँ, अवश्य, मेरे स्वामी !

मैकबैथ : अच्छा, खैर ! यदि तुम वहाँ नहीं जाते हुए होते तो हम तुमसे कुछ अच्छी सलाह लेते जो हमारे विचार से आज की सभा के लिये बड़ी गम्भीर और कीमती सिद्ध होती। पर, खैर, अब कल बातें करेंगे। क्या तुम घुड़सवारी करते हुए दूर तक निकल जाओगे ?

बैंको : हाँ स्वामी ! दावत के निश्चित समय के पहले जितनी भी दूर जा सका उतनी ही जाऊँगा। पर यदि मेरा घोड़ा तेज़ी से नहीं गया तो हो सकता है रात के एक या दो घंटे मुझे और लग जायँ।

मैकबैथ : हाँ, लेकिन हमारी दावत में तुम्हें अवश्य शामिल होना है।

बैंको : किसी हालत में भी मैं दावत से अनुपस्थित नहीं रह सकता स्वामी !

मैकबैथ : कुछ सुना है ? मेरे कानों तक यह खबर मिली है कि हमारे भाई कहलाने वाले वे हत्यारे इङ्गलैंड और आयरलैंड में जाकर बस गये हैं और वहाँ वे अजीब तरह की भूठी बातें लोगों के बीच फैला रहे हैं। मुझे दुःख होता है कि अपने बाप की निर्दयतापूर्ण ढंग से की गई हत्या को उन्होंने आज तक स्वीकार नहीं किया है। खैर, कल हम बैठ कर इस विषय में बातें करेंगे। उसी समय राज्य की और-और समस्याओं पर दोनों मिल कर सोचेंगे। तो अब जाओ। अपना घोड़ा लो और सवार हो कर चल दो। बस, रात को जब तक वापिस आओ तब तक के लिये विदा ! सुनो, क्या फ्लीन्स भी तुम्हारे साथ जायेगा ?

बैंको : हाँ स्वामी ! अच्छा, अब हमारे जाने का समय हो गया, आज्ञा दीजिये ।

मैकबैथ : मेरी यही हार्दिक कामना है कि तुम्हारे घोड़े तेजी से बराबर भागते हुए तुम्हें ले जायँ ! इसीलिये मेरी अब यही आज्ञा है कि जाकर उनकी पीठ पर चढ़ जाओ ।

[बैंको जाता है ।]

रात के सात बजे तक जिसके जो जी में आये वही करे । आने वाले अतिथियों का अत्यधिक मधुरता से स्वागत करने के लिये हम दावत के समय तक अकेले ही रहेंगे ।

तब तक ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें !

[मैकबैथ तथा एक सेवक को छोड़कर सभी चले जाते हैं ।]

(सेवक से) सुनो, एक बात तुमसे कहनी है । क्या वे लोग अभी तक हमारी आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़े हैं ?

सेवक : हाँ स्वामी ! वे राजमहल के दरवाजे के बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

मैकबैथ : उन्हें हमारे सामने लाकर उपस्थित करो ।

[सेवक जाता है ।]

(स्वगत) जब तक सब तरह के भय से निश्चिन्त होकर मैं राज्य का सुख न भोग सकूँ तो मेरे सम्राट होने का क्या तात्पर्य है ? बैंको का डर मेरे हृदय में गहरी जड़ जमाये हुए है और फिर उसके राजसी स्वभाव में अवश्य कोई ऐसी बात है जिससे डर के मारे हृदय काँपने लगता है । कौन-सा ऐसा काम है इस संसार में जिसके करने का साहस उसमें न हो । इस साहस और निर्भीकता के साथ-साथ उसकी बुद्धि भी उतनी ही तीव्र है जो उसके साहस-भरे कार्यों को सही रास्ता दिखाती रहती है । उसके सिवाय मुझे इस पुरे

संसार में कोई भी ऐसा नहीं दिखाई देता जिससे मेरा हृदय डर कर काँपे। जब वह सामने रहता है तो मेरे गौरव का प्रकाश कुछ इस तरह दब-सा जाता है जैसे कहते हैं 'सीज़र' के सामने 'मार्क-ऐंटोनी' का दब जाता था। उसी समय जब उन डाइनों ने मेरे सम्राट होने की भविष्यवाणी की थी उसने उन्हें धिक्कारा था और कहा था : 'ओ डाइनो ! मुझसे भी कुछ कहो।' तब स्वयं देवदूतों की तरह ही उन सभी ने उसे सम्राटों का पिता कह कर पुकारा था। मेरे सिर पर जो यह राजमुकुट उन्होंने रखा है, मेरे बाद मेरी सन्तान उसे नहीं पहन पायेगी। मेरा कोई उत्तराधिकारी अपने हाथों में यह राजदण्ड न पकड़ सकेगा। दूसरे लोग मुझसे यह छीन लेंगे क्योंकि मेरा तो कोई पुत्र सम्राट नहीं बन सकता। यदि मेरे इस क्रूर भाग्य ने यही निश्चय किया है तो क्या बैंको के पुत्रों के ऐश्वर्य के लिये ही मैंने यह सब पाप किया है ? क्या उन्हीं के लिये मैंने अपने हृदय की सारी शान्ति खो कर इसमें इतनी कटुता और हाहाकार भर लिया है ? ओह ! अगर मेरे बाद वे ही सम्राट होंगे तो क्या उन्हीं के लिये मैंने अपनी इस आत्मा को शैतान के हाथों बेचा है ? नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं मरते दम तक अपने इस क्रूर भाग्य से लड़ूँगा और ऐसा कभी नहीं होने दूँगा। कभी नहीं होने दूँगा।

(चौककर) कौन ?

[दो हत्यारों को लेकर सेवकों का पुनः प्रवेश]

(सेवक से) ठीक है, बस अब जाकर द्वार पर खड़े हो जाओ और जब तक हम न पुकारें तब तक वहाँ से नहीं हटना।

[सेवक जाता है।]

हाँ, तो कल ही हमने बातें की थीं न ?

पहला हत्यारा : हाँ, महाराज !

मैकबैथ : तो फिर क्या सोचा तुमने हमारी बातों पर ? जानते हो यह वही बैंको है जिसने न जाने कब से तुम्हारे भाग्यों को कुचल रखा है और तुम समझते थे कि यह सब हम ही करते हैं जब कि तुम लोगों के प्रति, सच कहते हैं, हम बिल्कुल निर्दोष हैं ? पहली बार बातें करते हुए ही हमने सबूत देकर तुम्हें यह बता दिया था कि तुम्हारे साथ कैसा धोखा हुआ है, किस तरह तुम्हारी मासूम तमन्नाओं को पैरों तले रौंदा गया है। जो कुछ भी चाल तुम्हें बरबाद करने के लिये खेली गई है और जिन्होंने भी खेली है उससे पागलों की तरह फिरने वाला मूर्ख भी यह समझ सकता है कि बैंको के सिवाय किसी और का यह काम नहीं है।

पहला हत्यारा : हाँ महाराज ! आपने ये सभी बातें हमें साफ़-साफ़ बताई थीं।

मैकबैथ : हाँ हमने सब कुछ तुम लोगों को पूरी तरह बता दिया था। उस दिन तो हमने आगे तक तुम्हारी आँखों से परदा हटा दिया था। आज की हमारी बातचीत का वही विषय होगा। अब बताओ, क्या अब भी तुम्हारा खून इतना ठंडा है कि तुम बैंको से बिना कुछ बदला लिये चुपचाप यह सब सहते हुए चले जाओ ? बोलो, क्या तुम उस ईसा के इतने कट्टर अनुयायी हो कि जिस आदमी ने अपने अत्याचारों से तुम्हें धूल में मिला दिया और तुम्हारे मासूम बच्चों को दर-दर का भिखारी बना दिया उसी के लिये और उसके बच्चों के ऐश्वर्य और सुख के लिये तुम ईश्वर से प्रार्थना करो ?

पहला हत्यारा : नहीं आखिर हम भी तो मनुष्य हैं महाराज !

मैकबैथ : नहीं, हम जानते हैं तुम कैसे मनुष्य हो। जैसे हाउन्ड, ग्रेहाउन्ड,

मौंग्रल, स्पेनील, कर, स्लॉ, वाटर ऐस, डेमी वुल्वज ये सभी कुत्ते ही होते हैं न, क्या तुम उसी तरह एक मनुष्य नहीं हो ? इन कुत्तों के अलग-अलग गुण हैं इसलिये इनका अलग-अलग नाम है; जैसे कोई तेज दौड़ने वाला होता, तो कोई सुस्त और समझदार, कोई शिकारी और कोई घर का बफ़ादार होता है। अपने अलग-अलग गुणों के अनुसार ही तो प्रकृति ने उन्हें अलग-अलग जाति में रखा है। वही बात मनुष्य के साथ है। हमें बताओ, क्या इतनी बड़ी मनुष्य-जाति में तुम्हारा स्थान केवल अधम और नीचों में ही है ? बोलो (जवाब दो हमें)। नहीं ! ... तो सुनो, हम तुम्हारे हाथों में वह काम सौंप रहे हैं जिसको करने से तुम अपने उस शत्रु को इस ज़मीन की धूल में मिला सकते हो और फिर जानते हो ? हम तुम्हें अपना प्यारे से प्यारा दोस्त समझेंगे क्योंकि यह समझ लो जब तक यह बेंको जीवित रहेगा तब तक ही हमारा भाग्य द्विविधा में है। जिस दिन वह इस संसार से उठ जायेगा वही हमारे पूर्ण सुख के जीवन का पहला दिन होगा।

दूसरा हत्यारा : महाराज, मैं वह एक दुःखी आदमी हूँ जिसको इस नीच दुनिया के क्रूर थपेड़ों ने घायल कर डाला है। मेरा खून खौल रहा है महाराज ! मैं इस दुनिया से अपने ऊपर किये इन जुल्मों का बदला लेने के लिये कुछ भी कर सकता हूँ।

पहला हत्यारा : और मुझे भी इस दुनिया ने पल-पल पर ठोकर दी है महाराज ! अपने इस क्रूर भाग्य से और इस नीच दुनिया से लड़ते-लड़ते मैं इतना अधीर हो गया हूँ कि अब इसके विरुद्ध कुछ भी करने के लिये अपनी ज़िन्दगी तक का दाँव लगा सकता हूँ। इससे चाहे मेरी ज़िन्दगी बने या मैं बरबाद हो जाऊँ मुझे इसका कोई डर नहीं महाराज !

मैकबेथ : ठीक है, अब तुम दोनों जानते हो न कि बैको तुम्हारा दुश्मन है ?

दूसरा हत्यारा : हाँ महाराज ! हम अच्छी तरह समझते हैं ।

मैकबेथ : इसी तरह हमारी जान का भी वह कट्टर दुश्मन है । हम एक पल भी उसके पास रहते हैं तो हमें अपने हृदय में बराबर खतरा बना रहता है । हाँ, यह जरूर है कि चाहें तो हम अपनी खुली ताकत से उसे अपने रास्ते से अलग हटा सकते हैं और हमारे खिलाफ किसी को आवाज़ उठाने की भी हिम्मत नहीं है पर फिर भी हम ऐसा करना नहीं चाहते क्योंकि तुम जानते हो कि कुछ ऐसे लोग हमारे साथी हैं जो उसके भी मित्र हैं, फिर अगर हम अपने हाथों से यह करेंगे तो वे सब हमारा साथ छोड़ देंगे । वह हम नहीं चाहते । और फिर अगर हम अपने हाथों से उसका खून करेंगे तो हमें इसके ऊपर कुदरतन अफसोस भी होगा । इसी लिये हम यह काम तुम्हारे हाथों में सौंपते हुए तुम्हारी मदद चाहते हैं क्योंकि बहुत-से ऐसे खास कारण हैं जिनसे यह बात अभी आम जनता के कानों तक नहीं पहुँचनी चाहिये ।

दूसरा हत्यारा : अवश्य महाराज ! जैसी भी आज्ञा आप देंगे उसे हम पूरा करेंगे ।

पहला हत्यारा : चाहे हमारी जान क्यों न चली जाय ।

मैकबेथ : ठीक है, हम देख रहे हैं । तुम्हारा जोश तुम्हारी आँखों में होकर पूरी तरह चमक रहा है । अधिक से अधिक इसी एक घंटे के अन्दर ही हम तुम्हें बतायेंगे कि तुम्हें कहाँ छिपना है और वह कहाँ से आयेगा, कहाँ जायेगा इसके बारे में पूरा बताकर यह भी बतायेंगे कि किस समय तुम्हें यह काम करना है । क्योंकि यह समझ लो कि सूरज के भाँक कर देखने से पहले ही तुम्हें यह काम

पूरा करना है। और सुनो, यह सब काम राजमहल से कुछ दूरी पर होना चाहिये जिससे हमारे ऊपर इसका कुछ भी शक-शुभा भी न जाय और हमारी आँखों से वह काँटा भी हमेशा के लिये दूर हो जाय।

फिर, हाँ, उसका पुत्र फलीन्स भी तो उसके साथ आयेगा। काम बिल्कुल पूरा तभी होगा जब उसके साथ-साथ उसके पुत्र को भी तुम इस संसार से हमेशा के लिये विदा कर दो क्योंकि वह भी हमारी आँख का दूसरा उतना ही बड़ा काँटा है।

दूसरा हत्यारा : जो आज्ञा महाराज ! हम उसके लिये भी पूरी तरह तैयार हैं।

मैकबेथ : बस, थोड़ी ही देर में हम तुमसे मिलेंगे। कुछ ही क्षणों के बाद। उस समय तक अन्दर ही रहना।

[हत्यारे जाते हैं।]

हो गया फैसला। ओ बेंको ! हो गया तुम्हारी ज़िन्दगी का फैसला। अगर तुम्हें इस दुनिया से एक दिन जाना है तो इसी रात को जाना होगा... इसी रात को।

[जाता है।]

दृश्य २

[राजमहल का दूसरा कमरा]

[लेडी मैकबेथ का एक सेवक के साथ प्रवेश]

लेडी मैकबेथ : क्यों, क्या बेंको राजदरबार से चला गया ?

सेवक : जी हाँ महारानी ! लेकिन वे तो आज रात को ही वापस आ जायेंगे।

लेडी मैकबेथ : अच्छा, अभी जाकर सम्राट से कह दो कि मैं कुछ समय

उनसे बातें करना चाहती हूँ ।

सेवक : जो आज्ञा महारानी !

[सेवक जाता है।]

लेडी मकबंथ : कैसा है यह जीवन ? संसार का यह प्राणी किसी वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा में क्या-क्या करता है, और उसे प्राप्त करता है फिर भी उसे उससे किसी तरह सुख और शान्ति नहीं मिलती तब क्या वह न पाने के बराबर नहीं है ? फिर क्यों मनुष्य जीवन की अच्छी-अच्छी बातों को ठुकरा देता है ? क्या मिलता है उसे ? दूसरों की हत्या करके इस तरह सदा दुःख और चिन्ता में घुलते रहने से तो स्वयं मर जाना अच्छा है ।

ओह !

[मकबंथ का प्रवेश]

कहिये, कैसे हैं मेरे स्वामी ! आप अब ? क्यों आप अपने हृदय पर इन दुःख और चिन्ता के शूलों को लादे अलग-अलग ही रहते हैं ? जो मर चुके हैं उनके साथ ही उनके विचार, उनकी सारी चिन्ता, सब कुछ मर जाना चाहिये मेरे स्वामी ! फिर क्यों आप उन्हीं विचारों में अभी तक डूबे हुए हो । जिस बात का कोई इलाज ही न हो उस पर क्या कभी सोचना चाहिये ? छोड़ो, जो कुछ हो गया वह हो गया, अब क्या वह किसी तरह सोचने-विचारने से बदल सकता है ?

मकबंथ : नहीं प्रिये ! अभी साँप मरा नहीं है, वह घायल हो कर ही छूट गया है । मत भूलो, वह ठीक हो कर फिर उतना ही ज़हरीला हो जायेगा । वही उसका ज़हरीला दाँत मुझे डरा रहा है प्रिये ! उसे पूरी तरह मारने का हमारा सारा प्रयत्न असफल ही गया । ओह, इससे पहले कि हमारे मुँह में कौर देते समय भी हमारे हाथ

डर से काँपे और रात में सोते समय डरावने सपने आकर हमारी नींद में हाहाकार मचा कर हमें बेचैन करें काश ! इस संसार में आग लग जाये, इसके टुकड़े-टुकड़े होकर चारों तरफ बिखर जायँ। क्या है हमारा जीवन ? इस तरह हर समय चिन्ता में घुलने और बेचैन रहने से तो अच्छा है कि हम भी उन्हीं कब्रों में जाकर शान्ति से सो जाँय जहाँ औरों को हमने इस जीवन के हाहाकार से मुक्त कर के भेज दिया है। क्या देखती नहीं प्रिये ! डंकन अपने इस छोटे-से जीवन के दुःखदायी कोलाहल के बाद कितनी चैन की नींद उस कब्र में सोया हुआ है ? ओह ! मुझे बताओ, क्या लाभ हुआ इस षड्यन्त्र से ? क्या मिला हमें ? प्रिये तुम्हीं बताओ जहाँ पर वह डंकन अब चैन की नींद सोया हुआ है वहाँ क्या कोई हथियार, या जहर, या कोई षड्यन्त्र, या बाहरी आक्रमण कुछ भी उसका बुरा कर सकता है ? फिर इससे भी बुरा और क्या होगा ?

ओह इससे भी बुरा क्या होगा ?

लेडी मैकबेथ : छोड़िये यह सब कुछ मेरे स्वामी ! आइये, अपना यह उदास चेहरा धो डालिये। रात में दावत के समय आने वाले महमानों के सामने क्या प्रसन्नचित्त नहीं होइयेगा ?

मैकबेथ : ठीक है, यही करूँगा प्रिये ! तुम भी ऐसा ही करना। देखो, बातचीत और आवभगत में बैंको का विशेष ख्याल रखना। अभी हम पूरी तरह सुरक्षित नहीं हैं। सबसे मीठी-मीठी चापलूसी की-सी बातें करके हमें कलङ्क के उन सभी दागों को मिटाना है जो सम्राट के नाम पर लगे हुए हैं। अपने चेहरों को अपने दिलों का परदा बना लो और जो कुछ अन्दर छिपा हुआ है उसे अपने चेहरों के द्वारा दूसरों को मत देखने दो।

लेडी मैकबैथ : हाँ, हाँ, यह क्या हो गया है तुम्हें ? यह सब चिन्ता अपने मस्तिष्क से निकाल दो ।

मैकबैथ : मैं क्या बताऊँ प्रिये ! मेरे मस्तिष्क को कोई अन्दर ही अन्दर नोच रहा है । तुम नहीं जानती कि वह बैको और उसका पुत्र फलीन्स मेरे रास्ते में कितने बड़े रोड़े बनने के लिये अभी तक इस संसार में ज़िन्दा हैं ।

लेडी मैकबैथ : लेकिन, क्या हुआ इससे, वे भी तो आखिर इस संसार के हो प्राणी हैं किसी तरह अमर तो हैं नहीं । फिर ?

मैकबैथ : ओह प्रिये ! कितना अच्छा विचार है तुम्हारा । मुझे इससे सन्तोष मिला है । ठीक है, वे भी इस संसार के ही प्राणी हैं । वे भी मर सकते हैं । वे भी मर सकते हैं

तो फिर खुशियाँ मनाओ प्रिये ! राजमहल में चमगादड़ के उड़ने से पहले ही और इससे पहले कि गोबरीला भन्न-भन्न करके सोते लोगों को यह कहकर जगाये कि उठो, उठो, डाइन हिकेट तुम्हें बुला रही है और उससे वे नींद में ही जम्हाइयाँ लेने लगे एक डरावनी घटना घटेगी और वह भी काम पूरा हो जायेगा प्रिये !

लेडी मैकबैथ : कौन-सा काम स्वामी ?

मैकबैथ : मुझे मत कहलवाओ प्रिये ! जो कुछ होने जा रहा है उसे पहले हो जाने दो उसके बाद मैं चाहता हूँ तुम्हें उसका पता लगे जिससे तुम मेरी बुद्धि की प्रशंसा तो कर सको । बस अब तो आ, ओ काली रात ! आ और दयनीय अवस्था में तड़पते इस दिन की आँखें बन्द कर ले । अपने काले उन खून से सने हुए हाथों से मेरी सारी चिन्ता और दुःख को मसल कर चूर कर दे ।

वह देखो, दिन ढल रहा है, और अँधेरा अपनी काली छाया इस संसार पर डाल रहा है । इधर कौवे जंगल की ओर उड़ते हुए अपने

अपने घरों की ओर वापिस जा रहे हैं। दिन भर के थके-माँदे प्राणी सोने की तैय्यारी कर रहे हैं और उधर रात के शिकारी पशु-पक्षी अपने भोजन की तलाश में निकल पड़े हैं।

क्यों ? तुम मेरी बातों से इस तरह चौंक क्यों रही हो ? ठहरो, कुछ समय और थोड़ा धैर्य रखो। क्या जानती नहीं कि शैतानी से पाई हुई कामयाबी उसी तरह शैतानी से ही मजबूत बनाई जा सकती है ? इसलिये आओ, मेरे साथ चलो।

[जाते हैं।]

दृश्य ३

[राजमहल के पास एक उपवन। तीन हत्यारों का प्रवेश]

पहला हत्यारा : लेकिन हमारे साथ चलने की आज्ञा किसने दी तुम्हें ?

तीसरा हत्यारा : मैकबैथ ने।

दूसरा हत्यारा : हमें अब उस पर किसी तरह अविश्वास नहीं करना चाहिये। सच, वह उसी काम को करने के लिये हमसे कह रहा है जिसमें हमारा भला है।

पहला हत्यारा : तो फिर तुम हमारे साथ रहो। देखो, पश्चिम दिशा में अब भी कुछ धुंधला-सा प्रकाश बाकी है। देर से आने वाले मुसाफिरों को अपनी सराय तक पहुँचने के लिये अब भी कुछ समय है। सुनो, अब तो वह, जिसके ऊपर हमारी नज़रें लगी हुई हैं, नजदीक आ ही रहा होगा।

तीसरा हत्यारा : वह सुनो, कुछ घोड़ों की टापें सुनाई दे रही हैं।

बैंको : (अन्धर से) अरे सुनो। इस अँधेरे में जाने के लिये हमें कुछ रोशनी दो।

दूसरा हत्यारा : ओ ! यह तो वही है। और जितने भी महमान दावत में

आने वाले थे पहले ही राजमहल में पहुँच चुके हैं ।

पहला हत्यारा : उनके घोड़े तो बड़े रास्ते से निकलकर जायेंगे न ?

तीसरा हत्यारा : करीब एक मील दूर होगा यहाँ से वह रास्ता लेकिन
अक्सर तो और लोगों की तरह वह इधर से ही पैदल घूमता हुआ
राजमहल तक जाया करता है ।

[बंको तथा फ्लीन्स एक मशाल लिये हुए आते हैं ।]

दूसरा हत्यारा : वह देखो, रोशनी ।

तीसरा हत्यारा : हाँ, ठीक वही है यह तो ।

पहला हत्यारा : तो फिर ठीक है हम यहीं खड़े हो जायें ।

बंको : फ्लीन्स ! आज रात तो ऐसा लगता है पानी बरसेगा ।

पहला हत्यारा : तो आने दे तुम्हें क्या अब ?

[वे सभी बंको पर झपटते हैं ।]

बंको : ओ, षड्यन्त्र ! धोखा !! भाग जाओ फ्लीन्स ! भाग जाओ !

फौरन भाग जाओ मेरे प्यारे फ्लीन्स ! ओ नमकहराम, ज़लील,
कमीनो ! तुम मुझसे बदला लेना चाहते हो ? तो ले लो गुलामो !

[बंको मर जाता है और फ्लीन्स बचकर भाग निकलता है ।]

तीसरा हत्यारा : अरे, यह मशाल किसने बुझा दी ?

पहला हत्यारा : क्यों ? क्यों ? क्या ऐसा करना ठीक नहीं था ?

तीसरा हत्यारा : अभी तो सिर्फ़ एक ही मारा गया है । वह लड़का तो
बचकर निकल ही गया ।

दूसरा हत्यारा : हाय ! हमारा आधा काम तो अभी पूरा हुआ ही नहीं ।

पहला हत्यारा : अब क्या करें ? चलो चलकर सम्राट् को बता दें कि
अभी इतना ही काम पूरा हो सका है ।

[जाते हैं ।]

दृश्य ४

[राजमहल का बीच का भवन]

[दावत की तैयारियाँ । मैकबेथ, लेडी मैकबेथ, रौस, लैनोक्स,
सरदार तथा अन्य सेवकों का प्रवेश]

मैकबेथ : मेरे सम्मानित अतिथियो ! आप सब अपने पदों के अनुसार अपनी-अपनी जगह बैठ जायें । हम आप सभी का हृदय से स्वागत करते हैं ।

सरदार : सम्राट को इसके लिये हमारी ओर से बहुत धन्यवाद है ।

मैकबेथ : हम चाहते हैं कि हम आपके बीच में ही रहकर आपका सत्कार करें। आपकी महमानदाज अभी अपनी जगह बैठी हुई हैं। इस खुशी के समय हम उनसे भी कहेंगे कि वे भी उठकर आपका स्वागत करें।

लेडी मैकबेथ : अपने सभी साथियों से कह दीजिये कि मैं उन सबका हृदय से स्वागत करती हूँ ।

[पहला हत्यारा दरवाजे पर आता है ।]

मैकबेथ : वह देखो, प्रिये ! वे सभी तुम्हारे इस स्वागत के लिये तुम्हें हृदय से धन्यवाद दे रहे हैं । दोनों तरफ ही बराबर का प्रेम-भाव है । हम अब सभी अपने साथियों के बीच बैठेंगे । खूब खुल कर खुशी मनाओ । लो, हम अपने सभी अतिथियों की खुशहाली के लिये यह शराब का प्याला पीते हैं ।

[दरवाजे पर पहुँच कर]

(चौंक्ते हुए) यह क्या ? तुम्हारे चेहरे पर तो खून लगा हुआ है ।

हत्यारा : खून ? हाँ तो उसी बेंको का खून है यह महाराज !

मैकबेथ : ओह ! अच्छा ही हुआ कि यह खून उसकी नाड़ियों में न बह

कर तुम्हारे चेहरे पर मुझे दीख रहा है। तो, वह इस संसार से चल बसा !

हत्यारा : हाँ, मेरे स्वामी ! मैंने अपने हाथों से उसका गला फाड़ा है।

मैकबैथ : शाबास ! गला काटने वालों में तुमसे बढ़ कर और कौन हो सकता है पर हाँ, वह भी अच्छा होगा जिसके हाथ के नीचे फ्लीन्स का गला आया होगा। अगर तुमने ही उसका भी काम तमाम किया है तो शाबास ! तुम्हारे बराबर हम किसी को नहीं मानते।

हत्यारा : पर क्या बताऊँ, महाराज ! फ्लीन्स तो बच कर आ गया।

मैकबैथ : (स्वगत) ओह ! बच गया ! तब फिर भी मेरी चिन्ता और भय का कारण अभी इस दुनिया में बचा रह गया। काश ! अगर वह बैंको उस फ्लीन्स को भी अपने साथ ले जाता तो मेरा मुख पत्थर की तरह भरा-पूरा होता। मैं एक चट्टान की तरह अमिट होता और जिस आज़ादी के साथ हवा चारों तरफ़ बहती है उसी आज़ादी के साथ बिना किसी खतरे के इस संसार में विचरण कर सकता। पर ओह ! अब क्या हूँ मैं ? एक तंग रास्ते में भिच जाने वाला दयनीय प्राणी जिसका हृदय भय और शंका से हर पल बेचैन है।

(हत्यारे से) लेकिन; बैंको तो पूरी तरह इस दुनिया से उठ गया न ?

हत्यारा : बीस गहरे-गहरे घावों का ताज़ पहन कर वह शान्ति से एक खाई में सोया हुआ है महाराज ! उनमें छोटे से छोटा घाव भी उसकी मौत के लिये बड़ा है।

मैकबैथ : बहुत अच्छा, हम इसके लिये तुम्हें धन्यवाद देते हैं। (स्वगत) वह बूढ़ा साँप तो उस खाई में हमेशा के लिये आँखें भींचे पड़ा हुआ है और छोटा साँप चंगुल से निकल कर भाग गया है। उसके चाहे अभी से दाँत भी नहीं उगे हैं पर आखिर साँप है, थोड़े दिन

में वह भी ज़हर उगलने लगेगा ।

(हत्यारे से) अच्छा, अब तुम जा सकते हो । कल फिर हम मिलेंगे ।

[हत्यारा चला जाता है ।]

लेडी मैकबैथ : क्या बात है मेरे स्वामी ? दावत की इस खुशी में तुम क्यों हिस्सा नहीं ले रहे हो ? मालूम है ? वह दावत कामयाब नहीं कही जाती जिसके बीच-बीच में महमानदाज़ उठ कर अपने महमानों की आवभगत नहीं करता है । सभी जो यहाँ आये हैं क्या वे अपने-अपने घरों में अच्छी तरह से खाना नहीं खा सकते ? कहीं दावत में खाना खाने की तो यही विशेषता है न कि सबके मिलने में एक जलसा होता है और सब एक दूसरे के साथ हँसते-बैठते हैं ? इसके बिना क्या मतलब है दावत में मिलने का ?

मैकबैथ हाँ, ठीक कहती हो प्रिये ! तुमने तो मुझे मेरे कर्त्तव्य की याद दिला दी । ईश्वर करे हम दोनों का स्वास्थ्य अच्छा रहे, खाना अच्छी तरह पच कर हमें खूब भूख लगे और किसी तरह की व्यधि हमारे शरीर में न रहे !

लैनोक्स : क्या मैं सम्राट से भी हमारे साथ बैठने के लिये प्रार्थना कर सकता हूँ ?

[बैंको की प्रेतात्मा प्रवेश करती है और आकर मैकबैथ के स्थान पर बैठ जाती है ।]

मैकबैथ : काश ! हमारे बीच में हमारे राज्य का वह गौरव, वह सुयोग्य और श्रेष्ठ बैंको उपस्थित होता तो कितना अच्छा होता ! अब जब भी वह मुझे मिलेगा मैं बिना उसकी कुछ सुने और बिना उसकी प्रार्थनाओं पर रहम खाये उसकी इस बेरुखाई के लिये खूब उलाहना दूंगा ।

रौस : ठीक है, महाराज ! उन्होंने तो आने का वायदा किया था फिर

भी वे नहीं आये इससे तो उनके चरित्र पर एक धब्बा लग गया ।

पर क्या सम्राट हमारे साथ बैठ कर हमें कृतज्ञ करेंगे ?

मैकबेथ : अवश्य ! लेकिन वहाँ कोई बैठने की जगह तो है ही नहीं ।

लैनोक्स : नहीं, नहीं, स्वामी ! यहाँ यह जगह आपके लिये ही खाली छोड़ी गई है ।

मैकबेथ : कहाँ ?

लैनोक्स : यहीं महाराज !

क्यों ? क्या है जिसे देख कर आप इतना घबरा रहे हैं ?

मैकबेथ : बताओ, किसने किया है तुम लोगों में से यह ?

कुछ सरदार : क्या किया है महाराज ?

मैकबेथ : कोई भी नहीं बोलता, कोई भी नहीं कहता कि यह मैंने किया है ।..... ओ चला जा, अपने इन खून से भीगे बालों को मेरी तरफ न हिला ।

रौस : भाइयो ! आप लोग उठ जायें । सम्राट् की तबियत ठीक नहीं मालूम होती ।

लेडी मैकबेथ : मेरे सम्मानित अतिथियो ! मेरे अच्छे साथियो ! मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप लोग अपनी-अपनी जगह बैठे रहें । मेरे पति को तो उनकी युवावस्था से ही ऐसी बीमारी है । आप सभी बैठ जायें । थोड़ी ही देर में वे अच्छे हुए जाते हैं । अगर आप लोग इस तरह घबराये हुए-से उनकी तरफ देखेंगे तो वे और भी उत्तेजित हो जायेंगे और इससे उनकी हालत इससे भी ज्यादा बिगड़ जायेगी । आप लोग अपना खाना खाते रहिये और उनकी चिन्ता छोड़ दीजिये ।

(मैकबेथ से) तुम कोई आदमी हो ?

मैकबेथ : क्यों नहीं ! आदमी ही नहीं एक बहादुर आदमी हूँ जिसके

सीने में उस खतरे से टकराने का दम है जिससे शैतान खुद डर कर भाग जाये ।

लेडी मैकबैथ : सब तुम्हारी थोथी बातें हैं । यह सब तुम्हारा डर है जिसने तुम्हारी यह हालत बनाई है । तुम्हारी ये बड़ी-चढ़ी बातें ठीक उसी हवा की कटार की तरह हैं जिसके बारे में तुम कह रहे थे कि वह तुम्हें डंकन के पास तक ले गई थी । कुछ नहीं, तुम्हारा यह जोश, यह उबाल सब तुम्हारे डरपोकपन का दिखावा है जो ठीक वैसा ही है जैसे जाड़े की उस शाम को वह औरत अपनी दादी के नाम का बहाना करके वह किस्सा सुना रही थी । यह सब डूब मरने की बात है । शरम नहीं आती तुम्हें ? उस स्टूल को देख-देख कर तुम इस तरह डर कर काँप क्यों रहे हो ?

मैकबैथ : वह देखो ! देखो ! वह रत्ना, क्या है यह ? अब बताओ क्या कहोगी तुम इसे ?

(प्रेतात्मा की ओर देख कर) मैं तेरी क्या परवाह करता हूँ । इस तरह अपना सिर क्यों हिला रहा है ? बोलता क्यों नहीं ? बोल । ओह ! अगर कब्रों में सोये मुर्दे भी फिर इस तरह उठ कर आने लगे तो फिर मरने के बाद हमारी लाशों को सिर्फ चील और कौवे ही खायेंगे ।

[प्रेतात्मा चली जाती है ।]

लेडी मैकबैथ : क्या हो गया है तुम्हें यह ? यह क्या पागलपन तुम्हारे ऊपर चढ़ गया है जिसमें तुम यह तक भूल गये हो कि आखिर तो तुम एक मनुष्य हो ।

मैकबैथ : मैंने उसे देखा था । वह आया था । अगर यह सच है कि मैं ज़मीन पर खड़ा हुआ हूँ तो यह भी सच है कि मैंने अपनी आँखों से उसे देखा था ।

लेडी मैकबैथ : धिक्कार है तुम्हारे पुरुष होने पर ।

मैकबैथ : आदमी के कानून बनाने से पहले भी पुराने समय में कितनी ही हत्याएँ हुई हैं और उसके बाद भी न जाने कितनी ऐसी डरावनी हत्याएँ हुई हैं जिन्हें कान सुन कर बरदाश्त नहीं कर सकते । पर उस समय में जब मनुष्य के सिर पर कोई एक चोट ही पड़ती थी तो उससे ही चक्कर खाकर उसकी मृत्यु हो जाती थी पर अब यह क्या आश्चर्य है ? बीस-बीस ज़हरीले घाव सिर पर लेकर भी वे एक बार मरे लोग अपनी कब्रों से उठ रहे हैं और आ-आकर हमें अपनी बैठने की जगह से धकेल रहे हैं । हत्या से कहीं अधिक अचम्भे की बात तो यह है ।

लेडी मैकबैथ : मेरे स्वामी ! देखो तो तुम्हारे सभी मित्र तुम्हारे बिना बेचैन हैं ।

मैकबैथ : अरे, मैं कहाँ खो गया था । मेरे साथियों ! हमारी इस हालत पर आप लोग कोई आश्चर्य न करें । यह एक अजीब-सी बीमारी हमारे साथ लगी हुई है जो हमारे परिचित साथियों को नहीं दीखती । हम आप सभी के प्रेम और स्वास्थ्य के लिये ईश्वर से कामना करते हैं । लाओ, हम यहाँ बैठ जाते हैं, हमें शराब दो । ऊपर तक प्याला भर देना । हम अपने सभी मित्रों और अतिथियों के सुख की कामना करते हुए यह पीते हैं और हमारे प्यारे मित्र बेंको के सुख के लिये भी जिसकी कमी हमें बहुत खटक रही है । काश ! क्या अच्छा होता अगर वह भी यहाँ होता तो । अब हम उसके तथा यहाँ उपस्थित हमारे सभी मित्रों के सुख और स्वास्थ्य के लिये यह प्याला पीते हैं । सभी के लिये हमारी शुभ कामनाएँ हैं ।

कुछ सरदार : हम सभी सम्राट् के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे ।

[प्रेतात्मा का पुनः प्रवेश]

मैकबैथ : चला जा ! हट जा मेरी आँखों के सामने से ! ओ ज़मीन तू फटकर इसे अपने नीचे छिपा ले । तू ? कहाँ है तेरी हड्डियों में जान अब ? तेरा खून तो ठंडा पड़ चुका है और जिन आँखों से तू मुझे घूर रहा है वे हमेशा के लिये बन्द हो चुकी हैं ।

लेडी मैकबैथ : हमारे श्रेष्ठ सरदारों ! इसे और कुछ भी न समझो, यह सब इनकी बीमारी का दौरा है । बस दुःख इसी बात का तो रहा है कि इससे दावत की सारी रंगत फीकी पड़ रही है ।

मैकबैथ : एक मनुष्य में जो कुछ भी करने की हिम्मत है वह मुझमें है । हटा ले इस शकल को मेरी आँखों के सामने से, फिर चाहे रूसी भालू की तरह खूँखवार बनकर आ और मुझसे टकरा । चाहे नुकीले सींग वाले गेंडे या 'हिरकेन' चीते का या कोई भी डरावनी से डरावनी शकल बनाकर आ और मुझसे टकरा । मेरी मजबूत नसें डर से नहीं काँपेंगी । चाहे फिर से ज़िन्दा होकर आ, हम आपस में तलवार लेकर एक जगह फैसला कर लें । अगर उस समय डर से मेरा एक रोयाँ भी काँप जाय तो मुझे एक छोटी बच्ची समझना । पर अपनी इस शकल को मेरी आँखों के सामने से हटा ले । दूर हो जा ओ डरावनी काली छाया ! चला जा मेरे सामने से । कौन है तू ? क्या मेरे दिमाग का वहम ? पर दूर हो जा । चला जा ! जा ।

[प्रेतात्मा चली जाती है ।]

हैं ! चला गया वह तो । ओ ! मैं फिर वही मनुष्य हूँ । हमारे साथियो ! हम आप सबसे प्रार्थना करते हैं कि आप लोग अपनी-अपनी जगह शान्ति से बैठ जाइये ।

लेडी मैकबेथ : तुमने इस समय की सारी खुशी पर पानी डाल दिया है और इस तरह अपनी पागलपन की हालत बनाकर दावत के समय की आपस की हँसी-खुशी में बाधा पहुँचाई है।

मैकबेथ : हम पूछते हैं कि क्या ऐसी चीजें भी दुनिया में हैं जो गरमी की ऋतु में उठते बादलों की तरह अचानक हमें आकर घेर लें और हमें एक गहरे आश्चर्य में डाल दें ? हमारी साधारण हालत से आज हम आप लोगों को कुछ अजनबी-से लग रहे हैं पर क्या हम यह समझ लें कि ऐसी शकलें देख कर आपके गालों की यह लाली वैसी ही बनी रहेगी जबकि डर के मारे हमारा चेहरा पीला पड़ गया है ?

रौस : कैसी शकलें महाराज !

लेडी मैकबेथ : मेरी आपसे प्रार्थना है कि अब इनसे और अधिक बातें न कीजिये। इनकी हालत तो अब बहुत ही बिगड़ती जा रही है। आप लोग ज्यादा कुछ पूछताछ करेंगे तो वे और भी उत्तेजित हो जायेंगे। अच्छा, अब आप सब लोगों को विदाई है। अलविदा। बस कृपा करके आप लोग शीघ्र यहाँ से चले जायें और सम्राट् की किसी तरह की आज्ञा की प्रतीक्षा में न खड़े रहें।

लैनोक्स : अच्छा, अलविदा ! हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह सम्राट् को स्वास्थ्य प्रदान करे !

लेडी मैकबेथ : आप सबको मेरी ओर से अलविदा !

[मैकबेथ तथा लेडी मैकबेथ को छोड़ कर सभी चले जाते हैं ।]

मैकबेथ : वह मुझसे बदला लेगा। कहने वाले ठीक ही कहते हैं कि खून खून का बदला खून से ही लेता है। वह देखो मुझे लग रहा है कि वे पत्थर अपने अन्दर दफनाए मुर्दों के शरीर को टटोल रहे हैं और पेड़ पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि ये हैं हत्यारे ! कितना भी

छिपा कर यह खून रखा गया पर क्या पशु और क्या पक्षी सभी हत्यारों का नाम पुकार-पुकार कर बता रहे हैं।

क्या बजा होगा रात का इस समय ?

लेडी मैकबेथ : अब रात कहाँ है ? पौ फट रही है।

मैकबेथ : तुमने कुछ देखा प्रिये ! मैकडफ़ हमारी दावत में शामिल होने नहीं आया ? क्या सोचती हो तुम इसके बारे में ?

लेडी मैकबेथ : क्या तुमने उसको फिर बुलवाया ?

मैकबेथ : मेरे कानों में अभी तो यह उड़ती हुई-सी बात ही आई है लेकिन बुलवाऊँगा मैं उसे। मैं कहता हूँ प्रिये ! ऐसा कोई भी सरदार नहीं बचेगा जिसके घर में मैं एक अपना जासूस न छोड़ दूँ। कल प्रातः काल से भी पहले उठ कर मैं उन्हीं डाइनों के पास जाऊँगा। वे मुझे और कुछ बतायेंगी। अब मैं कितना भी नीचा गिरकर, कितना भी पाप करके यह जानने का निश्चय कर चुका हूँ कि मेरे लिये बुरी से बुरी क्या बात हो सकती है। अब मेरे स्वार्थ के रास्ते में जो भी रोड़े हैं, जो भी शूल हैं वे दूर होने ही चाहियें क्योंकि इस खून के दरिया में कूद कर मैं इतना आगे बढ़ आया हूँ कि अगर अब मुड़ कर वापिस जाना भी चाहूँ तो भी पीछे लौटना उतना ही मुश्किल है जितना अब आगे बढ़ना। अजीब तरह के इरादे मेरे दिमाग में बस रहे हैं, मैं चाहता हूँ, उस पर गहराई से सोचने के पहले उनको पूरा किया जाना चाहिये।

लेडी मैकबेथ : मुझे लगता है, आप रात में पूरी नींद सो नहीं पाये, इसी लिये आपकी यह हालत हो गई है। चलिये, चल कर सो जाइये अब।

मैकबेथ : हाँ, आओ, चलकर सो जायें। मेरा यह अजीब तरह का डर उस अनाड़ी के डर की तरह है जो इस तरह के कामों का पूरी

तरह आदी न हुआ हो। इस तरह के काले और खूँखार कामों में अभी हम बच्चे की तरह ही हैं प्रिये !

[जाते हैं ।]

दृश्य ५

[बादलों की गड़गड़ाहट । बिजली । तीनों डाइनों हिकेट से मिलने आती हैं ।]

पहली डाइन : क्यों ? क्या बात है हिकेट ? तुम गुस्से में क्यों दिखाई दे रही हो ?

हिकेट : क्या अब भी गुस्सा नहीं होना चाहिये ? तुम अपने आपको कुछ समझने लगी हो ? इस तरह की तुम्हारी ढीठपन देखकर भी क्या मुझे चुप रह जाना चाहिये ? बताओ मुझे, तुमने मेरे बिना ही अपनी उलटी-सीधी बातों में यह मौत का सारा सौदा मैकबैथ से कैसे कर लिया जब कि आदमी पर बड़ी से बड़ी आफ़त लाने में मैं तुम सबसे अधिक चतुर हूँ ? मैंने ही तुम्हें यह सब कुछ जादू सिखाया और मुझे ही तुमने नहीं बुलाया। बताओ क्यों ? कम से कम मेरी कला तो देखती कि क्या-क्या चालें मैं चलती। मुझे अपना प्रताप दिखाने का तुमने मौका ही नहीं छोड़ा। और इससे भी बुरी बात यह है कि तुमने यह सब कुछ उस मनचले लड़के के लिये किया है जिसके दिल में कपट और क्रोध भरा हुआ है और जो सिर्फ़ अपना स्वार्थ पूरा करने की ही बात सोचता है, तुम्हारी नहीं। सुधार लो अपनी यह ग़लती अब भी। जाओ, और कल अलख सबेरे ही 'एकरन' के गड्डे के पास मुझे मिलना। वहीं वह अपनी तकदीर जानने आयेगा। अपना जादू-टोना, मंत्र आदि सब कुछ ज़रूरत पड़ने वाली चीज़ तैय्यार रखना। मैं अब

उसी हवा में चली । यह रात मैं अपने किसी खतरनाक इरादे की फिराक में बिताऊँगी । दोपहर होने से पहले ही एक बिजली-सी फटेगी । चाँद के एक कोने पर एक बूँद लटकी हुई है, उसमें बड़ा रहस्य भरा हुआ है । मैं चाहती हूँ कि किसी तरह ज़मीन में गिरने से पहले मैं इसे पा जाऊँ । जानती हो ? हमारी माया से उसी बूँद में से हम ऐसे भूत-पिशाच पैदा कर देंगे कि मैकबेथ उनके धोखे में आकर पूरी तरह चकरा जायेगा । उन्हें देखकर वह अपनी तकदीर कोसने लगेगा और मौत से नफ़रत करेगा; यहाँ तक कि जहाँ उसकी समझ भी नहीं पहुँच सकती और न अपने को उसके लिये स्वाभाविक रूप से समर्थ समझेगा, वहाँ तक भी वह अपने इरादे बनायेगा । एक बार तो उसके हृदय में जितना भी डर है उसकी सीमा भी पार करके अपनी महत्वाकांक्षाएँ बनाने लगेगा । फिर तुम यह अच्छी तरह जानती ही हो, धोखे में किया विश्वास आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन होता है ।

[अन्दर संगीत की ध्वनि । एक गीत ।]

आओ चलें दूर ।

आओ चलें दूर ॥***

वह सुनो, मुझे बुलाया जा रहा है । मेरी वह छोटी-सी डाइन उस बादल में बैठी मेरी बाट जोह रही है ।

[जाती है ।]

पहली डाइन : आओ, चलो जल्दी करें । हिकेट तो जल्दी ही वापिस आ जायेंगी ।

[जाती है ।]

दृश्य ६

[फोरेस । राजमहल]

[लैनोक्स तथा एक दूसरे सरदार का प्रवेश]

लैनोक्स : मेरी पहली बातों का तुम्हारे ऊपर कुछ असर हुआ है न ? यों कहो, अगर हम उन बातों पर और गहराई से सोचें तो न जाने और क्या-क्या भेद खुल सकते हैं । मैं सिर्फ इतना ही अब कहता हूँ कि सारे षड्यन्त्र की किसी अजीब तरह से व्यवस्था की गई है । महान डंकन की मौत पर मैकबेथ ने आंसू बहाये थे न ? अच्छा, वह तो किसी और ने मार दिया, पर बहादुर बेंको ? वह जंगल में देर तक घूमता रह गया था जिसके लिये तुम चाहो तो कह सकते हो न, कि फ्लीन्स ने उसे मार डाला ? इसीलिये कि फ्लीन्स भाग क्यों गया ? अब आगे सबको इससे सतर्क रहना चाहिये कि वे अधिक देर तक जंगल में बाहर अकेले घूमते न रहें । और इससे भी आगे मैलकॉम और डोनलबेन ने अपने ही बाप का खून कर डाला । सब यही सोचेंगे कि कैसा नीच, शैतानों का-सा काम है । कोई कल्पना तक नहीं कर सकता । और तुमने देखा नहीं, मैकबेथ को बहुत दुख हुआ था इस पर ? इसीलिये तो अपनी स्वामी-भक्ति के आवेश में आकर उसने उन शराब के नशे में चूर हुए दोनों हत्यारों को इस दुनिया में ज़िन्दा नहीं रहने दिया । खुद अपनी तलवार से ही उन्हें मार डाला । क्या ठीक काम नहीं किया उसने ? ठीक, यही तो बुद्धिमानी का काम था । क्योंकि तुम ही सोचो, जब वे पहरेदार यह कह कर चिल्लाते कि हमने सम्राट का खून नहीं किया है तो फिर कौन ऐसा है इस ज़मीन पर जिसका खून उबाल नहीं खाता ? इसी से मैं कहता हूँ कि मैकबेथ बहुत ही समझदार है, उसने जो कुछ भी किया है वह सब ठीक किया है । मैं तो यहाँ तक भी

सोचता हूँ कि अगर भगवान न करे, डंकन के वे दोनों पुत्र उसके कहीं हाथ आ जायें तो फिर वह उनको भी वह मज़ा चखाये कि वे भी जान जायें कि बाप के खून से हाथ धोना क्या होता है और इसी तरह फ्लीन्स भी ।

लेकिन, हाँ, छोड़ो इन सब बातों को । सुनने में आया है कि मैकडफ़ ने कुछ साफ़-साफ़ उस मैकबेथ को सुना दिया था और उसकी दावत में भी वह शामिल नहीं हुआ था, इसीलिये उसकी तरफ़ इस चांडाल की भौंहें कुछ खिच गई हैं । साथी ! क्या तुम मुझे यह बता सकते हो कि इस समय मैकडफ़ कहाँ होगा ?

सरदार : सम्राट का एक पुत्र मैलकॉम तो, जिससे इस चाण्डाल दुष्ट ने उसका जन्माधिकार छीन लिया है, अब इङ्ग्लैण्ड के सम्राट एडवर्ड की शरण में जाकर रह रहा है । देवताओं के-से गुण वाले उस सम्राट ने इस सहृदयता के साथ उसका अपने यहाँ स्वागत किया है कि चाहे राजकुमार दुर्भाग्य का मारा है पर उसके यहाँ उसके सम्मान में कोई अन्तर नहीं आया है । मैकडफ़ उसी पवित्र हृदय वाले सम्राट से यह प्रार्थना करने गया है कि वह मैलकॉम की सहायता के लिये नार्दम्बरलैंड के अर्ल तथा वीर सिवाई को भेज दे ताकि उन सबकी सहायता से और फिर सबसे बड़ी न्याय की दृष्टि रखने वाले उस परमात्मा की कृपा से हम फिर अपने घरों में बैठ कर चैन से खाना खा सकें और रात में बिना किसी खतरे के निश्चिन्त सो सकें । हमें वहाँ इसका डर न रहे कि कोई हमारी रोटियों में ज़हर मिला रहा है या दावतों के मौकों पर हमारे पेट में न जाने कब कोई कटार भौंक देगा ।

वह इसीलिये गया है कि राजकुमार मैलकॉम जो हमारे सच्चे सम्राट हैं उन्हें यहाँ ले आकर किसी तरह राजगद्दी पर बिठा

सके जिससे हम सभी हमारे सम्राट का पवित्र सम्मान प्राप्त कर सकें। जानते हो ? इसी खबर से मैकबैथ का खून उतार-चढ़ाव खा रहा है और अब लड़ाई की पूरी तैयारी में वह लग गया है।

लैनोक्स : पर यह तो बताओ, क्या उसने मैकडफ़ को बुलवाया था ?

सरदार : हाँ, बुलवाया था और जानते हो मैकडफ़ ने दूत से क्या कह दिया ? साफ़ फटकार कर कह दिया कि मैं नहीं आऊँगा। इस पर उस दूत का चेहरा एक बार तो गुस्से से तमतमा गया और दूसरे ही क्षण उसने पीठ मोड़ कर चलते समय इतना ही कहा : 'तुम जैसा उत्तर देकर मुझे सम्राट के पास भेज रहे हो उसके लिये बाद में तुम्हें पछताना पड़ेगा मैकडफ़ !'

लैनोक्स : तो इस हालत में तो उसे मैकबैथ से और भी दूर रहना चाहिये। इसी में उसकी बुद्धिमानी है।

पर काश ! कितना अच्छा हो कि अब तो मैकडफ़ से भी पहले कोई देवदूत हवा में तेज़ी से उड़ कर इङ्गलैण्ड के सम्राट के दरबार में पहुँच जाय और उससे भी पहले हमारा यह सारा दुःख उसे जा सुनाये तो हमारा यह दुःखी देश जो इस चाण्डाल सम्राट बने हुए मैकबैथ के पैरों के नीचे कुचला हुआ त्राहि-त्राहि कर रहा है ईश्वर की इस असीम कृपा के लिये कितना आभारी होगा !

सरदार : मैं अपनी भी प्रार्थनाएँ उसी के साथ इङ्गलैण्ड के सम्राट के पास भेजूँगा।

[जाते हैं।]

चौथा अंक

दृश्य १

[एक गुफा । बीच में एक उबलता हुआ बर्तन । कड़क के साथ
बादलों का गरजन । तीनों डाइनों का प्रवेश]

पहली डाइन : तुमने सुना ? तीन बार उस चितकबरी बिल्ली ने म्याऊँ-
म्याऊँ की है ।

दूसरी डाइन : हाँ, हाँ, भाड़ी का सूअर भी चार बार चिल्ला चुका है ।

तीसरी डाइन : हारपियर^१ भी बराबर यही चिल्ला रही है कि—‘यही
समय है ! यही समय है !’

पहली डाइन : चलो इस देग के पास चलें और जानवरों की इन ज़हरीली
आंतों को इसमें डाल दें । सबसे पहले तो हमें अपनी इस जादू की
देग में उस मेंढक को उबालना चाहिये जो पूरे ३१ दिन तक किसी
ठंडे पत्थर के नीचे छिपा हुआ ज़हर छोड़ता रहा हो और सिर्फ
सोते समय ही पकड़ा गया हो ।

सभी : ठीक है ! ओ आग जलो ! ओ जादू की देग उबलो ! बस अब
हम मैकबैथ को दूनी महनत से परेशान करेंगे ।

दूसरी डाइन : इस देग में उबलने के लिये किसी दलदल से पकड़े हुए साँप
को भी काट कर डाल दो । उसके अलावा गोह की आँखें, मेंढक

१. Harpier—एक औरत का चेहरा और शरीर तथा किसी पक्षी के-से
पंख और पंजे रखने वाला एक प्राणी । जैसे पहले प्रथम दृश्य में ही पेंडोक
और ग्रेमल्लिकन आते हैं उसी तरह यह भी डाइनों की जादू की शक्ति
(Spirit) है ।

का अँगूठा, चमगादड़ के बाल, कुत्ते की जीभ, साँप की काँटेदार जीभ, अंधे कीड़े का डंक, छिपकली का ओठ, और उल्लू का पंख लो और इन सबको नरक के उबलते कढ़ाव जैसी इस जादू की देग में उबलने के लिये डाल दो और फिर देखो, कितना बड़े से बड़ा तूफान, बड़ी से बड़ी आफ़त खड़ी की जा सकती है।

सभी : ठीक है ! ओ आग जलो ! ओ जादू की देग जल्दी उबलो ! बस अब हम मैकबेथ को दूनी महनत से परेशान करेंगे।

तीसरी डाइन : अभी इस रस को गाढ़ा बनाने के लिये देग में यह चीज़ें और डालनी चाहियें जैसे अजगर की कँचुली, भेड़िये का दाँत, मरी जादूगरनी का सूखा शरीर, काले रंग के समुद्री कीड़े का पेट और गला, अंधेरे में खोदे गये जहरीले पौधे की जड़, ईसा की बुराई करने वाले पाखण्डी यहूदी का जिगर, बकरी का पित्त, हमेशा हरे रहने वाले पेड़ की केवल चन्द्रग्रहण के समय कटी हुई डालियाँ, किसी तुर्क की नाक, तातार का ओठ, किसी कुलटा के उस बच्चे की उँगलियाँ जिसको पाप से उसने खाई के किनारे जन्मा हो और वहीं गला घोट कर मार डाला हो। इसके अलावा किसी चीते की अंतड़ियाँ इस सबमें और मिला दो।

सभी : ठीक है, ओ आग ! जलो और हे जादू की देग ! जल्दी से उबलो ! अब तो हम मैकबेथ को दूनी महनत से तंग करेंगे।

दूसरी डाइन : इतना सब करके इस उबलते रस को किसी लंगूर के खून से ठंडा कर लो बस, हो गया अपना जादू पक्का और अच्छा।

[हिक्केट का दूसरी तीनों डाइनों के पास प्रवेश]

हिक्केट : शाबास ! बहुत अच्छा, जो महनत तुम लोगों ने इस रस को तैय्यार करने में की है उसकी मैं तारीफ़ करती हूँ। अब सुनो, इस जादू के रस से जो कुछ भी फ़ायदा होगा उसमें हर एक का

हिस्सा रहेगा ।

अब सब मिल कर चूल्हे पर चढ़ी इस जादू की देग के चारों ओर घेरा बनाकर परियों की तरह नाचो और गाओ और जिन-जिन को भी तुमने इस रस में डाला है उन सबको खूब अपने गाने से खुश करो ।

[वे सभी गाती हैं । 'काली छायाओ' इत्यादि । हिकेट वापिस चली जाती है ।]

दूसरी डाइन : सुनो बहिन, मेरे अँगूठे में कुछ खुजली-सी मच रही है, मुझे लगता है कोई न कोई आफ़त या तूफ़ान आने वाला है ।

[कोई दरवाजा खटखटाता है ।]

ओ तालो ! खुल जाओ ।

चाहे कोई भी खटखटाये ॥

[मैकबेथ का प्रवेश]

मैकबेथ : कौन हो तुम ओ काली बदसूरत चुड़ैलो ! इस तरह छिप कर इस आधी रात के समय तुम क्या करने जा रही हो ?

सभी : वह काम जिसका कोई नाम नहीं बताया जा सकता ।

मैकबेथ : ठहरो, मैं उस जादू के नाम पर जिसकी तुम खूब हमी भरती हो और जो चाहे कहीं से भी तुमने सीखा हो, कुछ तुमसे पूछना चाहता हूँ । मुझे जवाब दो । चाहे तुम अपने हाथों से ही ये आंधियाँ छोड़ती हो, जो गिरजाघरों की चोटियों से जाकर टकराती हैं; चाहे समुद्र की उन भागदार बड़ी-बड़ी लहरों से भँवर में फँसे हुए कितने ही जहाज़ डूब जायें, चाहे अनाज के पौधे टूट-टूटकर जमीन में मिल जायें और पेड़ हवा से उखड़ कर उड़ जायें, चाहे बड़े-बड़े महल और किले टूट कर अपने मालिकों के ऊपर ही गिर जायें; चाहे राजमहल स्वयं और उसके साथ बड़ी-बड़ी मीनारों

की चोटियाँ खण्ड-खण्ड हो कर जमीन पर गिर पड़ें; मैं कहता हूँ प्रकृति के जितने भी लाभदायक जीव-जन्तु हैं वे एक साथ क्यों न खत्म हो जायें, फिर भी जब तक यह प्रलय की आँधी स्वयं ही थक कर न बैठ जाये तब तक जो कुछ भी मैं पूछूँ उसका जवाब दो ।

पहली डाइन : बोलो ।

दूसरी डाइन : मांगो क्या चाहते हो ।

तीसरी डाइन : हम अवश्य उत्तर देंगे ।

पहली डाइन : पर बोलो, तुम सब कुछ हमारे ही मुँह से सुनना चाहते हो या हमें भी सिखाने वालियों के मुँह से ?

मैकबैथ : बुलाओ उन्हें । मैं उन्हें देखना चाहता हूँ ।

पहली डाइन : अच्छा, तो बहिन ! इस देग में उस सुअरनी का खून और डाल दो जिसने अपने नौ घंटों को मार कर खा लिया हो और सुनो, जल्लादों के उस पत्थर से जहाँ वे अपराधियों की गरदन काटते हैं जो भी चरबी बह कर आई हो उसे आग में डाल दो ।

सभी : आओ, ओ पिशाच-पिशाचिनियो ! ऊपर आकाश में या नीचे पृथ्वी पर जहाँ कहीं भी तुम हो वहाँ से आ जाओ और आकर अपना प्रताप दिखाओ ।

[एक साथ जोर से बिजली कड़कती है । पहला पिशाच :

एक हथियार बन्द सिर]

मैकबैथ : ओ अज्ञात शक्ति ! मुझे बता ।

पहली डाइन : तू कुछ न बोल मैकबैथ ! वह तेरे मन की बात जानता है । तू सिर्फ उसकी बात सुन ।

पहला पिशाच : मैकबैथ ! मैकबैथ ! मैकबैथ ! खबरदार रहना मैकडफ़

से । होशियार, उस फाइफ़ के थेन से । बस इतना ही कहना काफ़ी है । अब मुझे जाने दे ।

[पिशाच जाता है ।]

मैकबैथ : धन्यवाद ! ओ अज्ञात शक्ति ! चाहे तू कोई भी क्यों न हो पर मुझे यह चेतावनी देने के लिये मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ । तूने ठीक मेरे डर को पहचान लिया है । पर ठहर, एक बात और सुन ।

पहली डाइन : उस पर इस तरह से आज्ञा नहीं चला सकता मैकबैथ ! ले उससे भी विकराल दूसरा पिशाच आ रहा है ।

[फिर एक साथ जोर से बिजली कड़कती है । दूसरा पिशाच एक खून से सने हुए बच्चे के रूप में आता है ।]

दूसरा पिशाच : मैकबैथ ! मैकबैथ ! मैकबैथ !

मैकबैथ : अगर मेरे तीन कान होते तो उन तीनों से मैं तेरी बात सुनता ।

दूसरा पिशाच : खून से खेलने वाले, बहादुर, और अपने इरादे में मज्ज-बूत बनो मैकबैथ ! संसार में आदमी की जितनी भी ताकत है उसे अपने पैरों तले कुचल डालो क्योंकि औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

[पिशाच जाता है ।]

मैकबैथ : तब फिर चाहे ज़िन्दा रह ओ मैकडफ़ ! तुझसे अब मुझे किस बात का डर है ? लेकिन फिर भी मैं अभी कही हुई इस बात को दूनी तरह से पक्का क्यों न कर लूँ और तक्रदीर से पूरी तरह यह वायदा क्यों न करा लूँ कि जो कुछ भी कहा गया है वह सब ठीक हो कर ही रहेगा । तो फिर तू ज़िन्दा नहीं रह सकता मैकडफ़ ! जिससे जब कभी भी वह डरपोक भय मेरे हृदय में आकर

मुझे परेशान करेगा तो मैं कहूँगा—भूठा है तू और फिर तूफ़ानों में भी चैन की नींद सो सकूँगा ।

[फिर एक साथ जोर से बिजली कड़कती है । मुकुट पहने हुए एक बच्चा आता है । जिसके हाथ में एक पेड़ है ।]

मैकबैथ : क्या है ?

यह किसी राजकुमार की तरह लगने वाला कौन है जो अपने सिर पर राजमुकुट पहने हुए है जिससे सुनहरी दानों की एक गोल लड़ी उसकी भौंहों तक लटक रही है ?

सभी : उससे कुछ मत बोलो मैकबैथ ! सिर्फ उसकी बात सुनो ।

तीसरा पिशाच : शेर की तरह बहादुर और गर्वीला बन और मत पर-वाह कर कि कौन राज्य में दुःखी है, कौन नाराज़ है या कौन तेरे खिलाफ़ षड्यन्त्र रच रहा है । मैकबैथ को तब तक कोई नहीं गिरा सकता जब तक बरनम का वह विशाल वन उस ऊँची डन्सीनेन पहाड़ी तक आकर उससे टकरा न जाये ।

मैकबैथ : जो कभी भी नहीं हो सकता । क्या कोई एक वन को इस तरह अपने काबू में ले सकता है ? क्या कोई पेड़ों को यह आज्ञा दे सकता है कि अपनी जड़ों से उखड़ कर चलो ? कोई नहीं । तब ओ मीठी भविष्यवाणी ! बहुत अच्छा । तब ओ बगावत के उठते हुए सिर ! झुक जा नीचे, झुक जा, उस समय तक जब तक बरनम का वह विशाल वन स्वयं बगावत करने न खड़ा हो जाय । महान मैकबैथ उतने ही दिनों तक जीवित रहेगा जितना भाग्य ने उसके लिये पहले तय किया था और मौत आयेगी भी तो उसी तरह स्वाभाविक रूप से आयेगी जैसे और सभी साधारण प्राणियों को आती है ।

लेकिन, फिर भी मेरा दिल एक बात जानने के लिये धड़क रहा

है। अपनी करामात से तू इतना बता सकता है तो बता कि क्या बेंको का पुत्र कभी भी इस साम्राज्य पर शासन करेगा ?

सभी : अधिक जानने की इच्छा मत कर मैकबैथ !

मैकबैथ : नहीं, मुझे इसका जवाब मिलना ही चाहिये, नहीं अगर तू मुझे नहीं बतायेगा तो हमेशा-हमेशा के लिये तू शाप से जलता रहेगा। बता मुझे। बता हैं ! यह देग़ यहाँ से कहाँ लुप्त हो गई ? क्या कोलाहल मच रहा है यह ?

[शहनाइयाँ बजती हैं ।]

पहली डाइन : दिखा दो उसे ।

दूसरी डाइन : दिखा दो उसे ।

तीसरी डाइन : दिखा दो उसे ।

सभी : दिखा दो यह सब उसे । होने दो दुःखी उसे । छाया बन कर आओ और उसी तरह चले जाओ ।

[आठ सम्राटों का एक प्रदर्शन । अन्तिम सम्राट अपने हाथ में एक गिलास लिये हुए है । बेंको की प्रेतात्मा पीछे से चल रही है ।]

मैकबैथ : कौन है तू ? तू भी बेंको की प्रेतात्मा से मिलता हुआ है; चला जा, मेरे सामने से । तेरे सिर पर रखा हुआ यह ताज मेरी आँखों को गरम लोहे की सलाखों की तरह जला रहा है । और तेरे इन बालों पर ओ दूसरे सम्राट ! जो यह सुनहरा ताज रखा हुआ है वह ठीक पहले सम्राट का-सा ही है । तीसरा भी उसी पहले की तरह है, तो क्यों मुझे यह सब कुछ दिखा रही हो ओ काली-कलूटी चुड़ैलो ? पर फिर चौथा सम्राट ? ओ, अच्छा हो कि मेरी आँखें मेरे सिर में से निकल पड़ें । क्या ! क्या यह पंक्ति प्रलय के आखिरी दिन तक इसी तरह बढ़ती चली जायेगी ? हैं ! फिर एक दूसरा ? वह सातवाँ सम्राट ! नहीं, नहीं देखूंगा अब और अधिक

में। पर फिर ! फिर यह आठवाँ सम्राट ? आ रहा है वह। उसके हाथ में जो गिलास है उसमें मुझे और भी न जाने कितने दिखाई दे रहे हैं। कुछ को तो मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ। वह देखो, वे दो-दो चक्र और तीन-तीन राजदण्ड ले कर जा रहे हैं। ओ, भयानक ! भयानक ! अब मैं देख रहा हूँ कि यह सब सत्य है क्योंकि खन से भींगा हुआ बैको मेरे ऊपर हँस रहा है और उनकी तरफ इशारा करके बता रहा है मुझे कि मैकबैथ ! ये हैं मेरे पुत्र और पौत्र।

[पिशाच चले जाते हैं।]

क्या ! क्या आखिर यही होगा ?

पहली डाइन : हाँ, सब ऐसा ही होगा। लेकिन मैकबैथ ! तू इससे इतनी चिन्ता और आश्चर्य में क्यों पड़ा हुआ है ? आओ बहनो ! चल कर हम उसे अच्छे-अच्छे खेल दिखायें और खुश करें। मैं तो हवा पर वह जादू कर दूंगी कि उससे संगीत के स्वर निकलेंगे और तुम अपना वही पुराना नाच नाचना जिससे यह महान सम्राट आभारी हो कर कह दे कि उसका स्वागत करके उसके प्रति अपने कर्तव्य का भली भाँति पालन किया है।

[गाना। डाइनें नाचती हैं और फिर हिकेट के साथ लुप्त हो जाती हैं।]

मैकबैथ : कहाँ गई वे ? क्या चली गई ? ओ अच्छा हो कि पाप से भरा हुआ वक्त हमेशा अभिशाप की आग से जलता रहे।
कौन है बाहर ? अन्दर आओ।

[लैनोक्स का प्रवेश]

लैनोक्स : सम्राट की क्या आज्ञा है ?

मैकबैथ : क्या तुमने उन डाइन बहनों को कहीं देखा ?

लैनोक्स : नहीं तो, मेरे स्वामी !

मैकबेथ : क्या वे तुम्हारे पास हो कर नहीं गई ?

लैनोक्स : विलकुल नहीं, मेरे स्वामी !

मैकबेथ : ओह ! भगवान करे कि जिधर से भी वे उड़ कर जायें उधर से ही हवा पूरी तरह जहरीली हो जाय और जो भी उनकी बातों पर भरोसा करते हैं वे उनसे भी पहले मिट जायें। क्यों ! मुझे अभी कुछ घोड़े की टापें सुनाई दी थीं। कौन इधर हो कर आया था ?

लैनोक्स : वही दो या तीन दूत हैं स्वामी ! जो आपको यह खबर देने आये हैं कि मैकडफ़ इङ्गलैण्ड भाग गया है।

मैकबेथ : इङ्गलैण्ड भाग गया !

लैनोक्स : जी हाँ, मेरे श्रेष्ठ स्वामी !

मैकबेथ : (स्वगत) ओ वक्त ! तू मुझसे भी आगे भाग रहा है और मेरे इरादों को पूरा होने से रोक रहा है। ठीक है, जब तक इरादे बनने के साथ-साथ ही पूरे नहीं किये जायेंगे तब तक ऐसी ही लापरवाही में सब कुछ बिगड़ता जायेगा। मैं इस क्षण से प्रण लेता हूँ कि ज्योंही मेरे हृदय में कोई उवाल आयेगा उसी क्षण वह काम मेरे हाथ से पूरा होगा। और अब जितने भी मेरे इरादे हैं उन्हें मैं पूरा करके ही रहूँगा। इधर सोचूँगा और उसी पल काम पूरा हो कर रहेगा। मैं मैकडफ़ के महल पर अचानक छापा मारूँगा और उस फाइफ़ को बांध लूँगा। उसकी औरत और बच्चों को और जो कोई भी अभाग उसके वेश में होगा उन सबके गले के आर-पार मेरी तलवार की नोंक होगी। बढ़-बढ़ कर बातें करने से तो क्या फायदा है पर मैं कहता हूँ कि अपने इरादों की आग ठंडी पड़ने से पहले मैं अवश्य यह काम पूरा करूँगा।

बस, अब मैं और कुछ देखना नहीं चाहता। बस ! हाँ, कहाँ हैं वे

दूत । चलो, मुझे उनके पास ले चलो ।

[जाते हैं ।]

दृश्य २

[मैकडफ का महल । लेडी मैकडफ, उसके पुत्र तथा रौस का प्रवेश]

लेडी मैकडफ : क्यों देश छोड़ कर भाग गये वे ? आखिर ऐसा क्या किया था उन्होंने ?

रौस : धीरज रखिये, देवी !

लेडी मैकडफ : उन्होंने ही धीरज क्यों न रखा ? उन्होंने यह पागलों का-सा काम किया है । अब तुम्हीं सोचो, अगर हमारे कार्यों से नहीं तो इस तरह हमारे डर से हम अवश्य विश्वासघाती समझे जायेंगे ।

रौस : आप अभी यह नहीं जानतीं देवी ! कि उनका इस तरह भाग जाना उनकी बुद्धिमानी है या केवल डर है !

लेडी मैकडफ : बुद्धिमानी ? क्या यही बुद्धिमानी है कि ऐसी जगह पर जहाँ से उन्हें खुद भागना पड़ा अपनी स्त्री, नन्हे-नन्हे बच्चों, सारी सम्पत्ति, घर और सम्मान को छोड़ जायें ? उन्हें हमसे कोई प्रेम नहीं है । मैं कहती हूँ, हमारे प्रति उनके हृदय का स्वाभाविक प्रेम पूरी तरह मर चुका है । देखो तो, एक छोटी से छोटी गरीब चिड़िया भी अपने बच्चों को उल्लू के खूँवार पंजे से किसी तरह दूर ही रखती है, उनकी हर तरह रखवाली करती है । और कुछ भी नहीं, यह सब उनका डर है । उनके हृदय में प्रेम नहीं है । तुम्हीं बताओ, क्या बुद्धिमानी है उनके इस तरह भाग जाने में । मुझे तो कोई भी कारण समझ में नहीं आता ।

रौस : नहीं, मेरी प्यारी बहिन ! मैं प्रार्थना करता हूँ, थोड़ा अपने आपको सँभालिये । आपके पति ऐसे नहीं हैं । मैं सच कहता हूँ, वे

बहुत ही बुद्धिमान, और महान हैं और इस समय की क्रूर गति को सबसे अच्छी तरह पहचानते हैं। वस उससे आगे कुछ कहने की मेरी हिम्मत नहीं होती लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि समय वही सबसे बुरा और दुर्भाग्यपूर्ण होता है जब हम विश्वासघाती होते हुए भी यह नहीं जानते कि हम क्या हैं; जब कि जो इधर-उधर अफवाहें उड़ती हैं उन्हें सुन कर डरने लगते हैं और फिर भी यह नहीं जानते कि हम डर किससे रहे हैं और सन्देह तथा चिन्ता की उठती लहरों में इधर-उधर मारे-मारे फिकते रहते हैं।

अच्छा, अब मुझे आज्ञा दीजिये। कुछ ही क्षणों में फिर मैं आपके पास आ जाऊँगा। यह समझ लो, कि जो भी खतरे से भरा हुआ काला वस्तु अब चल रहा है, वह या तो खतम हो ही जायेगा और अगर नहीं हुआ तो फिर और भी ज्यादा खतरनाक हो जायेगा। और भी काला हो जायेगा। वस भगवान आपको सुखी रखें, यही मेरी कामना है मेरी प्यारी बहिन !

लेडी मैकडफ़ : अपने पिता के जीवित रहते हुए भी मेरे यह लाल आज्ञा अनाथ जैसे हो गये हैं।

रौत : अच्छा, अब अगर अधिक देर तक मैं यहाँ ठहरूँगा तो स्वयं मूर्ख बन जाऊँगा। कब तक हृदय के इस दुःख को अन्दर ही अन्दर छिपाता रहूँगा ? नहीं, इससे मेरे पौरुष पर धब्बा लगेगा और तुम्हें भी और अधिक दुख होगा बहिन ! इसलिये, वस, अब मैं तुरन्त यहाँ से जाना चाहता हूँ। अलविदा !

[जाता है।]

[लेडी मैकडफ़ अपने पुत्र से बातें करती है।]

लेडी मैकडफ़ : बेटा ! तुम्हारे पिता तो इस संसार से चल बसे। अब

क्या करोगे तुम ? किस तरह अपने जीवन के दिन बिताओगे बेटा ?

पुत्र : जैसे भगवान की इस दुनिया में और पक्षी अपने जीवन के दिन बिताते हैं वैसे ही मैं बिताऊँगा माँ !

लेडी मैकडफ़ : क्या, कीड़े-मकोड़ों के साथ ?

पुत्र : मेरा मतलब है माँ ! कि जो कुछ भी भगवान मुझे देगा उसी से मैं अपना जीवन बिताऊँगा । पक्षी इसी तरह तो जीवित रहते हैं ।

लेडी मैकडफ़ : ओ गरीब चिड़िया ! तुझे किसी जाल या गड्ढे में फसने से डर नहीं लगता ?

पुत्र : क्यों डरूँ माँ ? क्या ये जाल या गड्ढे बेचारी गरीब चिड़ियाओं के लिये ही बनाये गये हैं ? तुम चाहे कितना भी कहो पर मैं जानता हूँ कि मेरे पिता अभी जीवित हैं ।

लेडी मैकडफ़ : नहीं बेटा ! मैं सच कहती हूँ वे मर गये । अब बताओ, बिना पिता के तुम इस दुनिया में कैसे रहोगे ?

पुत्र : बिना पिता के तुम कैसे रहोगी माँ ?

लेडी मैकडफ़ : क्यों, मेरा क्या, मैं तो किसी बाज़ार से बीसों पति खरीद सकती हूँ ।

पुत्र : तो फिर उन्हें फिर बेचने के लिये ही खरीदोगी न माँ ?

लेडी मैकडफ़ : अरे, तुम तो अपनी पूरी अक्ल लगा कर जवाब दे रहे हो । फिर भी ठीक इतनी ही अक्ल तुम्हारे लिये पर्याप्त भी है ।

पुत्र : क्यों माँ ? क्या मेरे पिता कोई विश्वासघाती थे ?

लेडी मैकडफ़ : हाँ, वे विश्वासघाती थे बेटा !

पुत्र : विश्वासघाती कौन होता है माँ ?

लेडी मैकडफ़ : वही जो वचन दे कर उसी के विरुद्ध कार्य करता है ।

पुत्र : क्या ऐसा करने वाले सभी विश्वासघाती होते हैं माँ ?

लेडी मैकडफ़ : हाँ, ऐसे विश्वासघाती होते हैं और उन्हें तो फाँसी के तख्ते पर लटका देना चाहिये बेटा !

पुत्र : और उन सबों को भी माँ ! जो अपना ईमान उठाते हुए भूठ बोलते हैं ?

लेडी मैकडफ़ : हर एक को ।

पुत्र : पर कौन लटकायेगा फाँसी के तख्ते पर उन्हें माँ ?

लेडी मैकडफ़ : ईमानदार आदमी लटकायेंगे बेटा !

पुत्र : तब तो भूठा ईमान उठाने वाले मूर्ख हैं माँ ! क्योंकि उनकी संख्या तो इतनी अधिक है कि अगर वे चाहें तो वे उलटे उन ईमानदार आदमियों को ही पीट कर फाँसी पर लटका सकते हैं ।

लेडी मैकडफ़ : अब भगवान ही तेरी देखभाल करे मेरे छोटे-से बन्दर ! लेकिन बिना पिता के तू रहेगा कैसे ?

पुत्र : पर हाँ, अगर वे मर जाते तो तुम उनके लिये रोती माँ ! तुम तो रोई नहीं इसलिये यह तो बहुत अच्छा संकेत है कि अगर वे नहीं तो मुझे जल्दी ही दूसरे पिता मिलने वाले हैं !

लेडी मैकडफ़ : ओ बातून ! तू बातें कैसी अच्छी-अच्छी बनाना सीख गया है ।

[एक दूत का प्रवेश]

दूत : भगवान आपको बचाए ओ देवी ! आप मुझे नहीं जानतीं यद्यपि आपके उच्चपद के कारण मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ । मुझे डर है कि कोई खतरा जल्दी ही आपके सिर पर आने वाला है । अगर आप एक सीधे और सच्चे आदमी की सलाह मानें तो यहाँ अब एक पल भी मत रहिये देवी ! फौरन अपने बच्चों को ले कर अपनी जीवन-रक्षा के लिये यहाँ से भाग जाइये । मौत आ रही है देवी ! भाग जाओ यहाँ से । हाँ, मैं जानता हूँ कि मेरे इन शब्दों

से आपको डराते हुए मैं आपके प्रति कठोरता का व्यवहार कर रहा हूँ लेकिन सच कह रहा हूँ देवी ! अगर मैं अब भी आपको उस खतरे की सूचना न दूँ, जो ठीक आपके सिर पर आ चुका है, तो उससे भी कहीं अधिक मैं निर्दयी हूँगा । भगवान आपकी रक्षा करे । वस अधिक देर तक यहाँ ठहरने का साहस मैं नहीं कर सकता ।

[जाता है ।]

लेडी मैकडफ़ : कहाँ भाग कर जाऊँ मैं ? मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है ? लेकिन हाँ, याद आया मुझे । क्यों भूल रही हूँ मैं कि मैं उस अभागी दुनियाँ में हूँ जहाँ किसी को नुकसान पहुँचाना ही सराहनीय कार्य गिना जाता है । किसी की भलाई करने के बराबर और क्या मूर्खता होगी जिससे न जाने कितने खतरे सिर पर खड़े हो जाते हैं । तो फिर हाय ! मैं क्यों एक अबला की तरह पुकार कर कि मैंने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा है, अपनी रक्षा के लिये आशा करती हूँ ?

(चौंक कर) हैं ! कौन हैं ये ? कौन हो तुम ?

[हत्यारे प्रवेश करते हैं ।]

हत्यारा : कहाँ है तेरा पति ?

लेडी मैकडफ़ : वे ऐसे किसी पाप भरे हुए स्थान पर नहीं हैं जहाँ तुम जैसे पापी उन्हें पा सकें ।

हत्यारा : वह विश्वासघाती है ।

पुत्र : झूठ बोलता है तू ! तू जरूर कोई बदमाश है ।

पहला हत्यारा : ओ छोटे से अण्डे ! तू ! ... (बच्चे के पेट में कटार भोंकता है ।) जा ओ गद्दार की औलाद !

पुत्र : माँ ! ओ माँ ! मुझे मार डाला है इसने ! तुम भाग जाओ

माँ ! मैं कहता हूँ अपने जीवन के लिये यहाँ से भाग जाओ । लो मैं चला ।

[मरता है ।]

[नेडी मँकडफ़ 'खून ! खून !' चिल्लाती हुई बाहर भागती है और हत्यारे उसका पीछा करते हैं ।]

दृश्य ३

[इङ्गलैंड । राजमहल के सामने मैलकॉम और मँकडफ़ का प्रवेश]

मैलकॉम : तो चलो किसी जगह पर चलें और कुछ देर वहीं आँसू बहा कर अपने जी का भार हलका कर लें ।

मँकडफ़ : नहीं, यह क्यों ? इसकी वजाय तो क्यों नहीं इस खून की प्यासी तलवार को हम अपने हाथ में लें और बहादुरों की तरह उस चाण्डाल के जुल्मों से कुचले हुए अपने दुःखी देश को आज़ाद करें जो कि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । हर एक दिन जब सुबह उस स्कॉटलैंड की भूमि पर सूरज अपनी आँख खोलता है तो न जाने कितनी विधवाएँ उसे अपने-अपने पतियों के शवों पर गला फाड़ कर रोती हुई मिलती हैं, न जाने कितने अनाथ बच्चे उसकी तरफ़ देख कर निस्सहाय से पुकार उठते हैं । क्या बताऊँ, हर एक दिन नये दुःख का तोफ़ा ले कर आता है जिससे बेचारे बेगरीब लोग रात और दिन रोते-चीखते हैं । कहा नहीं जाता राजकुमार ! स्वयं आकाश भी उनके इस हाहाकार को सुन कर उनकी सहानुभूति में रो उठता है ।

मैलकॉम : बस, जो कुछ भी मैं सुनता हूँ उस पर पूरी तरह विश्वास करता हूँ और यही विश्वास मुझे रलाता है । मैं अवश्य मेरे उस दुःखी देश

को इस दयनीय अवस्था से मुक्त करूँगा। वस किसी ठीक मौके की मुझे इन्तज़ार है; तुम जैसे कह रहे हो हो सकता है वही हालत वहाँ हो। जानते हो, यह चाण्डाल तो एक दिन बहुत ईमानदार और सच्चा आदमी समझा जाता था और आज जब हम उसका नाम भी लेते हैं तो हमारी जीभ तक जलने लगती है? तुम भी तो उसे बहुत प्यार करते थे न? तुम्हें वह अभी तक कोई आँच नहीं पहुँचा सका है। मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं तो अब मुसीबतों का मारा एक छोटा-सा और महत्वहीन आदमी हूँ। तुम मुझ जैसे कमजोर, गरीब और बेगुनाह आदमी को उस आग उगलते देवता की क्रोधाग्नि में डाल कर क्यों नहीं कोई बुद्धिमानी का काम करते हो? इससे तुम्हें वह बहुत कुछ देगा।

मैकडफ़ : वस, मैं विश्वासघाती नहीं हूँ राजकुमार !

मैलकॉम : लेकिन मैकबैथ तो है। राजा की आज्ञा के दबाव में अच्छे से अच्छे व्यक्ति भी अपने सच्चे रास्ते से डिग जाते हैं। लेकिन क्षमा करना मुझे, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। जो कुछ भी तुम हो मेरे शक करने से बदल थोड़े ही सकते हो। देवता आज भी उतने ही सुन्दर हैं चाहे उनमें से अधिकांश सुन्दर से सुन्दर नीचे गिर चुके हैं। चाहे जो चीज़ें बुरी और पतित हैं अच्छाई का रूप धारण कर लें तो भी क्या अच्छाई के रूप में कभी कोई अन्तर आ सकता है ?

मैकडफ़ : तब क्या मैं अपने उस दुःखी देश के लिये जो-जो आशा बना कर आया था वे हमेशा के लिये मिट गई ?

मैलकॉम : तुमने यह और क्या नादानी की कि इस जल्दी में अपने स्त्री और बच्चों को वहाँ छोड़ आये। इस तरह उन्हें अकेला और निस्सहाय छोड़ कर क्यों तुमने उनके प्रेम को ठुकरा दिया ? जिन

स्नेह के बन्धनों में प्रकृति ने तुम्हें एक दूसरे से बाँधा है क्यों तोड़ दिया उन्हें तुमने ? शायद इसीसे तुम पर मेरा शक हुआ है पर फिर भी मैं तुमसे यह प्रार्थना करता हूँ कि इससे यह न समझो कि मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति कोई बुरी भावना पहले से है लेकिन मुझे हर समय अपने जीवन की रक्षा के विषय में शंका बनी रहती है । इससे तुम यह कभी न सोचना कि मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ इससे मेरा यह मतलब है कि तुम कोई अच्छे और सच्चे व्यक्ति नहीं हो ।

मैकडॉग : तो फिर ओ मेरी अभागी मातृभूमि ! बहने दे इस खून को तेरे शरीर से ! सूख जाने दे अपनी एक-एक धमनी को ! ओ जुल्मों की आग ! जमा ले अपनी जड़ें और भी मजबूती के साथ क्योंकि मनुष्य की अच्छाई में तुम्हें रोकने का साहस नहीं है । जलाती जा उन निस्सहाय प्राणियों को क्योंकि अब तो तुम्हें इसका खुला अधिकार मिल चुका है ।

अच्छा मेरे स्वामी ! विदा ! जैसा तुम सोचते हो वैसा नीच मैं नहीं हूँ और न हो सकता हूँ चाहे इस चाण्डाल का पूरा राज्य और इससे भी अधिक पूर्व दिशा के समृद्धशाली राज्य भी मुझे क्यों न बदले में मिलें ।

मैलकॉम : मेरी बात का बुरा न मानो । जो कुछ भी मैंने तुमसे कहा है वह पूरी तरह तुम पर शक करके नहीं कहा है । मैं जानता हूँ, हमारा देश इस समय जुल्मों के पंजे के नीचे दबा हुआ हाहाकार कर रहा है । इसी से इसके निस्सहाय प्राणी नित्य रोते हैं, उनके शरीरों से खून बहता है और एक-एक दिन मेरे इस दुःखी देश के घावों की पीड़ा बढ़ती ही जाती है । जहाँ तक मैं सोचता हूँ इससे कुछ लोग तो स्कॉटलैण्ड में मेरा साथ देंगे और इधर इङ्गलैण्ड के

उदार सम्राट ने हजारों की संख्या में सैनिक मेरे साथ भेजने का वायदा किया है। लेकिन इस सबसे जब मैं उस चाण्डाल जालिम का सिर कुचलूंगा और उसे काट कर अपनी तलवार की नोक पर लगाऊंगा तब भी क्या यह देश जुल्मों से छुटकारा पा जायेगा ? न जाने फिर भी कितने ही जुल्म इसकी जमीन पर होते रहेंगे जो शायद पहले नहीं हुए होंगे। जो भी इसके बाद सम्राट बनेगा वह तो और भी अनेक तरह के जुल्म करके निस्सहाय प्राणियों को अधिक रूलायेगा।

मैकडफ़ : कौन होगा वह ?

मैलकॉम : मैं अपनी ही बात कह रहा हूँ क्योंकि मैं अपने चरित्र को अच्छी तरह जानता हूँ। जितनी भी बुराइयाँ और पाप हो सकते हैं वे सब मुझमें इस तरह जड़ जमाये हुए हैं कि जब वे बाहर आयेंगे तो सब पापों से काला वह मैकवैथ भी मेरे सामने बर्फ की तरह सफ़ेद और पवित्र चमकेगा। तब यह दुःखी देश मेरे अनगिनती जुल्मों के मुकाबले में उसे एक सीधा और नादान मेमना समझेगा।

मैकडफ़ : क्या ? नहीं ! काले से काले, डरावने असंख्य नरकों में भी उस मैकवैथ जैसा पापी और चाण्डाल नहीं मिलेगा।

मैलकॉम : मैं मानता हूँ कि वह खून का प्यासा है, लालची है, भूठा है, धोखेबाज़, दुष्ट, उतावला, ऐय्याश सब कुछ है और इसके भी अलावा जितनी बुराइयाँ हो सकती हैं वे सब उसमें हैं लेकिन मेरे स्वभाव में जो लालच और ऐय्याशी है उसकी तो कोई थाह नहीं है, फिर तुम्हीं बताओ, कि ऐसे आदमी के मुकाबिले में मैकवैथ क्यों सम्राट बनने के अधिक योग्य नहीं है ?

मैकडफ़ : लेकिन इस तरह सीमा से बाहर अपनी इन्द्रियों को बस में न

रखना तो अपने ऊपर अत्याचार करने के बराबर है क्योंकि इससे तो मनुष्य की सारी बुद्धि और चेतना ही मारी जाती है। यही कारण तो कितने ही राजाओं के पतन का कारण बना और इसी से कितनी ही राजगदियाँ समय से पहले ही सूनी हो गईं। लेकिन कुछ भी हो, जो तुम्हारे अधिकार की वस्तु है उसे तुम लेने में क्यों डरते हो ? अगर तुम फिर ऐश्याशी करना चाहते हो तो क्या छिपे रूप से नहीं कर सकते जिससे बाहर सभी को यही मालूम होता रहे कि सम्राट अपने चरित्र में पूरी तरह उज्ज्वल हैं।

मेलकॉम : लेकिन क्या बताऊँ, इसके साथ-साथ मुझमें एक दूसरा भी तो दोष है और वह है मेरा लालच जिसकी तृप्ति कभी हो ही नहीं सकती। अगर मैं सम्राट हो गया तो सबसे पहले मैं चाहूँगा कि राज्य के सरदारों की सारी जागीरें हड़प लूँ। किसी की दौलत को दबा लूँ, किसी के घर पर कब्जा कर लूँ। बस यह समझ लो, जितना अधिक मुझे मिलता जायेगा उतनी ही अधिक मेरी भूख बढ़ती जायेगी। इससे हो सकता है कि अच्छे और राजभक्त लोगों की भी धन-दौलत मुझे अन्यायपूर्ण ढंग से लूट लेनी पड़े जो पूरी तरह उनकी बरबादी का कारण होगा।

मैकडफ़ : तो फिर उस बढ़ती हुई लालच से तो इन्द्रियों के विलास की वह क्षणिक इच्छा, जो ग्रीष्म ऋतु की तरह अल्पकालीन होती है, कहीं कम है। यह लालच तो बहुत नीचे तक अपनी जड़ें जमाती है और उससे भी कहीं अधिक मनुष्य के लिये घातक है। यह तो उस तलवार की तरह है जिसने अनेकों राजाओं को मौत के घाट उतार दिया हो और फिर भी खून की प्यासी हो। लेकिन हाँ, डरो नहीं फिर भी। स्कॉटलैण्ड के अन्दर किस चीज़ की कमी है जिससे तुम्हारी भूख न मिट सके। तुम्हारे स्वयं के अधिकार में ही

इतना अधिक है। तुम्हारे ये सब दोष सहन करने योग्य हैं स्वामी !
बशर्ते तुम अपने दूसरे अच्छे गुणों से इनकी पूर्ति कर लो।

मैलकॉम : लेकिन मुझमें तो कोई भी गुण नहीं है। एक अच्छे राजा के जो भी गुण होते हैं जैसे न्याय, सच्चवाई, आत्मसंयम, दृढ़ता, उदारता, धैर्य, दया, विनीत भाव, भक्ति, वीरता और साहस इनमें से कोई भी तो मुझमें नहीं है बल्कि मैं तो एक ही बुराई को न जाने कितनी तरह से करता हूँ। इस तरह एक पाप के अन्दर ही अनेक पापों का भागी हूँ। अगर मेरी ताकत में यह भी होता कि आपस के सद्भाव और सहयोग के इस मीठे दूध को नरक की उस जलती आग में फेंक दूँ और दुनिया की शान्ति और एकता को नष्ट करने के लिये एक तूफान खड़ा कर दूँ तो मैं उसे अवश्य करता।

मैकडफ़ : तब ओ स्कॉटलैण्ड ! ओ मेरी निस्सहाय मातृभूमि !!

मैलकॉम : अब बोलो, अगर तुम चाहते हो कि ऐसा व्यक्ति जा कर स्कॉटलैण्ड पर राज्य करे तो चलो मैं हूँ।

मैकडफ़ : नहीं ! नहीं ! राज्य करने योग्य तो क्या जीवित रहने के योग्य भी नहीं है ऐसा व्यक्ति। ओ मेरे दुःखी देश ! जो यह चाण्डाल इस खून से भीगे राजदण्ड को ले कर तेरे ऊपर अनधिकार रूप से राज्य कर रहा है उससे कब मुक्ति पा कर तू अपने अच्छे दिन देखेगा ? तेरा सच्चा स्वामी तो अपने चरित्र में न जाने कितने दोष देख कर अपने जन्म पर धब्बा लगा रहा है और अपने आप को पापी और अपराधी कह रहा है।

अच्छा, मेरे स्वामी ! अलविदा ! जाता हूँ पर मैं भूला नहीं कि तुम्हारे पिता कितने उज्ज्वल चरित्र और उदार हृदय वाले सम्राट थे और महारानी, तुम्हारी माँ जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया है कैसी थीं वे ? कितनी देर तक अपने घुटनों पर झुक कर भगवान् से

प्रार्थना किया करती थीं और वह बहादुर महारानी प्रतिदिन अपनी मौत का सामना करने के लिये तैयार रहती थी। अच्छा, अल-विदा ! यह बताओ कि जो भी दोष तुम अपने चरित्र में बता रहे हो क्या इन्हीं की आशा में मैं आज स्कॉटलैण्ड से निर्वासित हो गया हूँ ? बस, ओ मेरे हृदय ! तेरी अब तक की बनाई सारी आशाओं का यहाँ अन्त होता है !

मैलकॉम : मेरे मैकडफ़ ! तुम्हारे सच्चे हृदय से उत्पन्न भावों ने मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति पैदा हुए काले दागों को पूरी तरह धो दिया है और मुझे तुम्हारी सच्चाई पर पूरा भरोसा है। मैं तुम्हारा हृदय से सम्मान करता हूँ मैकडफ़ ! वह शैतान मैकबैथ मुझे अपने पंजे में लेने का बहुत प्रयत्न कर रहा है इसी लिये पहले पहल मुझे किसी पर भी विश्वास नहीं होता है और न ही मुझे करना चाहिये। लेकिन अब हम सबके ऊपर बैठा हुआ वह भगवान ही हमारे बीच है। मैं अब पूरी तरह से अपने आपको तुम्हारे बताये मार्ग पर चलने के लिये छोड़ देता हूँ और जो भी दोषारोपण मैंने अपने ऊपर किया है उसे वापिस लेता हूँ क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि इन दोषों में से मैं किसी को जानता तक नहीं। मैंने न तो अभी तक किसी स्त्री को जाना है और न कभी अपना दिया वचन ही तोड़ा है। दूसरे की तो क्या अपनी स्वयं की वस्तुओं के लिये भी मेरे हृदय में कभी लालच पैदा नहीं हुई। मैं सच कहता हूँ, आज तक मैंने किसी के साथ भी विश्वासघात नहीं किया; यहाँ तक कि स्वयं शैतान के साथ भी मैं विश्वासघात नहीं कर सकता मैकडफ़ ! सत्य के मार्ग पर ही जितना सुख मुझे मिल सकता है वही मेरा है। मैंने अपने बारे में ये बुरी-बुरी बातें कह कर जीवन में पहली बार ही झूठ बोला है। वास्तव में जो भी गुण मुझमें हैं उन्हें

तुम्हारे और मेरे दुःखी देश के अर्पित करता हूँ जहाँ जाने के लिये वृद्ध सेनापति सिवार्ड दस हजार सैनिकों सहित तुम्हारे आने से पहले ही तैय्यार है और बस यहाँ से चलने वाले ही हैं। अब हम सभी एक साथ चलेगे। जैसा न्यायपूर्ण हमारे देश पर हमारा अधिकार है वैसे ही हमारी विजय के भी अच्छे आसार हैं।

क्यों ! तुम चुप क्यों हो ?

मैकडफ़ : इतने बुरे और अच्छे भाव एक ही साथ ! ओह ! इन्हें आपस में मिलाना कितना कठिन है !

[एक डाक्टर का प्रवेश]

मैलकॉम : बस, एक क्षण में फिर इसी पर बात करेंगे। पर क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि सम्राट राजमहल के बाहर आज आयेंगे या नहीं ?

डाक्टर : हाँ अवश्य श्रीमान् ! बेचारे कुछ दुःखी-बीमार लोग बाहर अपने इलाज के लिये उन्हीं की प्रतीक्षा में खड़े हैं। बड़ी से बड़ी विद्या वाले डाक्टर भी उनकी बीमारी को देख कर असमंजस में पड़ गये हैं लेकिन भगवान सम्राट के हाथ में ऐसी पवित्रता दी है कि उसके छूते ही वे सब अच्छे हो जाते हैं।

मैलकॉम : मेरी ओर से आपको धन्यवाद है डाक्टर !

[डाक्टर जाता है।]

मैकडफ़ : किसी बीमार के बारे में कह रहे थे ये ?

मैलकॉम : इसे 'किंग्स ईविल'^१ (राजा का पाप) कहते हैं। पवित्र हृदय

१. King's Evil—गण्डमाला नाम की बीमारी। इसे 'किंग्स ईविल' (राजा का पाप) इसी लिये कह कर पुकारते हैं क्योंकि इंगलैण्ड में यह अन्ध-विश्वास चला आ रहा था कि राजा के स्पर्श करने मात्र से ही यह बीमारी ठीक हो जाती है। इसका वर्णन करके हो सकता है शेक्सपियर 'सम्राट जेम्स' को उच्च सम्मान देना चाहता हो।

वाले सम्राट में यह एक ऐसा आश्चर्यजनक गुण है कि जब से मैं यहाँ इङ्ग्लैण्ड में हूँ तभी से इन्हें ऐसा करता देख रहा हूँ। कैसे वे अपने में यह देवी शक्ति ले आते हैं इसे तो वे ही जानते हैं। अजीब-अजीब बीमारियों से पीड़ित लोग पूरी तरह सूजे हुए और पूरी तरह घावों से पके हुए उनके पास आते हैं। सच कहता हूँ, उन बीमारों की दयनीय अवस्था देख कर आँखों में आँसू आ जाते हैं। जिनका इलाज डाक्टरी विद्या के पास नहीं है उनकी गरदन में वे सोने का ताबीज बांध देते हैं और उस पर कुछ मन्त्र पढ़ कर बीमार को अच्छा कर देते हैं। यह भी कहा जाता है कि जो भी सम्राट होता है वह अपने उत्तराधिकारियों के लिये यह गुण अवश्य सिखा कर जाता है। इस गुण के अलावा भी न जाने कितने ही गुण सम्राट में हैं जैसे भविष्य की बात बता देना आदि। कितने ही तो यहाँ तक कहते हैं कि सम्राट में ईश्वरीय शक्ति पूरी तरह समाई हुई है।

[रौस का प्रवेश]

मैकडफ़ : वह देखो, कौन आ रहा है ?

मैलकॉम : यह तो मेरा कोई देशवासी लगता है पर फिर भी इसे मैं जानता तो नहीं हूँ।

मैकडफ़ : ओ, आओ मेरे प्यारे भाई ! स्वागत है।

मैलकॉम : अब मैं इसे पहचान गया। हे भगवान ! तुमने कितने ठीक समय पर उन सब कारणों को दूर कर दिया जिनसे हम एक दूसरे को अजीब तरह से समझे हुए थे।

रौस : आमीन ! भाई !

मैकडफ़ : क्यों रौस ! बताओ, क्या हमारा देश उसी तरह दुःखी है जैसा पहले था ?

रौस : हाय ! मेरे दुःखी देश ! आतंक इस हद तक बढ़ चुका है कि मनुष्य को अपने आपसे डर लगने लगा है। अब स्कॉटलैण्ड हमारी मातृभूमि नहीं रह गया। बल्कि इसे तो अब कब्रिस्तान कहना अच्छा होगा जहाँ कोई भी खुशी से मुस्कराता हुआ नहीं दिखाई दे सकता। हाँ, इस आतंक के बीच वही थोड़ा-बहुत मुस्करा सकता है जिसे अभी कुछ भी पता न हो। अब हमारी उस मातृभूमि कहलाने वाले देश में पल-पल पर आह और चीत्कार सुनाई देती है जिसकी तरफ कोई भी ध्यान देने वाला नहीं है। चारों तरफ उन्मादित-सी हो कर वेदना और हाहाकार इस तरह फिर रहा है मानो वहाँ के लिये यह स्वाभाविक हो चुका हो। मैं सच कहता हूँ, निस्सहाय प्राणी मरते हैं तो उनके शवों को देख कर यह तक कोई पूछने वाला नहीं है कि कौन ये इस दुनिया को छोड़ कर चले जा रहे हैं। कहाँ तक कहूँ, जो अच्छे और भले आदमी हैं उनके जीवन का भी क्या है; अभी उनके सिर पर सम्मान के साथ खिले हुए फूल रखे जाते हैं और कुछ ही क्षणों में इससे पहले कि वे फूल मुरझा कर गिर जायें उनकी गरदन ही उस चाण्डाल के हाथों कट कर ज़मीन पर गिर जाती है।

मेकडफ़ : मेरे प्यारे भाई ! जो कुछ भी तुम कह रहे हो वह सब ठीक है। तुम अच्छी तरह से सब कुछ वर्णन कर रहे हो।

मेककॉम : लेकिन अभी हाल की खबर क्या है ?

रौस : स्वामी ! एक घंटे पहले की भी खबर इतनी पुरानी पड़ जाती है कि कोई उस पर ध्यान तक नहीं देता। वहाँ तो प्रति पल नई-नई आफ़तें आती हैं और प्रति पल ही नई खबरें पैदा होती हैं।

मेकडफ़ : मेरी पत्नी कैसे है ?

रौस : क्यों ! अच्छी तरह से है।

मैकडफ़ : और मेरे सभी बच्चे ?

रौस : वे भी अच्छे हैं ।

मैकडफ़ : उस चाण्डाल ने उन्हें सताया तो नहीं ?

रौस : नहीं जब मैं चला था तब तक तो वे कुशलपूर्वक थे ।

मैकडफ़ : छिपाओ नहीं भाई ! मुझे लगता है कि तुम कुछ कहना चाहते हो पर अपने आपको रोक रहे हो । कहो, सच बताओ मेरे भाई ! कैसे हैं वे ?

रौस : अपने हृदय के दुःख को ले कर जब मैं इधर आ रहा था तब एक अफ़वाह मेरे कानों तक उड़ती हुई-सी आई थी कि राज्य के बहुत से भले आदमियों ने उस दुष्ट के विरुद्ध हथियार उठा लिये हैं । इस बात पर मेरा विश्वास उस समय और भी पक्का हो गया जब मैंने स्वयं आँखों से उस ज़ालिम की फौजों को चलते हुए देखा । इसी समय हमारी सहायता की आवश्यकता है । अगर इस समय स्वामी ! आप स्कॉटलैण्ड पहुँच जायें तो सैनिक तो दूने उत्साह से लड़ेंगे ही यहाँ तक कि अबला स्त्रियाँ भी अपने देश के दुःख का निवारण करने के लिये उस ज़ालिम के खिलाफ़ हथियार उठा लेंगी ।

मैलकॉम : अच्छा, तो फिर उन्हें किसी तरह इस खबर से सन्तोष मिलना चाहिये कि हम आ रहे हैं । इङ्गलैण्ड के उदार और सहिष्णु सम्राट हमारे साथ सुयोग्य सेनापति सिवार्ड तथा दस हजार सैनिकों को भेज रहे हैं । सिवार्ड से बढ़ कर इस पूरे संसार (Christendom) में कौन अनुभवी और अच्छा सैनिक है ?

रौस : ओ ! काश ! जैसी अच्छी खबर है वैसा ही अच्छा उत्तर मैं आपको दे पाता ! लेकिन मेरे पास इसके लिये शब्द नहीं हैं । जो कुछ भी हैं वे तो सिर्फ किसी निर्जन वन में पुकारे जाने चाहियें जहाँ कोई उन्हें न सुन सके ।

मैकडफ़ : किससे सम्बन्धित हैं तुम्हारे वे शब्द मेरे भाई ! क्या सर्व-साधारण से सम्बन्ध रखने वाली कोई बात है या उनमें किसी एक ही व्यक्ति के जीवन का दुःख छिपा है ?

रौस : प्रत्येक मनुष्य जिसका भी हृदय सच्चा है वही इस दुःख का भागी है लेकिन भाई ! इसका मुख्य सम्बन्ध तुम्हारे ही जीवन से है ।

मैकडफ़ : अगर मेरे जीवन से है तो बताओ । मुझसे अब छिपाओ नहीं भाई ! बता दो मुझे शीघ्र क्या बात है ?

रौस : पर मुझे डर है कि यह सुन कर तुम्हारे कान मेरी जीभ से घृणा न करने लग जायें क्योंकि वे ऐसा ही दुःखदायी समाचार सुनेंगे जैसा किसी ने कभी नहीं सुना होगा ।

मैकडफ़ : ठीक है ! मैं समझ गया । मैं समझ गया भाई ! जो तुम कहोगे ।

रौस : तुम्हारे महल पर अचानक ही उस ज़ालिम ने छापा मार कर अधिकार कर लिया और तुम्हारी स्त्री और बच्चों को निर्दयता से अपनी तलवार के घाट उतार दिया । वस अब आगे मत पूछो । अगर उस मृत्यु-काण्ड की सारी बातें तुम्हें बताने लगूंगा तो सच भाई ! उन अभागों के साथ तुम भी इसी क्षण इस संसार से चल वसोगे ।

मैलकॉम : हैं ! हे दयालु ईश्वर ! क्या है यह तेरा बनाया हुआ प्राणी ! मैकडफ़ ! मेरा भाई ! इस तरह अपनी आँखों के आँसुओं को छिपाने का प्रयत्न न करो । बह जाने दो हृदय की इस पीड़ा को । रोओ मेरे भाई ! बोलो कुछ । इस तरह आँखें फाड़े गुमसुम न खड़े रहो । जो पीड़ा अन्दर ही अन्दर दबी रह जाती है और किसी तरह बाहर नहीं निकल पाती उससे हृदय फट जाता है ।

मैकडफ़ : क्या मेरे वे लाल तक भी उस चाण्डाल की तलवार से नहीं वचे ?

रौस : कोई भी नहीं। स्त्री-वच्चे जो कुछ भी उनके सामने आया उनकी ही गरदन कट-कट कर ज़मीन पर गिर पड़ीं।

मैकडफ़ : और ऐसे समय में मैं यहाँ था ! ओह ! क्या मेरी पत्नी भी मुझे छोड़ कर चली गई ?

रौस : हाँ, मैं पहले ही बता चुका हूँ।

मैलकॉम : धैर्य रखो मैकडफ़ ! हम उनके खून की एक-एक बूंद का बदला लेंगे।

मैकडफ़ : क्या उस चाण्डाल के वच्चे नहीं हैं जो उसका हाथ मेरे मासूम बच्चों पर उठा। मेरे प्यारे लाल ! कहाँ हो तुम ? ...क्या कहा तुमने ? सभी मुझे अकेला छोड़ कर इस दुनिया से चले गये ? ओ नरक के जल्लाद ! क्या तेरी तलवार ने मेरे सभी बच्चों का खून पी लिया ? ...बताओ मुझे, क्या मेरी स्त्री और मेरे वे सभी लाल उस हत्यारे की एक ही चोट से मुझसे पराये हो कर चले गये ?

मैलकॉम : घबराओ नहीं भाई ! एक बहादुर आदमी की तरह धीरज रखो।

मैकडफ़ : रखूँगा। धीरज रखूँगा...पर कैसे रखूँ, मुझे बताओ मैं कैसे धीरज रखूँ ? किसका हृदय ऐसे दुःख से नहीं फट जायेगा ? फिर मैं भी तो एक प्राणी हूँ। मैं मेरे उन प्यारे लालों को, मेरी उस प्यारी पत्नी को कैसे एक क्षण में भूल जाऊँ ? ...कैसे उन्हें भूल जाऊँ, बताओ मुझे। हो नहीं सकता कि मुझे इस तरह बरबाद करने में भगवान ने स्वयं भाग न लिया हो। ठीक है, पर ओ पापी मैकडफ़ ! सबसे बड़ा तो उन मासूमों की हत्या का कारण तू है। तूने खून किया है उनका। ...ओह ! अब क्या हूँ मैं ? कुछ भी नहीं। ...मैं जानता हूँ कि यह मेरे ही कारण हुआ है नहीं तो उनका क्या दोष था जिससे इस निर्दयता के साथ वे मारे जाते ?

हे ईश्वर ! उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करना ।

मैलकाँम : दुःखी मत हो मैकडफ़ । बल्कि इस दुःख को क्रोध की चिन-गारियों में बदल डालो । अपने हृदय को ऐसा पत्थर बना लो जिस पर तुम अपनी तलवार की धार तेज़ कर सको । मेरे मैकडफ़ ! इस तरह अपने हृदय को न गिराओ बल्कि क्रोध के उवाल के साथ इसे ऊपर उठने दो ।

मैकडफ़ : अब मैं क्या करूँ ? उस दयालु ईश्वर ने ही मेरे प्यारे स्त्री-बच्चों को मुझसे छीन लिया नहीं तो ओ स्कॉटलैण्ड के शैतान हत्यारे ! सच, अगर तू मेरी तलवार के सामने आ कर एक बार भी बच कर निकल जाये तो फिर मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करूँगा कि तुझे इस पृथ्वी पर अमर कर दे । पर अब क्या ? मेरा रोना और कुछ भी बढ़-बढ़ कर बातें करना ठीक स्त्रियों जैसा ही है ।

मैलकाँम : अब तुम्हारे शब्दों से सच्ची वीरता की चिनगारी निकल रही है मैकडफ़ ! आओ, सम्राट के पास चलें । उस आक्रमण के लिये हमारी सेनाएँ तैय्यार हैं । अब तो केवल कमी यहाँ से चलने भर तक की है ! मैकबैथ अब हमारे बदले का शिकार बनने से नहीं बच सकता । उधर ईश्वर भी अपनी दैवी शक्तियों को हमारी सहायता करने के लिए लगा रहा है ।

कुछ क्षणों के लिये और खुश हो ले ओ चाण्डाल ! कितना भी आराम कर ले, कितना भी जुल्म कर पर यह जान ले कि बड़ी से बड़ी रात भी सुबह की किरणों के साथ ही समाप्त हो जाती है ।

[प्रस्थान]

पांचवाँ अंक

दृश्य १

[डन्सीनेन । राजमहल का एक कमरा । एक दासी और
डॉक्टर का प्रवेश]

डॉक्टर : तुम्हारे साथ-साथ देखते हुए मुझे दो रात हो गई लेकिन मुझे तो कुछ भी नहीं मिला जिससे मैं तुम्हारी बात को सच मान लूँ । अन्तिम बार कब तुमने उसे शयनागार में जाते हुए देखा था ?

दासी : जबकि सम्राट युद्धक्षेत्र में गए हुए थे तब मैंने उसे अपने बिस्तरे से उठते हुए और कपड़े पहनते हुए देखा था । उठ कर उसने अपनी अलमारी खोली थी और उसमें से कागज़ निकाल कर पहले उसने उसे मोड़ा था और फिर उस पर कुछ लिख कर तुरन्त पढ़ा और फिर मोहर लगा कर बन्द कर दिया था । इतना सब कुछ करते हुए भी वह खूब गहरी नींद सोई हुई थी ।

डॉक्टर : खूब गहरी नींद सोई हुई थी ? और फिर भी जागे हुए व्यक्ति का-सा काम कर रही थी ? अवश्य ! कोई मानसिक पीड़ा उसे सता रही है । पर यह बताओ कि नींद की घबराहट में इस तरह टहलते और सचमुच कुछ करते हुए देखने के अलावा क्या तुमने उसे कभी कुछ कहते हुए सुना ?

दासी : हाँ, लेकिन वह मैं आपको नहीं बता सकती ।

डॉक्टर : नहीं-नहीं, बताओ । यह बहुत ही आवश्यक है इसलिये तुम्हें बताना ही चाहिये ।

दासी : नहीं, यह मैं किसी को नहीं बता सकती क्योंकि जो कुछ भी मैं कहूँगी उसको पूरी तरह सच्चा सिद्ध करने के लिये मेरे पास

साधन नहीं हैं। वह देखो, वह यहीं आ रही है।

[लेडी मैकबेथ एक मोमबत्ती लिये हुए आती है।]

यह उसी की शकल-सूरत और उसका ही ढंग है। मैं अपनी सौगंध खा कर कहती हूँ कि इस समय वह जगो हुई नहीं है बल्कि गहरी नींद में सोई हुई है। आओ, छिप जायें और तब तुम उसे अच्छी तरह देखो।

डॉक्टर : यह जली हुई मोमबत्ती वह कहाँ से ला रही है ?

दासी : क्यों ? यह तो उसी के पास थी। क्या तुम्हें पता नहीं है ? यह उसकी आज्ञा है कि कोई न कोई रोशनी हमेशा उसके पास होनी चाहिये।

डॉक्टर : वह देखो, उसकी आँखें तो खुली हुई हैं।

दासी : हाँ, पर उनमें कोई भाव नहीं है।

डॉक्टर : क्या कर रही है वह इस समय ? वह देखो, किस तरह वह अपने हाथों को रगड़ रही है।

दासी : यह तो उसकी हमेशा की आदत है कि इस तरह करती हुई वह दूसरों को यही दिखाई पड़े कि अपने हाथ धो रही है। पन्द्रह मिनट से तो मैं उसे यही करता देख रही हूँ।

लेडी मैकबेथ : यहाँ अभी भी एक दाग रह गया।

डॉक्टर : सुनो, वह कुछ कह रही है। मैं तो जो कुछ भी वह बोलेंगी उसे लिखता हूँ इससे और भी अच्छी तरह मैं ये बातें याद रख सकूँगा।

लेडी मैकबेथ : मिट जा ओ पापी दाग ! मिट जा, मैं कहती हूँ मिट जा। एक, दो : क्यों ! तब तो उस काम को पूरा करने का यही समय है—नरक तो भयानक होता है। पर धिक्कार है तुम पर मेरे स्वामी ! एक सैनिक हो कर इस तरह से डर रहे हो ? यदि

किसी को यह पता भी हो तो उससे डरने की हमें क्या आवश्यकता है जब कि कौन है ऐसा जो हमारी ताकत को चुनौती दे सके । लेकिन फिर भी किसको पता था कि इस बूढ़े में इतना खून होगा ।

डॉक्टर : कुछ सुना तुमने ?

लेडी मैकबेथ : फाइफ के थेन की एक स्त्री थी । कहाँ है वह अब ? क्या ! ओह ! इन हाथों से कभी भी ये दाग नहीं मिटेंगे ?—नहीं, अब और नहीं मेरे स्वामी ! अब बिलकुल नहीं । तुमने इस तरह का प्रारम्भ करके सारा काम बिगाड़ दिया है ।

डॉक्टर : अब आओ ! देखो, यह बातें जो अभी हमें मालूम हुई हैं उन्हें सुनने का तो हमने इरादा भी नहीं किया था ।

दासी : मैं सुन रही हूँ । निश्चित ही वह कुछ ऐसी बातें कह गई है जो कि अपनी जगह हुई हालत में उसने कभी नहीं कही होतीं । भगवान ही जानता है कि इसके मस्तिष्क में क्या-क्या रहस्य भरे पड़े हैं ।

लेडी मैकबेथ : अभी तक भी खून की बदबू यहाँ से नहीं मिटी है । अब की सारी खुशबुएँ क्यों न आ जायें पर यह इस छोटे-से हाथ की बदबू नहीं मिटा सकतीं । ओह ! ओह ! ओह !

डॉक्टर : कितनी गहरी आह है ! मालूम होता है जैसे मानो हृदय पर कोई भारी चोटें मार रहा हो ।

दासी : सच कहती हूँ, अगर दुनिया की सारी धन-दौलत और इज्जत भी मुझे मिले तो भी ऐसे पापी हृदय को अपने शरीर के अन्दर न घुसने दूँ ।

डॉक्टर : अच्छा ! अच्छा !! अच्छा !!!

दासी : ईश्वर करे सभी बातें ठीक हों जैसा भी तुम मालूम करना चाहते हो ।

डॉक्टर : (स्वगत) इस बीमारी का इलाज तो मेरी बुद्धि और सामर्थ्य के परे है। फिर भी मैं बहुत-से ऐसे लोगों को जानता हूँ जो नींद में चलते-फिरते थे और जो अपने अन्तिम समय में ईश्वर का नाम लेते हुए अपने बिस्तरों पर ही मरे हैं।

लेडी मैकबैथ : अपने हाथों को धो लो और कपड़े पहन लो। इस तरह डर के मारे पीले मत दिखाई दो। मैं तुमसे फिर कहती हूँ कि बैको को दफना दिया गया है और अब वह अपनी कब्र से उठ कर बाहर नहीं आ सकता।

डॉक्टर : (स्वगत) क्या ऐसा भी ?

लेडी मैकबैथ : सो जाओ। जाओ, सो जाओ। कोई दरवाजा खटखटा रहा है। आओ, आओ अपना हाथ मुझे पकड़ाओ। अब जो कुछ भी होना है उसे कौन रोक कर बदल सकता है ? जाओ, सो जाओ। बस.....।

[जाती है।]

डॉक्टर : अब क्या वह अपने बिस्तरे पर सोने के लिये जा रही है ?

दासी : सीधी वहीं।

डॉक्टर : बुरी-बुरी अफवाहें बाहर फैली हुई हैं। भयानक अपराध मनुष्य के मस्तिष्क को उस भयानक स्थिति में ले जा कर पागल-सा बना देते हैं कि वे अपने उन तकियों से अपने सारे भेद कहने लगते हैं जो उनकी कुछ भी बात नहीं सुन सकते। उसे तो किसी महात्मा या सन्त की आवश्यकता है। डॉक्टर उसे ठीक नहीं कर सकता। हे ईश्वर ! मेरे ईश्वर ! हम सबको क्षमा कर दो और उसकी तरफ देखो। उसके सामने से उन सब चीजों को हटा दो जो उसकी पीड़ा का कारण हों। अच्छा विदा ! उसकी इस स्थिति को देख कर तो मेरा मस्तिष्क बैचैन-सा हो उठा है और आँखें पूरी

तर्ह आश्चर्य्य से भर गई हैं । बहुत-सी बातें एक साथ मस्तिष्क में उठती हैं पर उन्हें कहने का साहस मैं नहीं कर सकता ।

दासी : अच्छा, डॉक्टर अलविदा !

[वे जाते हैं ।]

दृश्य २

[डन्सीनेन के पास]

[नक्कारों की आवाज़ । मैटियथ, कैथनिस, ऐङ्गस, लैनोक्स तथा कुछ सैनिकों का रंग-विरंगे झंडे लिये हुए प्रवेश]

मैटियथ : अंग्रेज़ी सेनाएँ अब पास आ गई हैं । मैलकॉम, उसके चाचा सिवार्ड, और वह प्यारा मैकडफ़ ये सभी उसका सेनापतित्व कर रहे हैं । उनके दिलों में बदले की आग जल रही है । ठीक भी है, क्योंकि जो-जो घाव उनके दिल पर कसक रहे हैं और जिनसे उनके अन्दर यह आग-सी लगी हुई है उससे तो कोई मरा हुआ आदमी भी होता वह भी भयानक से भयानक रक्तपात करने के लिये उत्तेजित हो उठता ।

ऐङ्गस : चलो बरनम वन तक चलें । उसी रास्ते वे आ रहे हैं, वहीं चल कर हम उनसे मिलेंगे ।

कैथनिस : क्या तुममें से किसी को पता है कि डोनलबेन भी अपने भाई के साथ है या नहीं ?

लैनोक्स : नहीं, वह उनके साथ नहीं है । मुझे उन सब सरदारों के नाम मालूम हैं जो भी उनके साथ हैं । सिवार्ड का पुत्र साथ है और उसके अलावा बहुत-से ऐसे नवयुवक हैं जो पहली बार रणभूमि में अपनी बहादुरी और रण-कौशल का परिचय देने आये हैं ।

मैटियथ : वह घृणित चाण्डाल क्या कर रहा है इस समय ?

कैथनिस : वह मजदूरी के साथ डन्सीनेन के विशाल किले की नाके-बन्दी कर रहा है। कुछ लोग तो कह रहे हैं कि वह पागल हो गया है और कुछ जो उससे इतनी घृणा नहीं करते हैं कह रहे हैं कि यह पागलपन नहीं बहादुरी का नशा है। लेकिन अब यह निश्चित है कि वह अपने असन्तुष्ट अनुयायियों को अब और अधिक वश में नहीं रख सकता।

ऐज़स : अब तो उसे ऐसा लग रहा है मानो दबी हुई हत्याएं उसके पास आ कर पुकार रही हैं। प्रत्येक क्षण लोगों का विश्वास उस पर से उठता जाता है और पूरी तरह एक विद्रोह की-सी मूरत बन गई है। जिनको भी वह कोई आज्ञा देता है वे किसी दवाव और मजदूरी के कारण ही उसका पालन करते हैं नहीं तो अन्दर हृदय में कोई भी प्रेम उसके लिये शेष नहीं रह गया है। अब तो उसे यह साम्राज्य, और यह उसका वैभव इस तरह नीचे लटकता हुआ दीख रहा है जैसे कोई बौने कद का चोर किसी विशाल दैत्य के कपड़े पहन ले तो वे उसके शरीर से नीचे लटक कर गिरने-से लगते हैं।

मैटियथ : अब तो उसका अंग-अंग अपने आपको इस चाण्डाल के साथ रहने से कोसता है; तब फिर अगर कभी दुःख से इसका मस्तिष्क पागलों की तरह कभी चौंक उठता है और कभी बैठ-सा जाता है तो इसमें इसका क्या दोष है ?

कैथनिस : अच्छा, चलो। जो हमारा सच्चा सम्राट है उसके प्रति अपना कर्तव्य पालन करने के लिये आगे बढ़ें। हमें चल कर उसके साथ मिल जाना चाहिये जोकि हमारे देश को इसी तरह मुक्त करने आ रहा है जैसे कोई डॉक्टर किसी बीमार को दवाई दे कर उसे सुखी करता है। हमें चाहिये कि अपने इस दुःखी देश की भलाई

के लिये ही हम अपने खून की प्रत्येक बूंद बहायें।

लैनोक्स : या जैसे ओस की बूंद किसी फूल को सच्ची शोभा देती है उसी तरह हम भी अपना खून बहाकर मैलकॉम को सम्राट बना कर गौरवान्वित करें और इस चाण्डाल सरकंडे को उसी खून में डुबो दें। आओ, चलो बरनम की ओर चलें।

[जाते हैं।]

दृश्य ३

[डन्सीनेन। महल का एक कमरा]

[मैकबैथ का डाक्टर तथा कुछ अनुचरों के साथ प्रवेश]

मैकबैथ : मत लाओ हमारे पास अब कोई खबर। जाने दो, छोड़ जाने दो उन सबको हमें अकेला। जब तक बरनम का वह वन स्वयं उठ कर डन्सीनेन से टकराने नहीं चला आयेगा तब तक हमें कोई भी नहीं डरा सकता। हिं ! क्या उस छोकरे मैलकॉम से हम डरें ? क्यों ? नहीं, हमें उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं, आखिर वह तो किसी औरत की कोख ही से जन्मा है। हमें याद है उन पिशाचों ने, जो यह जानते थे कि भविष्य में क्या होगा यह कहा था : 'डरो नहीं मैकबैथ ! औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी तुम्हें कभी नहीं गिरा सकता।' तब क्या ? चले जाओ ओ भूटे और गद्गार थेनो ! हमें अकेला छोड़ कर चले जाओ और मिल जाओ उन आरामपसन्द अंग्रेजी फौजों के साथ। हमारा मस्तिष्क जो हमें सभी कामों में रास्ता दिखाता है और हमारा हृदय जो हमारे शरीर में स्थित है किसी तरह की शङ्का या भय से नहीं हिल सकते।

[एक सेवक का प्रवेश]

ओ पीले चेहरे वाले मूर्ख ! शैतान तुझे इस धरती पर से उठा ले !

यह बुरी और घृणित हंस की-सी दृष्टि तूने कहाँ से पाई है ?

सेवक : महाराज ! दस हजार हैं वहाँ ।

मैकबेथ : क्या ? दस हजार हंस हैं, नीच ?

सेवक : हंस नहीं सैनिक, महाराज !

मैकबेथ : चला जा, और जा कर अपने चेहरे को किसी कांटे से छेद ले जब तक कि उससे खून न निकल आये। उस खून से तेरे चेहरे का यह पीला रंग तो मिट जायेगा, ओ कमल की डंडी का-सा डरपोक कलेजा रखने वाले नीच ! कैसे सैनिक हैं मूर्ख ! बता । तेरी आत्मा की मौत है न ? तेरे चेहरे का यह पीला रंग ही यह बताने के लिये काफ़ी है कि तू डरा हुआ है । हम पूछते हैं, ओ पीले चेहरे वाले डरपोक लड़के ! बता कैसे सैनिक ?

सेवक : अंग्रेजी सेना के सैनिक महाराज ।

मैकबेथ : चला जा अपने इस बुरे चेहरे को ले कर हमारी आँखों से दूर !

[सेवक जाता है ।]

(स्वगत) सीटॉन जब हम तुम्हें देखते हैं तो हमारा दिल बैठ-सा जाता है । हम कहते हैं सीटॉन ! कि यह आक्रमण या तो हमारे सुख को हमेशा के लिये निश्चिन्त बना देगा या हमें इस राजसिंहासन से नीचे गिरना होगा । बहुत दिनों तक हम जीवित रह लिये हैं । अब हमारे जीवन का शरद काल पास आ गया है जबकि हमारी सारी शक्तियाँ पतझड़ के भरते पत्तों की तरह हमारा साथ छोड़ रही हैं । जैसा लोग अपने बुढ़ापे के बारे में सोचा करते हैं वैसा भी तो हम अपने बारे में विश्वास नहीं कर सकते कि अब कोई हमें प्रेम करता है या किसी के हृदय में हमारे लिये इतना सम्मान बचा है कि वह हमारी आज्ञा का पालन करे । कोई भी नहीं सीटॉन ! हमारे सारे साथी, सैनिक और कोई भी तो हमारा साथ नहीं देगा और

हमें ऐसी आशा भी नहीं करनी चाहिये, वे हमारे साथ रहेंगे बल्कि उसकी जगह पर सभी के दिलों से हमें बुरे-बुरे शाप मिल रहे हैं जिनको डर या चापलूसी के कारण मुँह पर सुनाने की कोई हिम्मत नहीं करता पर अन्दर दिलों को तहाँ में तो वे बैठे हुए हैं। डरपोक चापलूस खुल कर कुछ नहीं कह सकते सीटॉन ! क्यों-कि इनके दिल की हिम्मत मर चुकती है।

[सीटॉन का प्रवेश]

सीटॉन : महाराज की क्या आज्ञा है ?

मंकबैथ : क्या कोई और नई खबर है ?

सीटॉन : स्वामी ! जो भी खबर मिली थी उसका पता लगाने पर मालूम हुआ कि वह बिल्कुल ठीक है।

मंकबैथ : तब हम लड़ेंगे। उस क्षण तक लड़ेंगे जब तक हमारी हड्डियों से कट कर हमारा सारा मांस नीचे न गिर पड़े। लाओ हमारा कवच।

सीटॉन : लेकिन अभी तो इसकी जरूरत नहीं है महाराज !

मंकबैथ : हम उसे अभी पहनेंगे। कुछ घुड़सवारों को भेज दो और उन्हें हुक्म दे दो कि चारों तरफ चक्कर लगायें और जो कोई भी राज्य में डर की बातें करता मिले उसे तलवार के घाट उतार दें। हमारा कवच दो।

क्यों डॉक्टर ! कैसा है तुम्हारा बीमार अब ?

डॉक्टर : उनको शरीर की इतनी बीमारी नहीं है स्वामी ! पर न जाने मस्तिष्क में कौन-सी डरावनी-सी शक्लें दीखती हैं जिनसे वे पागल-सी हो उठती हैं।

मंकबैथ : ठीक करो उन्हें डॉक्टर ! क्या तुम ऐसे मस्तिष्क को अपनी सही हालत में नहीं ला सकते जो इस तरह पागल-जैसा हो गया

हो ? जो भी दुःख उसके अन्दर जड़ जमाये हुए है उसे दूर करके किसी तरह सारी मुसीबत से उसे छुटकारा दिलाओ डॉक्टर ! किसी अच्छी दवाई से उसे बेहोश करके उसके दिल पर पड़े हुए सारे दुःख को धो कर मिटा डालो ।

डॉक्टर : इस हालत में तो बीमार को खुद अपनी देख-भाल करनी चाहिये स्वामी !

मैकबेथ : तो फिर अपनी ये सभी दवाइयाँ कुतों के सामने फेंक दो डॉक्टर ! हमें किसी की जरूरत नहीं है । कोई नहीं चाहिये हमें । आओ हमें अपना कवच पहना दो । हाँ, हमें हमारा राजदण्ड भी दो ।

डॉक्टर ! सभी थेन हमें छोड़ कर जा रहे हैं । जल्दी आओ सीटॉन । हाँ, अगर तुम कर सको तो डॉक्टर ! यह मालूम करो मेरे राज्य स्कॉटलैण्ड की बीमारी क्या है और फिर इसका इलाज करके इसको ठीक कर दो न डाक्टर ? हम तुम्हारी तब तक बधाइयाँ गायेंगे जब तक हमारी आवाज की गूँज भी हमारे साथ मिल कर तुम्हारी बधाई न गाने लग जाये ।

खींच लो इस कवच को । हम कहते हैं उतार दो इसे । क्यों डॉक्टर ! क्या तुम्हारे पास ऐसी कोई दवाई नहीं है जो हमारे राज्य को इन अंग्रेजों से बचा सके । क्या तुमने उनके बारे में कुछ सुना है डाक्टर ?

डॉक्टर : हाँ स्वामी ! आपकी युद्ध की तैयारी ने ही हमें सब कुछ बता दिया है ।

मैकबेथ : लाओ, पहना दो, हमें अपना कवच । जब तक बरनम वन स्वयं उठ कर डन्सीनेन तक नहीं चला आयेगा तब तक हमारी बर्बादी और मौत का हमें तनिक भी डर नहीं है ।

डॉक्टर : (स्वगत) काश ! अगर मैं एक बार डन्सीनेन से दूर बच कर निकल जाऊँ तो कितनी भी बड़ी लालच या मोह मुझे यहाँ वापिस नहीं ला सकता ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[बरनम वन के पास वाला स्थान]

[नक्कारों की आवाज । कुछ सैनिक रंग-विरंगे झंडे लिये हुए । मैलकॉम, वृद्ध सिवार्ड, उसका पुत्र, मंकडफ़, मेंटियथ, कैथनिस, ऐंज़स, लैनोक्स, रौस तथा सैनिकों का मार्च करते हुए प्रवेश]

मैलकॉम : भाइयो ! अब वह दिन दूर नहीं है जबकि फिर से हमारे देश में प्रत्येक के घर में सुख और शान्ति होगी और किसी तरह का भी भय नहीं रहेगा ।

मेंटियथ : इसमें हमें तनिक भी सन्देह नहीं है ।

सिवार्ड : हमारे सामने यह कौन-सा वन है ?

मेंटियथ : बरनम वन है ।

मैलकॉम : मेरा ख्याल है कि हर एक सैनिक एक-एक भाड़ी काटकर उसे अपने सामने करके चले क्योंकि इस तरह छिपे रहने से हमारी ताकत का दुश्मन को कुछ भी ठीक-ठीक पता नहीं चल सकेगा और जो भी दुश्मन के जासूस हमारे बारे में जा कर खबर देंगे सब भूठ निकलेगी ।

सैनिक : जो आज्ञा स्वामी !

सिवार्ड : वह अत्याचारी अभी तक डन्सीनेन में ही है और शायद वह इसे भी बरदाश्त कर ले कि हम उसके चारों तरफ घेरा डाल लें । इसके सिवाय तो हमें और कुछ पता ही नहीं लगा है ।

मैलकाँम : यही तो वह आशा करता ही है क्योंकि जब भी मौका देखेंगे, तो क्या छोटे क्या बड़े, सभी उसके विरुद्ध विद्रोह कर उठेंगे। सच तो यह है कि कोई भी सच्चे हृदय से उसकी सेवा नहीं करता बल्कि किसी दबाव से उसे करनी पड़ती है इसी लिये करता है।

मैकडफ़ : जब तक युद्ध का परिणाम निकल न आये तब तक हमें ऐसे विश्वास के साथ यह नहीं कहना चाहिये। इस बीच हमें चाहिये कि पूरी तरह से हम युद्ध की तैयारियाँ कर डालें।

सिवाड : अब वह समय पास आ गया है जो हमें पूरी तरह से बतायेगा कि क्या हमने पाया और क्या खोया। केवल कल्पना के बल पर की गई आशा तो निश्चय रूप से कभी सच्ची निकलती नहीं। सच्चा परिणाम तो हमारी सेना की दुश्मन पर पड़ती हुई मार से निकलेगा जिसके लिये वह अब जा रही है।

[सेना मार्च करती हुई जाती है।]

दृश्य ५

[डन्सीनेन। राजमहल के भीतर]

[मैकबेथ, सीटॉन तथा नक्कारों को बजाते हुए और झंडों को लिये हुए सैनिकों का प्रवेश]

मैकबेथ : बाहर की दीवारों पर हमारे झंडे फहरा दो। अभी तक सभी यह चिल्ला रहे हैं कि दुश्मन बढ़ा आ रहा है पर हमारा यह मज्ज-बूत किला उन घेरा डालने वालों की हर कोशिश पर हँस रहा है। डालने दो उन्हें घेरा। मत हटाओ उन्हें वहाँ से जब तक भूख-प्यास से स्वयं तड़प-तड़प कर वे मर न जायें। काश ! आज उनके साथ अगर हमारी सेनाएँ मिल न जातीं तो हम उनका इस

तरह डट कर मुकाबिला करते कि उन्हें यहाँ से सीधे अपने देश इङ्ग्लैण्ड भाग जाना पड़ता ।

[भीतर औरतें चिल्लाती है ।]

यह क्या आवाज़ ?

सीटॉन : कुछ औरतें चिल्ला रही हैं महाराज !

मैकबेथ : अब तो हमारे अन्दर लेशमात्र भी डर नहीं रह गया है, नहीं तो एक वक्त था जब कि रात को कोई चीख सुन कर डर से हमारा शरीर ठंडा-सा पड़ जाता था और किसी डरावने किस्से को सुन कर हमारे रोयें सीधे खड़े हो जाते थे मानो उनमें भी कोई ज़िन्दगी आ गई हो । अब मैं डर को पूरी तरह पी गया हूँ । हमारे हत्या से भरे हुए भावों के साथ जो डर घुसा हुआ है वह अब हमें कभी भी हतोत्साहित नहीं कर सकता ।

[सीटॉन का पुनः प्रवेश]

यह कौन चिल्लाया ? कहाँ से यह आवाज़ आई है ?

सीटॉन : मेरे स्वामी ! महारानी का स्वर्गवास हो गया ।

मैकबेथ : हैं ! वह चली गई ? काश ! इसके कुछ दिन बाद ही वह जाती और मैं यह सुनता तो उसके लिये ठीक वक्त भी होता ! हाय ! आज से कल करते हुए जीवन का एक-एक दिन बीत रहा है और हम अपने भाग्य के अनुसार अपनी अन्तिम घड़ियों की तरफ बढ़ रहे हैं । बीती हुई घड़ियाँ पुकारती जाती हैं—मूर्ख प्राणियो ! तुम सब अपनी कब्रों की ओर बढ़ रहे हो । तब, बुझ जाने दो । बुझ जाओ ओ जीवन के टिमटिमाते दीप ! बुझ जाओ ! क्या है जीवन ? केवल एक चलती हुई छाया ! ठीक उसी अभिनेता की तरह जो कुछ क्षणों के लिये रंगमंच पर आ कर हँसता-रोता है और फिर हमेशा के लिये सामने से चला जाता है । प्राणी

का यह जीवन मूर्खों की कही हुई वह कहानी है जिसमें ध्वनि और भावनाएँ हैं पर हाय ! क्या अस्तित्व है उनका ?

[एक दूत का प्रवेश]

तुम भी अपनी जीभ हिलाने आये हो न ? कहो, तुरन्त कहो क्या कहने आये हो ।

दूत : मेरे दयालु महाराज ! मैं वही कहना चाहता हूँ जो मैंने देखा है पर मैं नहीं जानता कि उसे कैसे कहूँ ।

मैकबैथ : हाँ-हाँ, कहो ।

दूत : स्वामी, जब मैं पहाड़ी पर खड़ा हो कर पहरा दे रहा था तो ज्यों ही मैंने बरनम वन की ओर देखा तो मुझे लगा कि पूरा वन उठा चला आ रहा है ।

मैकबैथ : भूठ ! गुलाम कहीं के !

दूत : नहीं महाराज ! अगर मेरी बात सच न हो तो मैं आपका कोई भी दण्ड सहने के लिये तैय्यार हूँ । महल से तीन मील की दूरी में देखिये । मैं सच कहता हूँ स्वामी ! बरनम चला आ रहा है ।

मैकबैथ : अगर तुम्हारी बात भूठ निकली तो समझ लो पहला पेड़ जो भी हमारी आँखों के सामने आयेगा उसी पर हम तुम्हें जीवित ही लटका देंगे और उस वक्त तक रहने देंगे जब तक कि भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर तुम मर न जाओ और अगर तुम्हारी बात सच निकली तो तुम हमारे साथ यही व्यवहार करना, हमें कोई शिकायत नहीं होगी ।

ओह ! हम अपने इरादों से लड़खड़ा रहे हैं । लगता है कि उन पिशाचों की बातें ठीक निकल रही हैं कि 'डरो नहीं मैकबैथ ! जब तक बरनम वन डन्सीनेन की ओर आता दिखाई न पड़े तब तक मत डरना ।' वन डन्सीनेन की ओर बढ़ा चला आ रहा है ।

हाथों में हथियार ले लो और दुश्मन से टकरा जाओ मैकबेथ । जाओ । जो कुछ भी वह कह रहा है अगर उसने सचमुच देखा है तो फिर उससे छिप कर कहाँ दूर भाग सकते हो ? फिर यहाँ महल में किस लिये बैठे हो ?

ओह ! अब मैं इस जीवन से, इस सारी दुनिया से पूरी तरह ऊब गया हूँ और चाहता हूँ, काश ! यह सारी दुनिया एक साथ ही टूक-टूक हो कर बिखर जाये । इसमें प्रलय आ जाये ।

खतरे की घंटी बजा दो । ओ हवा ! जोर से तूफानी हो कर बहो । आ जाओ, ओ प्रलय की आग ! हम वीरों की तरह कवच पहन कर सामना करेंगे ।

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[डन्सीनेन । राजमहल के सामने एक मैदान]

[नक्कारों की गूँज के साथ फहराते हुए झंडे । मैलकॉम, वृद्ध सिवार्ड, मैकडफ़ और उनकी सेनाएँ पेड़ों की डालियाँ ले कर प्रवेश करती हैं ।]

मैलकॉम : हम लोग अब राजमहल के बहुत निकट पहुँच चुके हैं ।

अब सामने लगे हुए इन डालियों के पदों को गिरा दो और अपनी पूरी ताकत के साथ सामने आ जाओ ।

आओ मेरे सुयोग्य चाचा ! आप अपने वीर पुत्र के साथ आक्रमण करते समय सबसे आगे वाली टुकड़ी का संचालन करेंगे और शेष का अपनी योजना के अनुकूल हम लोग करेंगे ।

सिवार्ड : अच्छा, अलविदा ! आज रात को ही मैकबेथ की सेना से सामना है । यदि हमने उन्हें रणभूमि से भगा नहीं दिया तो हम प्रण करते हैं कि जीवित रह कर वापिस नहीं आयेंगे ।

मैकडफ़ : रण-दुन्दुभि बजने दो । खून और मौत के दूतों की तरह बिगुलों को जोर-जोर से पुकारने दो ।

[सभी जाते हैं ।]

दृश्य ७

[रणभूमि का दूसरा भाग । युद्ध की चीत्कार । मैकबेथ का प्रवेश]

मैकबेथ : उन्होंने मुझे चारों तरफ़ से इस तरह घेर लिया है मानो किसी खूँटे से बाँध दिया हो । सब तरफ़ दुश्मन है । मैं कहीं भाग भी तो नहीं सकता । लेकिन क्यों ? क्यों भागूँ ? मैं एक रीछ की तरह बहादुरी के साथ लड़ूँगा । कौन है ऐसा जो औरत की कोख से नहीं जन्मा है ? उसी से मुझे डरना चाहिये नहीं तो और कौन मेरा क्या बिगाड़ सकता है ?

[नवयुवक सिवार्ड का प्रवेश]

युवक सिवार्ड : क्या नाम है तेरा ?

मैकबेथ : हमारा नाम ? डर जायेगा तू सुन कर उसे ।

युवक सिवार्ड : कभी नहीं, नरक के दैत्यों के-से भयानक से भयानक नाम से अपने को क्यों न पुकार मैं कभी नहीं डर सकता । बता, क्या नाम है तेरा ?

मैकबेथ : तो सुन, मैकबेथ !

युवक सिवार्ड : ओ, शैतान भी इससे अधिक घृणित नाम मेरे कानों को नहीं सुना सकता था ।

मैकबेथ : न ! न ! न ! यह कह कि इससे अधिक डराने वाला नाम नहीं सुना सकता था ।

युवक सिवार्ड : भूठ, भूठ बोलता है तू ओ घृणित अत्याचारी ! मैं अपनी तलवार की धार पर जो कुछ भी तू कह रहा है उसे अभी

भूठ साबित करता हूँ ।

[वे दोनों लड़ते हैं और युवक सिवाड़ मारा जाता है ।]

मैकबेथ : जा ! तू औरत की कोख से जन्मा था न ? जो भी औरत की कोख से जन्मा तलवार या कोई भी हथियार ले कर युद्ध करने आयेगा मैं उस पर हँसूँगा और फिर घृणा से मुँह फेर लूँगा ।

[युद्ध की चीत्कार । मैकडफ़ का प्रवेश]

मैकडफ़ : इधर से ही आवाज़ आई है । ओ चाण्डाल ! अपना चेहरा तो दिखा । अगर तू मेरी तलवार के अलावा किसी दूसरे के हाथों मारा गया तो मेरी स्त्री और मेरे नन्हे-से बच्चों की प्रेतात्मा बदले के लिये फिर भी भटकती हुई मुझे चैन की नींद नहीं सोने देगी । मैं इन गरीब सैनिकों पर हाथ नहीं उठा सकता जो हमसे लड़ने के लिये भाले और तलवार उठाने के लिये किराये पर रखे गये हैं । या तो चाण्डाल ! तेरा खून पी कर यह मेरी तलवार तुझे हमेशा के लिये ज़मीन पर सुला देगी या कायरों की तरह बिना कोई वीरता का काम किये वापिस म्यान में चली जायेगी । आह ! इस उठती हुई आवाज़ से मुझे लगता है कि तू वहाँ है । इतने जोर से बजते रण के इस बाजे से लगता है कि कोई सबसे बड़ा सैनिक वहाँ है और वह तेरे सिवाय और कोई नहीं हो सकता । आह, मेरे सौभाग्य ! ले चल मुझे उधर । इससे अधिक मैं तुझसे और कुछ कामना नहीं करता ।

[जाता है । रण की चीत्कार]

[मैलकॉम तथा वृद्ध सिवाड़ का प्रवेश]

सिवाड़ : इधर से आइये स्वामी ! बिना किसी तरह के विरोध या युद्ध के राजमहल हमारे हाथों में आ गया है । उस अत्याचारी की प्रजा के लोग दोनों तरफ से लड़ रहे हैं । आपके सरदार थेन भी बड़ी

बहादुरी के साथ लोहा ले रहे हैं। आज की विजय अपने पक्ष में ही घोषित हो चुकी है। बस अब बहुत थोड़ा ही काम करना बाकी है।

मैलकॉम : हमें दुश्मन भी तो ऐसे मिले हैं जो उलटे हममें ही मिल कर हमारी ओर से लड़ रहे हैं।

सिवार्ड : आइये सम्राट ! राजमहल में प्रवेश कीजिये।

[जाते हैं। युद्ध की चीत्कार उसी तरह सुनाई दे रही है।]

दृश्य ८

[रणभूमि का दूसरा भाग। मैकबेथ का प्रवेश]

मैकबेथ : अपनी ही तलवार से अपने आपको मार कर मैं क्यों रोम के मूर्ख का-सा काम करूँ ? जब तक मुझे एक भी दुश्मन जीवित दिखाई देगा तब तक मैं उन पर आग बरसाऊँगा।

[मैकडफ़ का प्रवेश]

मैकडफ़ : आ, ओ ! नरक के कुत्ते ! आ, लौट !

मैकबेथ : ओ तू ? सिर्फ़ मेरी नज़रों के सामने आने से तू ही बचा रह गया है। आ, सामने आ। वैसे तेरे परिवार के खून से तो पहले ही मेरा जी भर गया है।

मैकडफ़ : इसका जवाब मैं कुछ नहीं दूँगा दुष्ट ! मेरी यह तलवार इसका जवाब देगी। आ, तू कितना बड़ा शैतान है, शब्द नहीं कह सकते। आ।

[वे आपस में लड़ते हैं।]

मैकबेथ : तू बेकार अपनी ताकत गँवा रहा है मूर्ख ! हाँ, तू अपनी तलवार से मुझे उतनी ही आसानी से धराशायी कर सकता था जितनी आसानी से तू इसी तलवार से हवा को काट सकता है पर अब क्या कर सकता है तू। अपनी इस तलवार को उसके सिर

पर मार जहाँ इसका कुछ असर हो । मेरा जीवन तो किसी जादू के कारण सुरक्षित है और अगर तूने नहीं सुना हो तो सुन, औरत की कोख से जन्मा कोई भी आदमी मुझे कभी भी नहीं मार सकता ।

मैकडफ़ : छोड़ दे भरोसा अपने इस जादू का और जिस भी देवता की पूजा तू करता हो उसे बता दे कि मैकडफ़ ठीक वक्त से पहले ही अपनी माँ के गर्भ से काट कर निकाल लिया गया था ।

मैकबेथ : धिक्कार है तेरी उस जीभ को जो मुझसे ऐसी बातें कह रही है । ओह ! इससे हमारे दिल की हिम्मत कुछ गिर रही है । तू गद्गार है । ऐसे गद्गार दोस्तों का, जो हमेशा दुहरी बातें करते हैं, कभी भी भरोसा नहीं करना चाहिये । जो कान में कुछ वायदा करके जाते हैं और आशा के विरुद्ध काम कुछ दूसरा ही करते हैं, उन्हें कभी साथ नहीं रखना चाहिये । मैं तुझसे नहीं लड़ना चाहता ।

मैकडफ़ : तो फिर कायर ! आत्मसमर्पण कर मेरे सामने और दूसरों को तेरे काले चेहरे का तमाशा देखने दे । हम तुझे किसी बहुत बड़े खूनी कैदी की तरह खम्बे से लटका देंगे और उस पर लिख देंगे कि 'देखो, यहाँ एक चाण्डाल विश्वासघाती लटका हुआ है, देखो उसे ।'

मैकबेथ : आत्मसमर्पण और मैं ? कभी नहीं । क्या मैं उस छोकरे मैलकॉम के सामने झुक कर ज़मीन चाटूंगा ? नहीं, यह कभी नहीं हो सकता कि कभी भी लोग मेरे जीवन पर थूकने लगे । मैं उन्हें कभी भी मुझे धिक्कारने का मौका नहीं दूंगा चाहे बरनम वन उठा हुआ डन्सीनेन की ओर चला आ रहा है और तू भी औरत की कोख से नहीं जन्मा है । मैं अपनी अन्तिम श्वासों तक लड़ूंगा । अपनी इस ढाल से अपने शरीर की रक्षा करूंगा । आ मार ओ

मैकडफ ! मार ! धिक्कार है उसे जो हममें से पहले यह कहे कि बस, अब नहीं ।

[दोनों आपस में लड़ते हैं । युद्ध की चीत्कार बराबर सुनाई दे रही है ।]

[इधर बाजे बजते हैं । सभी विजय प्राप्त करके रणभूमि से वापिस लौट रहे हैं ।

मैलकॉम, वृद्ध सिवार्ड, रौस, लैनोक्स, ऐङ्गस, कॅथनिस, मेंटियथ, तथा अन्य सैनिकों का नक्कारों की आवाज़ और झंडों के साथ प्रवेश ।]

मैलकॉम : काश ! जो साथी आज हमेशा के लिये हमसे बिछुड़ गये हैं वे इस समय हमारे बीच में होते !

सिवार्ड : कुछ को तो बिछुड़ना ही पड़ता स्वामी ! लेकिन फिर भी जितने जीवित बच रहे हैं उन्हें देख कर ही मुझे आश्चर्य्य हो रहा है कि इतने कम बलिदान पर हम इतनी ऊँची विजय कैसे प्राप्त कर पाये ।

मैलकॉम : पर हाँ, मैकडफ़ कहीं दिखाई नहीं दे रहा है और आपका पुत्र भी तो कहाँ है कुछ मालूम नहीं ।

रौस : आपके पुत्र ने वीरगति प्राप्त की है सेनापति ! अपनी अन्तिम श्वास तक वह एक वीर योद्धा की तरह लड़ता रहा और जब तक शत्रु के हृदय तक पर अपने पौरुष का सिक्का नहीं जमा दिया तब तक वह हटा नहीं । एक सच्चे वीर की तरह वह इस संसार से गया है सेनापति !

सिवार्ड : तो क्या वह इस संसार में नहीं है ?

रौस : हाँ सेनापति ! उसका शरीर रणभूमि से बहुत दूर ले आया गया है । इसमें जितने गुण हैं उन्हें याद करके मत रोइये नहीं तो क्या आँसुओं का कभी कोई अन्त होगा ?

सिवार्ड : पर यह बताओ मुझे, कि घाव उसकी छाती पर हुए थे या पीठ पर ?

रौस : छाती पर ही हुए थे सेनापति !

सिवार्ड : तो फिर मुझे कोई दुःख नहीं है। वह ईश्वर के पास पहुँच गया है। यदि जितने मेरे शरीर में बाल हैं उतने भी मेरे पुत्र होते तो इससे अधिक गौरवशाली मृत्यु मैं उनके लिये कोई नहीं समझता। तो फिर वह इस संसार को छोड़ कर चला गया ?

मैलकॉम : बस इतना ही नहीं सेनापति ! उस वीर की दुःखदायी मृत्यु पर मैं अभी और आंसू बहाऊँगा।

सिवार्ड : नहीं, स्वामी ! अब उसके लिये और शोक नहीं करना चाहिये। बस इतने का ही वह अधिकारी है। वे सभी यही कह रहे हैं कि एक वीर योद्धा की तरह रणभूमि में गिरा है वह, तो प्रकृति का सारा ऋण उसने चुका दिया है। इसलिये अब तो यही प्रार्थना कीजिये कि ईश्वर सदा उसे अपने पास रखें।

. अब कोई दूसरी अच्छी खबर आती हुई मालूम होती है।

[मैकडफ़ मैकबेथ का कटा हुआ सिर लिये पुनः प्रवेश करता है।]

मैकडफ़ : बधाई है सम्राट को ! आज से आप स्कॉटलैण्ड के सम्राट हैं स्वामी ! देखते नहीं, दुराचारी का सिर कहाँ है जिसने आपके राज्य को हड़पा था ! अब कोई डर नहीं। चारों ओर आज़ादी है। साम्राज्य के इन रत्नों के बीच में मैं आपको बैठा देख रहा हूँ जो अपने हृदय में वही बधाइयाँ लिये हुए हैं। मैं चाहता हूँ कि आप सभी जोर से मेरे साथ आवाज़ मिला कर कहें—‘स्कॉटलैण्ड के सम्राट ! बधाई है !’

[बाजे बजते हैं।]

मैलकॉम : हमारे थेन और साथियो ! हम आप लोगों के हृदय से बहुत आभारी हैं और चाहते हैं कि शीघ्र से शीघ्र आप लोगों का ऋण चुकायें। अब से हम आपको ‘अर्ल’ बनाते हैं। यह पहला ही अब-

सर है जबकि स्कॉटलैण्ड में कोई इस पद से सम्मानित हुआ हो । अब बताइये, आगे क्या करना होगा । सलाह दीजिये कि इस नये युग के प्रारम्भ में क्या-क्या करना चाहिये जैसे जो हमारे साथी उस अत्याचारी के चंगुल से छूट कर विदेश चले गये हैं उन्हें वापिस बुलाना और इस मरे हुए चाण्डाल हत्यारे के निर्दयी साथियों को और उस महारानी बनी हुई पिशाचिनी को पकड़ कर सामने लाना इत्यादि । लेकिन उसके बारे में तो यह सुनने में आया है कि उसने अपने ही हाथों से आत्महत्या कर ली है । इसके अलावा बताइये क्या और आवश्यक रूप से करना चाहिये । जो कुछ भी होगा उसे ईश्वर की कृपा से समय और अवसर के अनुसार हम अवश्य करेंगे ।

आप सभी लोगों को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं और फिर प्रत्येक को अन्न-अन्न हम धन्यवाद देते हैं । हमें विश्वास है कि आप सभी स्कोन हमारा राज्याभिषेक करने अवश्य आयेंगे । हम इसके लिये आप सभी को निमन्त्रित करते हैं ।

[बाजे बजते हैं । प्रस्थान]

